महा कुंडली

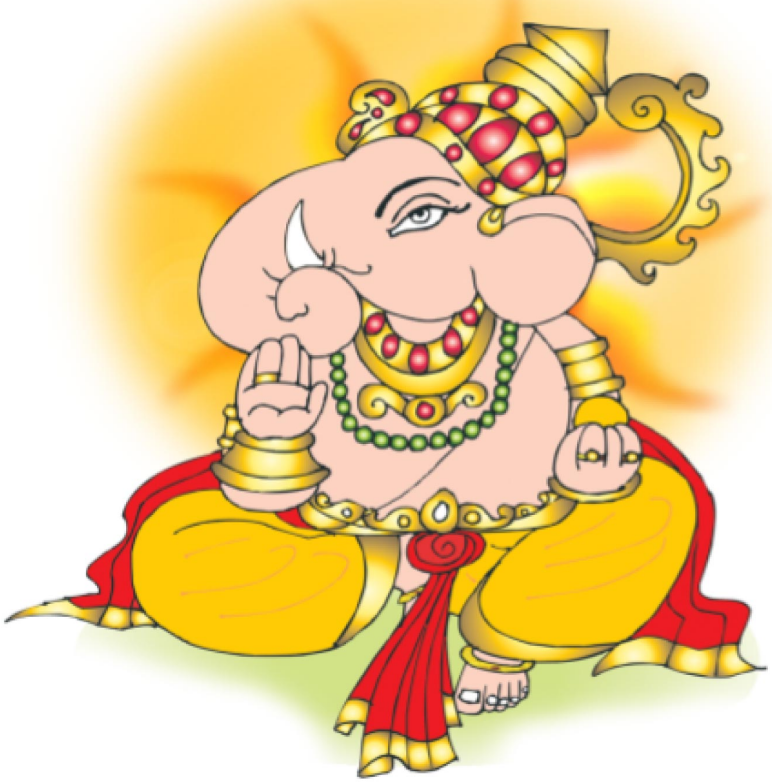

AstroSage

World's No. 1 Astrology Portal & App

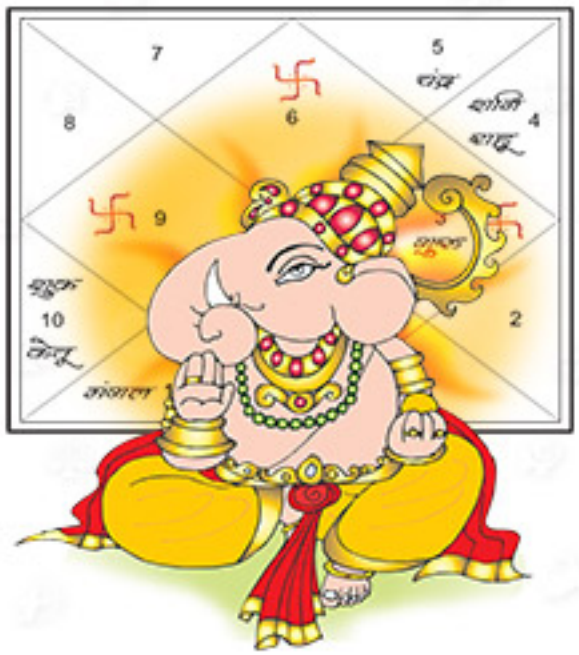

अवकहडा चक्र

पाया (राशि आधारित)	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
योनी	महिष
गण	देव
वश्य	मानव
नाड़ी	आदि
दशा भोग्य	Sat 2 Y 9 M 4 D
लग्न	कन्या
लग्न स्वामी	बुध
राशि	कन्या
राशि स्वामी	बुध
नक्षत्र–पद	हस्त 2
नक्षत्र स्वामी	चंद्र
जुलियन दिन	2443975
सूर्य राशि (हिन्दू)	मीन
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
अयनांश	023.34.01
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.31
साम्पातिक काल	07.26.14

व्यक्ति विवरण

लिंग	Male
दिनांक	11 : 4 : 1979
समय	18 : 30 : 0
दिन	बुधवार
इष्टकाल	031-15-36
जन्म स्थान	Agra
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	28 : 40 : N
रेखांश	77 : 25 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:20:19
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	18:9:40
जन्म समय – जीएमटी	13:0:0
तिथि	पूर्णिमा
हिन्दू दिन	बुधवार
पक्ष	शुक्ल
योग	
करण	विष्टि
सूर्योदय	05:59:45
सूर्यास्त	18:43:24
दिन अवधि	12:43:39

घटक (अशुभ)

दिन	शनिवार
करण	कौलव
लग्न	मीन
माह	भाद्रपद
नक्षत्र	श्रवण
प्रहर	1
राशि	मिथुन
तिथि	5, 10, 15
योग	सुकर्मन
ग्रह	गुरु मंगल

अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	2
शुभ अंक	2, 4, 5, 8
अशुभ अंक	1, 7, 9
शुभ वर्ष	11,20,29,38,47
भाग्यशाली दिन	बुध शुक्र
शुभ ग्रह	बुध शुक्र
मित्र राशियां	वृषभ सिंह तुला
शुभ लग्न	धनु मीन वृषभ मकर
भाग्यशाली धातु	कांसा
भाग्यशाली रत्न	पन्ना

पारम्परिक

नाम	Punit Pandey	**जुलियन दिन**	2443975	**लग्न स्वामी**	बुध	**दशा भोग्य**	Sat 2 Y 9 M 4 D
लिंग	Male	**अयनांश नाम**	लाहिरी	**लग्न**	कन्या	**करण**	विष्टि
दिनांक	11.4.1979	**अयनांश**	023.34.01	**योग**		**नक्षत्र स्वामी**	चंद्र
दिन	बुधवार	**जन्म स्थान**	Agra	**तिथि**	पूर्णिमा	**नक्षत्र–पद**	हस्त–2
समय	18.30.0	**रेखांश**	77.25.E	**सूर्यास्त**	18.43.24	**राशि स्वामी**	बुध
साम्पातिक काल	07.26.14	**अक्षांश**	28.40.N	**सूर्योदय**	05.59.45	**राशि**	कन्या

लग्न चक्र

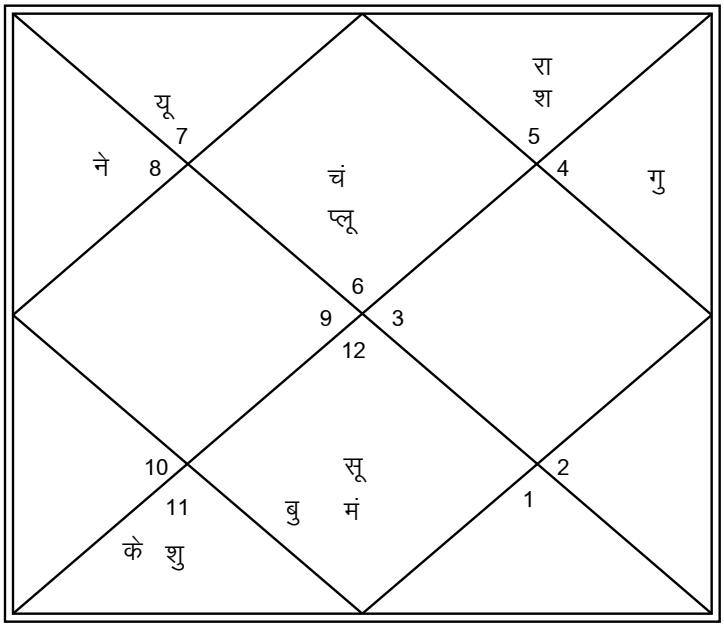

नवमांश चक्र

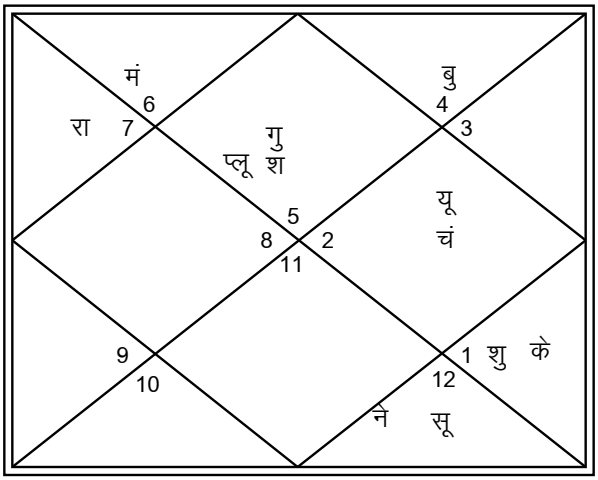

विंशोत्तरी दशा

चंद्र –10 वर्ष 11/ 4/79 से 3/12/84	
चंद्र	00/00/00
मंगल	00/00/00
राहु	00/00/00
गुरू	3/3/79
शनि	3/10/80
बुध	3/3/82
केतु	3/10/82
शुक्र	3/6/84
सूर्य	3/12/84

मंगल –7 वर्ष 3/12/84 से 3/12/91	
मंगल	30/4/85
राहु	18/5/86
गुरू	24/4/87
शनि	3/6/88
बुध	30/5/89
केतु	27/10/89
शुक्र	27/12/90
सूर्य	3/5/91
चंद्र	3/12/91

राहु –18 वर्ष 3/12/91 से 3/12/09	
राहु	15/8/94
गुरू	9/1/97
शनि	15/11/99
बुध	3/6/02
केतु	21/6/03
शुक्र	21/6/06
सूर्य	15/5/07
चंद्र	15/11/08
मंगल	3/12/09

गुरू –16 वर्ष 3/12/09 से 3/12/25	
गुरू	21/1/12
शनि	3/8/14
बुध	9/11/16
केतु	15/10/17
शुक्र	15/6/20
सूर्य	3/4/21
चंद्र	3/8/22
मंगल	9/7/23
राहु	3/12/25

शनि –19 वर्ष 3/12/25 से 3/12/44	
शनि	6/12/28
बुध	15/8/31
केतु	24/9/32
शुक्र	24/11/35
सूर्य	6/11/36
चंद्र	6/6/38
मंगल	15/7/39
राहु	21/5/42
गुरू	3/12/44

बुध –17 वर्ष 3/12/44 से 3/12/61	
बुध	30/4/47
केतु	27/4/48
शुक्र	27/2/51
सूर्य	3/1/52
चंद्र	3/6/53
मंगल	30/5/54
राहु	18/12/56
गुरू	24/3/59
शनि	3/12/61

केतु –7 वर्ष 3/12/61 से 3/12/68	
केतु	30/4/62
शुक्र	30/6/63
सूर्य	6/11/63
चंद्र	6/6/64
मंगल	3/11/64
राहु	21/11/65
गुरू	27/10/66
शनि	6/12/67
बुध	3/12/68

शुक्र –20 वर्ष 3/12/68 से 3/12/88	
शुक्र	3/4/72
सूर्य	3/4/73
चंद्र	3/12/74
मंगल	3/2/76
राहु	3/2/79
गुरू	3/10/81
शनि	3/12/84
बुध	3/10/87
केतु	3/12/88

सूर्य –6 वर्ष 3/12/88 से 3/12/94	
सूर्य	21/3/89
चंद्र	21/9/89
मंगल	27/1/90
राहु	21/12/90
गुरू	9/10/91
शनि	21/9/92
बुध	27/7/93
केतु	3/12/93
शुक्र	3/12/94

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	कन्या	25.22.33	चित्रा	1
सूर्य	मीन	27.29.23	रेवती	4
चंद्र	कन्या	15.48.30	हस्त	2
मंगल	मीन	09.55.42	उ0भाद्रपद	2
बुध	मीन	02.58.47	पूर्वाभाद्रपद	4
गुरू	कर्क	05.49.24	पुष्य	1
शुक्र	कुंभ	22.28.23	पूर्वाभाद्रपद	1
शनि (व)	सिंह	14.11.57	पू0फाल्गुनी	1
राहु (व)	सिंह	22.19.54	पू0फाल्गुनी	3
केतु (व)	कुंभ	22.19.54	पूर्वाभाद्रपद	1
यूरे (व)	तुला	26.34.44	विशाखा	2
नेप (व)	वृश्चिक	26.48.18	ज्येष्ठा	4
प्लू (व)	कन्या	24.11.36	चित्रा	1

अष्टकवर्ग तालिका

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	3	5	4	4	3	2	7	5	4	4	4
चंद्र	3	5	6	5	3	3	5	4	5	5	3	2
मंगल	3	4	4	5	3	3	1	3	4	4	3	2
बुध	5	4	6	4	3	4	4	4	6	3	7	4
गुरू	4	4	5	6	2	4	7	3	6	7	2	6
शुक्र	5	7	2	4	3	3	5	7	4	5	4	3
शनि	1	2	4	4	2	2	3	4	7	5	4	1
योग	24	29	32	32	20	22	27	32	37	33	27	22

चलित तालिका

भाव	राशि	भाव आरंभ	राशि	भाव मध्य
1	कन्या	10.32.23	कन्या	25.22.33
2	तुला	10.32.23	तुला	25.42.14
3	वृश्चिक	10.52.05	वृश्चिक	26.01.55
4	धनु	11.11.46	धनु	26.21.37
5	मकर	11.11.46	मकर	26.01.55
6	कुंभ	10.52.05	कुंभ	25.42.14
7	मीन	10.32.23	मीन	25.22.33
8	मेष	10.32.23	मेष	25.42.14
9	वृषभ	10.52.05	वृषभ	26.01.55
10	मिथुन	11.11.46	मिथुन	26.21.37
11	कर्क	11.11.46	कर्क	26.01.55
12	सिंह	10.52.05	सिंह	25.42.14

।। पंचांग फल ।।

जन्म वार, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र, जन्म योग तथा जन्म करण इन पाँचों को मिलाकर पंचांग फल की गणना की गई है। जन्म के समय उपरोक्त सभी पाँचों कारकों को ध्यान में रखने के बाद जातक के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना की जाती है। आपकी कुंडली में पंचांग फल निम्न प्रकार वर्णित है:

तिथि: पूर्णिमा

आपका जन्म पूर्णिमा तिथि में हुआ है। आप उन व्यक्तियों में से होंगे जो अपने वचन और कर्म को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। आप आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होंगे, इस वजह से हर कोई आप से मिलने की इच्छा रखेगा। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आप हमेशा आकर्षति रहेंगे। जीवन में आप लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कई साहसिक कार्य करेंगे।

वार: बुधवार

आपका जन्म बुधवार के दिन हुआ है इसलिए आप सुंदर चेहरे और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होंगे। आप अपनी भाषा और वाणी से सामाजिक जीवन में हर किसी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षति कर लेंगे। इसके अलावा कार्य स्थल पर भी आप बुद्धिमानी और कार्य कौशल से सबको प्रभावित करेंगे। कूटनीतिक व्यवहार करने में आपको महारथ प्राप्त होगी। आप लेखन, कविता और पत्रकारिता जैसे क्षेत्र को अपना पेशा बनाएंगे।

योग:

इस योग में जन्म होने से आप दीर्घायु होंगे। दूसरों के प्रति आपके मन में दया का भाव कम रहेगा और आपका व्यवहार निर्दयी रहेगा। आप उन लोगों में से होंगे जो दूसरों के कामों की प्रशंसा करना पसंद नहीं करेंगे। आप शारीरिक रूप से मजबूत और बहादुर व्यक्ति होंगे। आप अपनों से ज्यादा पराये लोगों पर अधिक विश्वास करेंगे।

करण: विष्टि

इस करण में जन्म होने से आपका नाक–नक्शा और चेहरा बहुत आकर्षक रहेगा। इस वजह से विपरीत लंग के लोग आपकी ओर खींचे चले आएंगे। आप बहुत बहादुर और साहसिक व्यक्ति होंगे। आपके अंदर अपने विरोधियों और उनके लोगों को परास्त करने की प्रवृत्ति होगी। आप लंबे समय तक नींद निकाल सकते हैं।

नक्षत्र: हस्त

आपका जन्म हस्ता नक्षत्र में हुआ है। मानव सेवा और मानवता के प्रति आपका हृदय कोमल रहेगा। जन समुदाय के बीच आप बेहद लोकप्रिय होंगे। धर्म के प्रति आपकी गहरी आस्था होगी और आप धार्मकि कार्यों में समय–समय पर शामिल होते रहेंगे। आप भौतिक सुख–सुविधाओं से संपन्न होंगे, साथ ही अपने जीवनकाल में अच्छा धन संचित करेंगे।

।। आपका लग्न ।।

लग्न क्या है –

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पडती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **कन्या**

स्वास्थ्य कन्या लग्न के लिए:

आंत और कब्ज की शिकायत आप कन्या लग्न वालों के लिए आम होती है। समय – समय पर आपके विचारों में बदलाव से आपके आसपास के दूसरों व्यक्तियों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कन्या लग्न के फलस्वरूप आपको यौन अंगों में परेशानी हो सकती है। आपको अपने खान पान के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आप मिर्च मसालेदार खाना खाने से बचे और विदेशी भोजन के प्रति अपने आकर्षण पर भी नियंत्रण बनाये रखे।

स्वभाव व व्यक्तित्व कन्या लग्न के लिए:

कन्या लग्न के लोग अपेक्षाकृत अपने आप में रहने वाले, विनम्र और मृदुभाषी होते हैं। आप ऐसे लोगों को दोस्त मानते हैं जो आपको सामाजिक ढांचे में ऊपर आने में मदद करते हैं। जब किसी बाधा से सामना होता है तो आप संयमित रहते हैं और उसके समाधान के लिए तर्कसंगत उपाय में लग जाते हैं। इस विनम्रता को ही कभी कभी आपकी कमजोरी और जोड़तोड़ वाला मान लिया जाता है। आपमें इतनी क्षमता होती है कि आप किसी मुद्दे को समझ सकें और सबसे कठिन से कठिन समस्या का हल कर सकें। आपकी लग्न के लोग काफी बुद्धिमान होते हैं और गलत कामों में कम ही संलग्न होते हैं। आपकी लग्न के लोगों का व्यवहार दोस्ताना होता है और आप आमतौर पर सावधान, तेज संयमित और आसपास के बारे में जानकारी रखने वाले होते हैं। आप सोचसमझकर दोस्ती करना पसंद करते हैं। आपमें दूसरों की सहायता करने की ललक का गुण ही आपके लिए हानि का कारण बन जाता है।

शारीरिक रूप–रंग कन्या लग्न के लिए:

कन्या लग्न के लोग अक्सर अल्हड़ प्रवृति के होते हैं। आपकी अक्सर शारीरिक बनावट खासकर चेहरा खूबसूरत होता है। आपके चलने का अंदाज, शारीरिक बनावट, मासूम चेहरा काफी लुभावने दिखता हैं। आपके नाक और गाल काफी आकर्षक होते हैं।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य मीन राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की मित्र राशि है। सूर्य बारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। सूर्य की दृष्टि पहले घर पर है। चन्द्र,गुरू की पूर्ण दृष्टि सूर्य पर है।

इस भाव में सूर्य की उपस्थिति श्शुभ नहीं मानी गई है। इस भाव में उपस्थित सूर्य आपको इतना अधिक स्वाभिमानी बना सकता है कि लोग आपको घमंडी समझ सकते हैं। ऐसे में स्वाभाव में कठोरता आना भी सम्भव है। कार्यक्षेत्र में लाभ और काम करने में अधिक आनंद तभी आएगा जब आपका कार्यालय आपके निवास स्थान से समीप ही हो।

सूर्य की इस भाव में स्थिति वैवाहिक जीवन के लिए भी ठीक नहीं मानी गई है। अत जीवन साथी से मतभेद सम्भव है। विशेषकर विवाह के पंद्रह वर्षों तक वैवाहिक जीवन में सामंजस्य की कमी रहती है। फिर भी जीवन साथी का स्वभाव शमीला हो सकता है। उसके अंग कोमल और नाजुक हो सकते हैं। यहां स्थित सूर्य आपको आत्मरत भी बना सकता है और लोग आपको स्वार्थी समझ सकते हैं।

सूर्य की यह स्थिति किसी विशेष बात को लेकर आपको चिंचित रख सकती है। पिता की बहन अर्थात बुआ के साथ आपके सम्बंध खराब रह सकते हैं। कभीकभी आर्थिक स्थिति और पारिवारिक संबंधों को लेकर भी परेशानी उठानी पड सकती है। सत्ता पक्ष, सरकार या सरकारी कर्मचारियों के द्वारा अपमानित होना पड सकता है या इनके कारण हानि हो सकती है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र कन्या राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की मित्र राशि है। चन्द्र ग्यारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। चन्द्र की दृष्टि सातवें घर पर है। सूर्य,मंगल,बुध की पूर्ण दृष्टि चन्द्र पर है।

प्रथम भाव में स्थित चंद्रमा आपको साहसी और देखने में आकर्षक व्यक्तित्व देता है। आप अधिकांशत प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति हैं। आप सामाजिक होने के साथसाथ यात्राओं के शौकीन व्यक्ति हैं। आप अपने जीवन काल में कई बार विदेश यात्रा कर सकते हैं। आपकी रुचि आध्यात्म में भी हो सकती है और आप इस क्षेत्र में कोई बडी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

लग्न में चंद्रमा होने के कारण आप बहुत भावुक और संवेदनशील हो सकते हैं। आपकी कल्पनाशक्ति बहुत प्रबल होगी। सृजनात्मक और रचनात्मक कार्यों को करने में आपकी अच्छी खासी रुचि होगी और आप इन क्षेत्रों में कुछ विशेषकर सकते हैं। आपको परिवर्तन बहुत पसंद होगा और आप अपने जीवन साथी से बहुत अधिक लगाव रखेंगे। आपको घूमना फिरना बहुत पसंद होगा।

आप जनता के चहेते और लोकप्रिय व्यक्ति होने के साथसाथ अपने वसूलों के बहुत पक्के हैं। चंद्रमा की यह स्थिति आपके प्रेम प्रसंगों के लिए अनुकूलता लाने वाली सिद्ध होगी। आप अधिकांश मामलों में बडे व्यवहारिक और तार्किक हो सकते हैं। लेकिन यह स्थिति जीवन के प्रारंभिक वर्षों में शारीरिक दुर्बलता दे सकती है। साथ ही धन संचय में कठिनाई भी होती है।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल मीन राशि में स्थित है, जो कि मंगल की मित्र राशि है। मंगल आठवें, तीसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। मंगल की दृष्टि दसवें, पहले, दूसरे घर पर है। चन्द्र,गुरू की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

सातवें भाव में स्थित मंगल को अच्छे परिणाम देने वाला नहीं माना गया है। यहां स्थित मंगल आपके विवाह में विलम्ब का कारण बनने के साथ ही आपके जीवनसाथी के दुख का कारण भी बन सकता है। जीवनसाथी के साथ आपका व्यवहार बहुत सरस नहीं रहेगा। मंगल की यह स्थिति कभीकभी अलगाव तक की स्थितियां निर्मित कर देती है।

मंगल की यह स्थिति कभीकभी ईर्ष्या की भावना भी देती है। मंगल की यह स्थिति बेचौनी और चिडचिडापन देने के साथसाथ तर्क और बहस करने वाला भी बना सकती है। सफलता के लिए आपको कडी मेहनत करनी पडेगी। मंगल की यह स्थिति आर्थिक लिहाज से भी ठीक नहीं मानी गई है। अत आपका धन व्यर्थ के कामों में भी खर्च हो सकता है।

आपको क्रोध जल्दी आ सकता है। आपकी वाणी कुछ हद तक कठोर हो सकती है। आप वात रोग से तकलीफ पा सकते हैं। साथ ही आपको पेट से सम्बंधित कुछ तकलीफें रह सकती हैं। आपके दूसरे बच्चे को कुछ तकलीफ रह सकती है। आपको मुकदमेबाजी की वजह से नुकसान पहुंच सकता है। आपके बडे भाई बहनों का आपके पिता के साथ तनावपूर्ण सम्बंध रह सकता है।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध मीन राशि में स्थित है, जो कि बुध की नीच राशि है। बुध दसवें, पहले घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। बुध की दृष्टि पहले घर पर है। चन्द्र,गुरू की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

बुध की यहां स्थिति अधिकांश्श मामलों में आपको श्शुभफल ही देगी। यहां स्थित बुध के कारण आप धनवान तो होंगे ही साथ ही आप पवान भी होंगे। आपका जीवन साथी भी स्वपवान होना चाहिए। साथ ही आपके जीवन साथी के पास धन दौलत भी खूब होगी। आपका विवाह कुलीन परिवार में होना चाहिए। लेकिन जीवन साथी का स्वभाव थोडा सा झगडालू हो सकता है।

आप आपके मित्रों में स्त्रियां अधिक संख्या में होंगी। आप देखने में सुन्दर, कुलीन और श्शिष्ट व्यक्ति हैं। आप स्वभाव से उदार और धार्मिक भी हैं। आप दीर्घायु, मधुरभाषी और सुश्शील व्यक्ति हैं। आप श्शिल्पकला में चतुर और विनोदी होने के साथसाथ काम कला में भी निपुण होंगे। आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते हैं।

आप एक कुशल व्यवसायी भी हो सकते हैं। आप किसी भी खरीदने और बेचने के काम से लाभ कमा सकते हैं। लेकिन आपको अपने व्यवसायिक पार्टनर पर विश्वास नहीं रहेगा। आपको लडाई या वादविवाद से बचना होगा अन्यथा उसमें पराजय ही आपके हाथ लगेगी। आपको भक्षाभक्ष में भेद करते हुए सात्विक चीजों का ही सेवन करना चाहिए।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

गुरू विचार

आपकी कुण्डली में गुरू कर्क राशि में स्थित है, जो कि गुरू की उच्च राशि है। गुरू चौथे, सातवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में ग्यारहवें घर में स्थित है। गुरू की दृष्टि तीसरे, पांचवें, सातवें घर पर है।

यहां स्थित बृहस्पति आपको सुंदर के साथसाथ निरोगी और दीर्घायु श्शरीर भी देता है। आप संतोषी, उदार और परोपकारी व्यक्ति हैं। आप कुशाग्र बुद्धि और विचारवान हैं। आप प्रमाणिक सच बोलने वाले और साधु स्वभाव के हैं। आप सज्जनों और श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति करने वाले व्यक्ति हैं। आप राजा या सरकार के द्वारा सम्मान और लाभ मिलेगा। श्रीमान और कुलीन लोगों से आपकी मित्रता होगी।

आपके मित्र अच्छे स्वभाव के होंगे। आपकी आश्शाओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में वो आपकी सहायता करेंगे। अच्छे मित्रों की सलाह आपके लिए उत्तम और फायदेमंद रहेगी। आपके द्वारा किए गए उत्तम कार्यों से समाज में आपका नाम होगा और श्रेष्ठता भी बढेगी। आपको अर्थलाभ और धन की प्राप्ति होगी। आप धन धान्य से पूर्ण भाग्यवान व्यक्ति हैं। आपके पास आमदनी के कई श्रोत होने चाहिए।

इस भाव का बृहस्पति कभीकभी कंजूस बनाता है और संतान को लेकर कुछ चिंताए भी देता है। उम्र के बत्तीसवें वर्ष में आपको बहुत लाभ होता है। लेकिन आपकी पूर्वाजित सम्पत्ति को कोई और हडप सकता है या किसी कारण से वह आपके हाथ से निकल जाएगी। आप पराक्रमी, पिता के सहायक और श्शत्रुओं को पराजित करने वाले व्यक्ति हैं। आप राज पूज्य या राज कृपा युक्त बने रहेंगे।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र कुंभ राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की मित्र राशि है। शुक्र नौवें, दूसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है। शुक्र की दृष्टि बारहवें घर पर है। शनि,राहू की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

इस भाव में स्थित श्शुक्र के कुछ अच्छे फल कहे गए हैं लेकिन कई अश्शुभ फल बताए गए है। श्शुक्र की इस भाव में स्थिति आपके कुल की श्रेष्ठता का द्योतक हो सकती है। आप सुशिक्षित और विवेकवान हो सकते हैं। लेकिन यहां स्थित शुक्र आपको डरपोक बना सकता है अथवा आपको स्त्रियों से अप्रियता भी मिल सकती है। गुरुजनों से भी आपका विरोध रह सकता है।

आपको शत्रुओं से पीडा भी मिल सकती है। हांलाकि आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। आपको भाईबहनों और मामा से सुख मिलेगा। आपके मामा के कन्या संतान अधिक हो सकती हैं। आपके अच्छे मित्रों की संख्या कम होगी जबकि खराब आदतों वाले मित्र अधिक संख्या में होंगे। आपकी प्रथम संतान पुत्र के प में हो सकती है। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्रपौत्रों से युक्त होंगे।

स्त्री पक्ष से आपको कम सुख मिलेगा अथवा कुछ गुप्त परेशानियां रह सकती हैं। हांलाकि विवाह के बाद यदि आपका आहार विहार नियमित और मर्यादित रहेगा तो समस्याएं नहीं होंगी। आपके खर्चे आमदनी से अधिक हो सकते हैं। हो सकता है कि आप उचित स्थान पर खर्च न करके अनुचित जगह पर खर्च करें। हो सकता है कि स्वतंत्र व्यवसाय से भी आपको बहुत लाभ न मिल पाए।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि सिंह राशि में स्थित है, जो कि शनि की शत्रु राशि है। शनि पांचवें, छठे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में बारहवें घर में स्थित है। शनि की दृष्टि दूसरे, छठे, नौवें घर पर है। शुक्र,केतु की पूर्ण दृष्टि शनि पर है।

यहां स्थित श्शनि आपको एकांतप्रिय बनाता है। आप त्यागी और दयालु व्यक्ति हो सकते हैं। आपका संबंध दानगृह, कारागार जैसी जगहों से हो सकता है। आप गुप्त रीति से धन संचय करते हैं। गुप नौकरी या हल्के कामों से आपको लाभ होता है। आप अपने श्शत्रुओं को सहज पराजित कर सकते हैं। आप बडेबडे दान और यज्ञ करने में रुचि ले सकते हैं।

आप जन समूह के नेता भी हो सकते हैं। आप वकील, वैरिस्टर या ज्योतिषी भी हो सकते हैं। आप कुछ ऐसे कामों से जुडा व्यवसाय भी कर सकते हैं लो आम लोगों की सोच से हटकर हो। यहाम स्थित शनि के कुछ अशुभफल भी कहे गए हैं। अतक आप कुछ हद तक निर्लज्ज या कठोर भी हो सकते हैं। झूठ और ठगी के माध्यम से धनार्जन कर सकते हैं।

आपके शरीर के किसी अंग में कष्ट रह सकता है या आप किसी एक अंग से हीन हो सकते हैं। आपको मांस मदिरा के सेवन न करने और कुसंगति से बचने की सलाह दी जाती है। आपको नेत्ररोग, उन्माद या रक्तविकार की परेश्शानी रह सकती है। फिजूलखर्ची न करें। स्वजनों से प्रेम करें और धन संग्रह करने के लिए सदैव प्रयासरत रहें जो जीवन में बडी तरक्की भी मिल सकती है।

राहू विचार

आपकी कुण्डली में राहू सिंह राशि में स्थित है। राहू बारहवें घर में स्थित है। राहू की दृष्टि चौथे, छठे, आठवें घर पर है। शुक्र,केतु की पूर्ण दृष्टि राहू पर है।

यहां स्थित राहू आपको पराक्रमी और यश्शस्वी बनाता है। आप उदार महत्वाकांक्षी और उच्च आदर्श्श वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप स्वभाव से मिलनसार हैं। आप अपने परिश्रम के दम पर सुखी रहेंगे। आप एक परोपकारी व्यक्ति हैं। आपके लिए आध्यात्म ज्ञान पाना एक सहज कार्य होगा। आपकी रुचि वेदों और वेदांतों में होगी और आप साधु स्वभाव वाले व्यक्ति हैं।

आपको सार्वजनिक संस्थाओं के माध्यम से लाभ मिल सकता है। यदि आप किसी एक जगह पर भी टिक कर बैठे रहेंगे तो भी आपकी इच्छाओं की पूर्ति होती रहेगी। लेकिन कभीकभी बडे प्रयास के बाद भी कुछ अनिष्टफल मिलते रहते है और अंत में स्वयमेव शुभफलों में बदल जाते हैं। यहां स्थित राहू आपके शत्रुओं का नाश करता है।

हो सकता है कि आपको प्रारम्भिक आयु में स्थिरता न मिले और आपको आजीविका के लिए बहुत दूर जाना पडे जो कि विदेश भी हो सकता है। क्योंकि यहां स्थित राहू जन्मभूमि से लाभ नहीं दिलवाता। बाहर जाने पर आपका भाग्योदय होगा और आप खूब कमाई करेंगे। हांलाकि आप खर्चे भी खूब करेंगे। विवेकहीनता, छलकपट, पापपूर्ण विचारों, प्रपंच और नीचकर्म से बचने की सलाह आपको दी जाती है।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु कुंभ राशि में स्थित है। केतु छठे घर में स्थित है। केतु की दृष्टि दसवें, बारहवें, दूसरे घर पर है। शनि,राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

यहां स्थित केतू आपके श्शरीर को निरोगी बनाता है। यदि कोई रोग होता भी है तो वह श्शीघ्र ही ठीक हो जाता है। आप अपने भाइयों को प्रिय और उदार चरित्र के होंगे। आप गुणवान और दृढ प्रतिज्ञ व्यक्ति हैं। आप एक प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। आप अपनी विद्या के कारण यश्श प्राप्त करेंगे। आपको अपने जीवन काल में श्रेष्ठ पद मिलेगा। आप इष्टसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

आपको पश्शुओं से लगाव हो सकता है फल स्वप आपके पास पश्शु धन खूब होगा। आप अपने शत्रुओं को नष्ट करने वाले और विभिन्न विवादों में विजय पाने वाले व्यक्ति हैं। आपको द्रव्य लाभ होता रहेगा। आप फिजूलखर्ची न करके धन की बचत करेंगे। यहां स्थित केतू कई प्रकार के अशुभफल भी देता है। फलस्वप आप कुछ झगडालू स्वभाव के हो सकते हैं।

आपको भूत प्रेत जैसी बाधाओं से कष्ट मिल सकता है। माता या ननिहाल पक्ष से आपको कुछ हानि हो सकती है। मामा का सुख कम मिलेगा। किसी कारण से मामा से मतभेद होने के कारण आपको ननिहाल से आदर सम्मान नहीं मिल पाएगा। आपको दांत का रोग अथवा होंठों से सम्बंधित कोई परेशानी हो सकती है। फिर भी आप विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक परिक्षाओं और विवादों में सफल होंगे।

।। विस्तृत भविष्यफल ।।

चरित्रः

आप सौन्दर्य–प्रेमी हैं, चाहे वह कला, दर्शनीयस्थल या आकर्षक व्यक्ति ही क्यों न हो। आप केवल बाह्य सौन्दर्य ही नहीं,अपितु आन्तरिक सौन्दर्य के प्रति भी आकर्षित होते हैं। अच्छा संगीत आपकोपसन्द आता है, किसी व्यक्ति का सच्चरित्र आपको पसन्द आता है। आप सामान्य से ऊपरप्रत्येक वस्तुओं के पारखी हैं।दूसरों को खुश करने की आपके अन्दर नैसर्गिक क्षमताहै। आप परेशान लोगों को सान्त्वना देना अच्छी तरह से जानते हैं और आपजानते हैं कि लोगों को अपने आप से खुश कैसे रखा जाये। यह एक विरला गुणहैं एवं इस कारण संसार में आप जैसे व्यक्ति कम ही हैं।आप अन्य लोगों जितने व्यावहारिक नहीं है और आपसमय के भी पाबन्द नहीं हैं।आप आवश्यकता से अधिक संवेदनशील और जोकि आपकोकभी–कभी परेशानी में डाल देती है परन्तु आपकी खिन्नतालड़ाई–झगड़े के रूप में बाहर नहीं आती है। असामंजस्य से आप हर कीमत परदूर रहते हैं। सम्भवतः आप अपने मन से दुःख को दूर रखते हैं।

सौभाग्य व संतुष्टिः

आप साहसी व्यक्ति हैं। आप इतने आवेगपूर्ण हैं किआपके पास भय और चिन्ता के लिये कोई समय नहीं है। इस तरह की समय–समय परहोने वाली घटनाएं आपको अन्तर्ज्ञान प्रदान करती हैं। आपका व्यक्तित्व रुचिपूर्णहोने के कारण लोग आपका साथ पसन्द करते हैं। आप एक उत्तम व्यक्तित्व–वाचक वप्राच्य विद्याओं की ओर आकर्षित हैं, जो आपको जीवन को गहराई सेसमझने में सहायता करता है। आपकी यह असाधारण दूरदृष्टि आपको आगेबढ़ने में एवं आपकी सफलता में बाधक कारणों को समझने में आपकी सहायताकरती है।

जीवन शैलीः

आप अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक अन्तर्मुखी हैं। यदिआपको बहुत से लोगों के समूह के सम्मुख जाना पड़े, तो आप 'स्टेज फोबिया' सेग्रसित हो जाते हैं। आप सबसे अधिक प्रेरित एकान्त में, इच्छानुसार कार्य अपनी गतिसे करने में होते हैं।

।। विस्तृत भविष्यफल ।।

रोजगारः

आपका कार्यक्षेत्र बहुआयामी और बौद्धिक होना चाहिए।आपको एक समय में एकाधिक कार्य करना पसन्द है और सम्भवतः आपके एकाधिक व्यवसायहोंगे।

व्यवसायः

आपकी मानवता को मदद करने की व दूसरों केदुःख–दर्द दूर करने की इच्छा के कारण चिकित्सा कार्यक्षेत्र या 'नर्सिंग' (यदि आपस्त्री हैं) आपके लिये उपयुक्त है। इन दोनों में ही आप अपनी आकांक्षा को प्राप्तकर पाएंगे और संसार में निश्चय ही अच्छा एवं उपयोगी कार्य कर पाएंगे। यदि आप येकार्यक्षेत्र नहीं भी अपना पाते हैं, तो भी आपके मिज़ाज के अनुरूप अन्य कईसम्भावनाएं हैं। एक शिक्षक के तौर पर आप बहुत अच्छा कार्य कर सकते हैं। एकप्रबन्धक के तौर पर आप साहस व सुहृदयता से अपने कर्तव्यों का निर्वाह ठीक ढ़ंगसे कर पाएंगे और आपके सहकर्मी अपनी इच्छा से आपके आदेशानुसार कार्य करेंगे,क्योंकि वे जानते हैं कि आप एक अच्छे मित्र हैं। इसके अलावा भी आप कई भिन्नकार्यक्षेत्रों में अच्छा जीवन यापन कर सकते हैं, मुख्तः साहित्यिक एवं कलात्मकअभिव्यक्ति, जोकि मिलाकर आपको लेखक बनाती हैं। आप टीवी और फिल्म के लिये एकबेहरत अभिनेता भी हो सकते हैं। यदि आप इस तरह के कार्यक्षेत्रों का चुनाव करतेहैं, तो आप अपने धन व समय को सामाजिक कार्यों में भी लगाएंगे।

स्वास्थ्यः

आपकी स्वास्थ्य–संरचना बहुत अच्छी है, लेकिन आपस्नायु–विकार एवं अपच से पीड़ित रह सकते हैं। पहले का कारण आपकी ज़रूरत सेज़्यादा सम्वेदनशील प्रकृति है। आप अपेक्षाकृत शीघ्रता से अपनी जीवन–ऊर्जाखो देते हैं; और वह जीवन, आप जिसका आनन्द लेते हैं, इसमें आपकी कोई मददनहीं करता। अतिभोग, अपच का मुख्य कारण है। अपच का मुख्य कारण अधिकता में लियागया भोजन है। जो आप खाते हैं, या तो वह वहुत भारी होता है या दिन मेंबहुत देरी से लिया हुआ होता है।

।। विस्तृत भविष्यफल ।।

रुचिः

आपके कई शौक हैं और आप इन शौकों सेओत–प्रोत हैं। परन्तु अचानक ही आप धैर्य खो देते हैं व उन्हें एक तरफ करदेते हैं । फिर आप कोई नया शौक चुन लेते हैं और उसका भी यही हश्र होताहै। आप जीवन को इसी तरह से जीते जाते हैं। सारांशतः, आपकी अभिरुचियां आपकोपर्याप्त आनन्द देती हैं, साथ ही आपको बहुत कुछ सीखने का मौका भी देती हैं।

प्रेम आदिः

आप प्रेम को बड़ी गम्भीरता से लेते हैं। वस्तुतः, आपइसे पाने का प्रयास इस तरह करते हैं, कि आपका प्रिय उससे भयभीत हो सकता है। एकबार प्रेम की निर्बाध धारा प्रवाहित होना प्रारम्भ हो जाए, आप दर्शाते हैं किआपका लगाव गहरा व वास्तविक है। आप एक सहानुभूतिपूर्ण जीवनसाथी हैं और जिससेआप विवाह करेंगे, वह आपका अखण्ड प्रेम प्राप्त करेगा। हांलाकि आप उससे यह उम्मीदकरते हैं कि वह आपकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुने, परन्तु आपके अन्दर दूसरोंकी बात को ध्यान से सुनने का धैर्य नहीं है।

वित्तः

आप वित्तीय मामलों में भाग्यशाली हैं, लेकिनविलासपूर्ण और खर्चीले जीवनशैली में लिप्त हैं। आप बड़े जोखिम उठाएंगे याव्यापार को बड़े पैमाने पर करेंगे। परन्तु साधारण तौर पर आप काफी सफल रहेंगे।सम्भवतः आप एक उद्योगपति होंगे। सभी प्रकार के आर्थिक मामलों में आप ज़्यादाभाग्यशाली रहेंगे, उदाहरणार्थ आपको वसीयत में अचल सम्पत्ति प्राप्त हो सकतीहै। आप प्रेम सम्बन्धों में भी भाग्यशाली होंगे। आप विवाह से भी धन प्राप्तकर सकते हैं या फिर आप इसे अपने दिमाग से बनाएंगे। लेकिन एक बात निश्चित है, किआप एक धनाढ्य व्यक्ति बनेंगे।

।। भाव फल ।।

जन्म कुंडली में 12 खाने होते हैं जो मानव जीवन के सभी संबंधों तथा क्रिया–कलापों को समाहित किए होते हैं। इन्हें भाव कहा जाता है। इस प्रकार भचक्र की 12 राशियों इन 12 भावों में अवस्थित होती हैं और उस राशि के स्वामी ग्रह को उस भाव का भावेश कहा जाता है। प्रत्येक भाव के स्वामी का विभिन्न भावों में उपस्थित होना तथा प्रत्येक भाव पर विभिन्न ग्रहों अथवा भावेशों का प्रभाव जीवन में होने वाली विभिन्न परिस्थितियों को दर्शाता है।

व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति

जन्म कुंडली में सातवाँ भाव, प्रथम भाव से विपरीत होता है। सातवाँ भाव साझेदारी, स्त्री, यात्रा, व्यवसायिक साझेदारी और विदेश गमन से संबंधित होता है। यह भाव आपकी व्यक्तिगत और व्यवसायिक साझेदारी को दर्शाता है। इस भाव से आपके जीवन में होने वाली व्यक्तिगत और व्यवसायिक साझेदारी का अनुमान लगाया जा सकता है। यह भाव विवाह, यात्रा और विदेश में बसने की संभावना को भी दर्शाता है।

लग्नेश का सातवें भाव में स्थित होना यह दर्शाता है कि, आप अपने जीवन में साझेदार को महत्व देंगे। यदि आप विवाहित हैं तो जीवन साथी का पक्ष लेंगे और जीवन भर उनके साथ बेहतर तालमेल बनाकर चलेंगे। अगर व्यवसायिक साझेदार हैं तो भी आप उसे उतना ही महत्व देंगे लेकिन दूसरे पक्ष के विचारों का सम्मान करने की भी आवश्यकता होगी। चूंकि सप्तम भाव इच्छा और आकांक्षा से भी जुड़ा है इसलिए साझेदारी में लाभ और हानि की संभावना का विचार आपको थोड़ा चंतित कर सकता है। लग्नेश के सप्तम भाव में होने से आप कामुक विचारों में तल्लीन रह सकते हैं। लग्न स्वामी के प्रथम भाव के विपरीत सप्तम भाव में होने से सप्तम भाव में मिलने वाले फल प्रथम भाव के विपरीत अच्छे या बुरे हो सकते हैं। जहां प्रथम भाव आपके व्यक्तित्व और जन्म स्थान के बारे में बताता है, वहीं सप्तम भाव आपसे जुड़े अन्य लोगों और जन्म स्थान से दूर जाने की संभावना को बतलाता है। लग्नेश का सातवें भाव में स्थित होना इस बात का साफ संकेत हो सकता है कि, आप जन्म स्थान से दूर रहकर किसी अन्य स्थान पर बस जायें।

धन, परिवार, जमीन और जायदाद

द्वितीय भाव के स्वामी के छठे भाव में स्थित होने से द्वितीय भाव से संबंधित मामलों में समस्या और असंतुलन उत्पन्न होता है। ज्योतिष में छठवां भाव संघर्ष, समस्या और रोग से संबंधित होने की वजह से कठिन भाव कहलाता है। इसकी वजह से पारिवारिक जीवन और भौतिक सुख–साधनों के मामलों में कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। यह पारिवारिक और भौतिक संसाधनों को क्षति पहुंचाता है। इसके परिणामस्वरुप परिवार की ओर से सहयोग नहीं मिलना और चंता बढ़ सकती है। द्वितीय भाव के स्वामी का छठे भाव में स्थित होना आर्थिक और भौतिक साधनों की हानि के साथ–साथ रोग, शत्रुता और उधारी का कारण बनता है। आपके विरोधी आप पर हावी रह सकते हैं और आपके भौतिक संसाधनों को आप से छीन सकते हैं। गलत योजना या संसाधनों के गलत इस्तेमाल की वजह से आप कर्ज के बोझ तले दब सकते हैं। चूंकि छठवां भाव संघर्ष और सेवा का भाव है इसलिए नौकरी के माध्यम से धन अर्जन होगा लेकिन इसके लिए आपको कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। द्वितीय भाव के स्वामी की यह स्थिति आपके कमजोर स्वास्थ्य और रोग की ओर भी इशारा करती है और आपका मेहनत से कमाया हुआ धन रोगों पर खर्च हो सकता है। भोग विलास में अधिक आसक्त होने की वजह से आर्थिक परेशानियां उत्पन्न हो सकती है। आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु में आसक्त होना आपके लिए कर्ज का कारण भी बन सकता है। द्वितीय भाव भाषा से संबंधित है जबकि छठवां भाव क्रोध से संबंध रखता है इसलिए भाषा में उग्रता बढ़ने से आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान आपके रिश्ते भी प्रभावित हो सकते हैं।

भाई–बहन, साहस

जब तृतीय भाव का स्वामी सप्तम भाव में होता है तो इसके फलस्वरूप आप अपनी इच्छा और अभिलाषा में वृद्धि का अनुभव कर सकते हैं। चूंकि तृतीय और सप्तम दोनों भाव अभिलाषा से जुड़े भाव हैं इसलिए इस दौरान आपकी आकांक्षा और लालसा में प्रबल वृद्धि हो सकती है। सप्तम भाव में स्थित तृतीय भाव का स्वामी आपको प्रोत्साहित करता है जिसके चलते आप अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए लंबे समय तक कोशिश करेंगे और इसी कार्य में जुटे रहेंगे। चूंकि सप्तम भाव साझेदारी से संबंधित होता है इसलिए आप भाई–बहन और मित्रों के साथ बेहद मधुर संबंध रखेंगे। सहकर्मी और पड़ोसियों के साथ भी आपके संबंध अच्छे रह सकते हैं। तृतीय भाव के स्वामी के सप्तम भाव में होने से इस बात की प्रबल संभावना होती है कि, आप अपने किसी मित्र या सहकर्मी को अपना जीवन साथी बना सकते हैं। यदि विवाह नहीं भी हो तो आप जीवन भर उस व्यक्ति के साथ या करीबी से रिश्ता बनाकर रख सकते हैं। आप अपने दोस्तों और सहकर्मियों के साथ आर्थिक और व्यावसायिक साझेदारी भी बनाकर रख सकते हैं। तृतीय भाव के स्वामी का सप्तम भाव में स्थित होना यह दर्शाता है कि अन्य लोगों के साथ आपके रिश्तों की अवधि कम और ज्यादा रह सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि कुछ परिस्थितियों में इच्छाओं का भी अंत नहीं होता है।

सुख, शिक्षा, घर, माता, प्रॉपर्टी

चतुर्थ भाव के स्वामी का एकादश भाव में स्थित होना उच्च जीवन शैली, आलीशान मकान, महंगे वाहन और भौतिक सुख–सुविधा को दर्शाता है। दरअसल चतुर्थ और एकादश दोनों भाव भौतिक सुख–सुविधा के लगातार संचय और बढ़ोतरी से संबंधित होते हैं। यह स्थिति भौतिक संसाधनों के साथ–साथ आपकी सामाजिक लोकप्रियता को भी दर्शाती है। आप भव्य और सुखमय जीवन व्यतीत करना पसंद करेंगे। आपके पास आय के कई साधन होंगे।

आप उच्च जीवन शैली के लिए भौतिक संसाधन व मनोरंजन पर धन खर्च करेंगे। इससे पता चलता है कि आपके पास तमाम तरह के इलेक्ट्रिक उपकरण होंगे। आपके सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। सार्वजनिक जीवन में आपकी मॉ को भी बड़ी पहचान मिलेगी। सामाजिक कार्य में आप हमेशा अपने परिजनों के साथ सममिलित होंगे। सामाजिक कार्यक्रम, पार्टी और मनोरंजक गतिविधियों में शामिल होने से आपको प्रसन्नता मिलेगी और लोगों से मेलजोल बढ़ेगा। समृद्ध जीवन शैली व्यतीत करने के लिए आप पारिवारिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। चतुर्थ भाव से गणना करने पर एकादश भाव अष्टम स्थान पर आता है यह स्थिति आपकी भावनात्मक प्रवृत्ती को प्रभावित कर सकती है। आपका समय और धन एकादश भाव से संबंधित मामलों की वृद्धि करने में लगेगा और इससे आपको लाभ की प्रापति होगी।

बच्चे, मन, बुद्धि

पंचम भाव के स्वामी का द्वादश भाव में स्थित रहना जीवन में विभिन्न तरह के पथ को दर्शाता है। इसका मतलब है कि आपको जीवन में कई तरह की राह मिलेगी। द्वादश भाव हानि का भाव होता है विशेष कर भौतिक मामलों से संबंधित नुकसान का। पंचम भाव से गणना करने पर द्वादश भाव अष्टम स्थान पर आता है। यह स्थिति पंचम भाव से संबंधित मामलों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप आपके व्यक्तित्व में बड़ा परिवर्तन देखने को मिल सकता है। आपकी बौद्धिक लालसा में परिवर्तन देखने को मिलेगा। पंचम भाव के स्वामी के द्वादश भाव में स्थित होने से आपको उच्च शिक्षा की प्रापति होगी। हालांकि आपको अपनी बौद्धिक क्षमता और प्रदर्शन का श्रेय नहीं मिलेगा। इसकी यह वजह भी हो सकती है कि आप अपनी बौद्धिक और रचनात्मक क्षमता का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाएंगे। पंचम भाव वंशवृद्धि यानि संतान सुख से भी संबंधित होता है और इसके द्वादश में स्थित होने से संतान प्रापति में थोड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

बीमारियाँ, ऋण, शत्रु

षष्ठम भाव लगाव को दर्शाता है, वहीं द्वादश भाव अलगाव को इंगित करता है। षष्ठम भाव पूर्ण रूप से भौतिकता को प्रकट करता है जबकि द्वादश भाव का भौतिक सुख से कोई संबंध नहीं होता है, यह हानि को दर्शाता है। षष्ठम भाव का स्वामी जब द्वादश भाव में स्थित रहता है तो यह आपको पूरी तरह से भ्रमित करता है। इसके परिणामस्वरूप भौतिक जीवन में परेशानी और हानि का अनुभव होने लगता है। यह स्थिति दर्शाती है कि आप किसी विवाद में फँस जाएंगे। हालांकि जब किसी क्रूर भाव का स्वामी दुष्ट भाव में स्थित रहता है तो वह कुछ मामलों में शुभ फल का संकेत देता है। भौतिक लाभ और सुख–साधन अर्जित करने के बजाय, आप वित्तीय संसाधनों का आदान–प्रदान करने में ज्यादा विश्वास रखेंगे। आप अपनी कमाई, संपत्ति, ऊर्जा और सुख–दुख सभी के साथ बाँटना पसंद करेंगे। यह इस बात को भी दर्शाती है कि आपका जुड़ाव किसी धार्मिक और परोपकारी संस्था से भी रहेगा। षष्ठम भाव सेवा का भाव है इसलिए यह कर्म को लेकर आपके दायित्व, बंधन और व्यक्तिगत ऋण को प्रकट करता है। षष्ठम भाव के स्वामी का द्वादश भाव में स्थित रहना यह दर्शाता है कि, आप दुनिया के सामने अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेंगे और लोगों को मानवीय सेवा के लिए प्रेरित करेंगे।

विवाह, साथी

जन्म कुंडली में सप्तम और एकादश भाव को ''आशा'' का भाव कहा जाता है। सप्तम भाव अंतरंग संबंध और व्यक्तिगत प्रशंसा व पहचान को लेकर हमारी प्रबल इच्छा को दर्शाता है। ये विवाह या व्यवसाय से भी संबंधित हो सकते हैं। जबकि एकादश भाव हमारे व्यक्तिगत संबंधों के विस्तार और वृद्धि से सामाजिक प्रतिष्ठा में होने वाली बढ़ोत्तरी की इच्छा को प्रकट करता है। इसके अलावा एकादश भाव वृद्धि का घर कहा जाता है और इसके अंतर्गत आने वाले सभी मामलों में यह भाव बढ़ोत्तरी प्रदान करता है। सप्तम भाव के स्वामी का एकादश भाव में स्थित होना दर्शाता है कि, सप्तम भाव से संबंधित मामलों का शुभ प्रभाव एकादश भाव पर रहेगा। चूंकि सप्तम भाव कामुक संबंध और विवाह से संबंधित होता है इसलिए सप्तम और एकादश भाव के स्वामी की यह स्थिति दर्शाती है कि, आपके कई अंतरंग संबंध हो सकते हैं। आपके एक से अधिक विवाह होने की भी संभावना है। सप्तम भाव के स्वामी की यह स्थिति एक सफल और लाभकारी व्यावसायिक प्रतिष्ठान की संभावना को भी दर्शाती है। आपके कई लोगों के साथ अच्छे व्यावसायिक संबंध हो सकते हैं। आप अपने प्रियतम के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे हालांकि इसके लिए आपको लगातार उनके साथ रहना होगा। सप्तम भाव के स्वामी की यह स्थिति व्यावसायिक क्षेत्र में वृद्धि और विकास को भी सुनिश्चित करती है। आपको काम की तुलना में अधिक लाभ होगा।

दीर्घायु, खतरा, कठिनाइयाँ

सप्तम भाव हमारे दाम्पत्य जीवन का कारक होता है। वहीं अष्टम भाव हमारे व्यक्तित्व के छिपे हुए व अव्यक्त पहलुओं का खुलासा करता है और ये पुरानी बीमारी, अंत, बड़े परिवर्तन और हमारे जीवन में अन्य व्यक्तियों के धन से संबंधित होता है। इच्छाओं का भाव होने के नाते सप्तम भाव हमारी विभिन्न जरूरतों व इच्छाओं का ख्याल रखता है। विध्वंस का कारक अष्टम भाव के स्वामी के सप्तम भाव में स्थित होने से रिश्तों में कड़वाहट आ सकती है या फिर पूरी तरह से बिगड़ सकते हैं जो एक तरह से समापति का ही प्रतीक है। उम्र का कारक अष्टम भाव मृत्यु के कारण को बताता है जबकि सप्तम भाव का प्रभाव आपके व्यक्तित्व को ही पूरी तरह से बदल देता है। वैसे देखा जाए तो इन दोनों भावों से ही हमारे भीतर बदलाव आते हैं। बस फर्क इतना है कि सप्तम भाव साथी का कारक होता है और इसमें दूसरे के प्रभाव के कारण हमारे अंदर बदलाव आता है। जब अष्टम भाव का स्वामी सप्तम भाव में स्थित होता है तो वो अपने स्थान से बारहवें घर में होता है। ऐसे में सप्तम भाव के कारण अष्टम भाव का प्रभाव खो भी सकता है। बदलाव का कारक अष्टम भाव आपके अंदर छुपे राज व शक्तियों को बड़े ही अदभुत तरीके से बाहर लाता है। लेकिन सप्तम भाव के प्रभाव के कारण जातक अष्टम भाव के मुख्य तत्व यानि अंदरूनी शक्तियों को भूल जाता है। अष्टम भाव के स्वामी के अपने स्थान से बारहवें घर में जाने के कारण सप्तम भाव को हानि हो सकती है। इस प्रभाव के कारण आपके जीवन साथी किसी रोग से पीडति हो सकते हैं या फिर आपके बिजनेस–पार्टनर के जीवन में कोई दुर्घटना या परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

भाग्य, पिता, विरासत

नवम भाव शुभ भाग्य और जीवन में परमात्मा की कृपा को दर्शाता है तो वहीं छठा भाव किसी बीमारी, विरोधी, शत्रु या फिर आर्थिक कमी आदि के कारण आपकी जदिगी में बाधाएं उत्पन्न करता है। नवम भाव में जीवन बहुत ही आसान व खुशनुमा बीतता है जबकि छठे भाव से परेशानियां ही परेशानियां मिलती है। जब नवम भाव का स्वामी छठे भाव में स्थित होता है तब वह अपने अपने स्थान से दसवें भाव में आता है। ये स्थिति उस संघर्ष को दर्शाती है जो सफलता के लिए जरूरी है। इस दौरान आपको आसानी से ना ही कोई चीज हासिल होगी और ना ही आपसे दूर जाएगी। निरंतर प्रयास व मेहनत करने की जरूरत पड़ती है। इस स्थिति के चलते ये भी संभव है कि व्यावसायिक तौर पर आपके पिता कानूनी या स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्र से जुड़ जाएं। या फिर ये भी हो सकता है कि वह किसी बीमारी से पीडति हो जाएं या कर्ज से बंध जाएं। ये स्थिति आपके पिता के संघर्षों व मेहनत आदि को इंगित करती है। ये स्थिति नवम भाव के कारक तत्वों के कारण आने वाली बाधाओं को भी दर्शाती है। क्योंकि छठा भाव आक्रामकता का भी भाव है, इस कारण इसके प्रभाव से आपके धार्मिक, पारंपरिक व सांस्कृतिक विचारों पर भी इसका असर पड़ सकता है। इस स्थिति के प्रभाव से आप नवम भाव से संबंधित समस्याओं से समाधान पाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे। इस स्थिति के कारण पिता के साथ संबंध बिगड़ भी सकते हैं। पिता के व्यवहार में आई आक्रामकता व गुस्से से रिश्तों में कड़वाहट भी आ सकती हैं। धर्म का भाव यानि नवम भाव जब छठे भाव में स्थित होता है तो कई परेशानियों को दर्शाता है। इनसे निजात पाने के लिए आपको धर्म के रास्ते पर भी चलना पड़ सकता है।

प्रोफेशन

दशम भाव के बारे में सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करने के लिए सप्तम भाव का विश्लेषण किया जाता है क्योंकि सप्तम भाव में स्थित होने पर दशम भाव का स्वामी अपने स्थान से दशम स्थान पर होता है। सप्तम भाव साझेदारी व एक साथ काम करने के भाव को दर्शाता है जबकि दशम भाव व्यक्तिगत या फिर किसी समूह के भाग के प्रयासों के जरिए आपकी पेशेवर महत्वाकांक्षाओं और आकांक्षाओं को दर्शाता है जिससे समाज में आपको सफलता व उच्च दर्जा हासिल हो सके। सप्तम भाव इच्छाओं, रिलेशनशिप का कारक होता है तो वहीं भौतिक आनंद व उच्च सामाजिक स्थिति को दर्शाने वाला दशम भाव अपनी प्रोफेशनल ग्रोथ और उन्नति के सामने पर्सनल रिश्तों को एक तरफ रख देता है। जब आपके दशम भाव का स्वामी सप्तम भाव में जाता है तो वह अपने स्थान से दशम भाव में जाता है। ये संयोजन आपके करियर के लिए बेहद लाभदायक होता है। इस दौरान आपको व्यावसायिक साझेदारी में कामयाबी हासिल होगी। वैसे इस स्थिति से न केवल आपको प्रोफेशनल लाइफ में सफलता मिलेगी बलकि कार्यक्षेत्र पर संबंध भी मजबूत होंगे। कामकाजी पेशेवर के रूप में आप समूह में अच्छे से प्रदर्शन कर पाएंगे और एक अच्छी टीम फॉर्म करेंगे। व्यक्तिगत तौर पर आप अपनी टीम में सकारात्मक रूप से भाग लेंगे और अकेले ही अपने कौशल का प्रदर्शन करके एक्सपर्ट के रूप में उभरेंगे। क्योंकि आपका सप्तम भाव दशम भाव के कारण प्रभावित है तो ऐसे में ये संभव है कि आप अपने लाइफ पार्टनर को वर्किंग पार्टनर बना लें। पति–पत्नी के बीच प्रोफेशनल तौर पर लक्ष्य व रूचि समान होने से आपके आपसी रिश्तों में अनुकूलता आ सकती है। चूंकि सप्तम भाव अन्य स्व का प्रतिनिधित्व करता है तो ऐसे में वहां पर दशम भाव के स्वामी की उपस्थिति दूसरों के लिए सुख व लाभ इंगित करती है।

आय, लाभ

एकादश भाव वृद्धि का भाव है। यह भाव न केवल भौतिक सुख में वृद्धि को दर्शाता है बलकि अनेक मित्र, व्यापक सामाजिक संपर्क, सफलता, प्रशंसा और उपलबधि आदि को भी इंगित करता है। चूंकि एकादश भाव वृद्धि और आकांक्षा का भाव है इसलिए यह आत्म संतुष्टि, सुख और लालसा को भी दर्शाता है। जीवन के वे सभी पहलू जो एकादश भाव के अंतर्गत आते हैं उनमें यह गुणात्मक रूप से वृद्धि करता है। जब एकादश भाव का स्वामी प्रथम भाव में स्थित रहता है तो यह अपने मूल भाव से तृतीय स्थान की दूरी पर होता है। इसके फलस्वरुप आपके प्रयासों में एक नए उत्साह और शक्ति का संचार होता

है। बौद्धिक उत्तेजना बढ़ने से सीखने और समझने की इच्छा बढ़ती है। इस स्थिति में भांति–भांति की इच्छा और रुचि रखने वाले लोगों से आपके संबंध व संपर्क बढ़ते हैं। आपको बाहरी वातावरण से ऊर्जा मिलेगी, जिससे आपके अंदर शक्ति का संचार होगा। एकादश भाव के स्वामी का प्रथम भाव में स्थित रहना यह दर्शाता है कि, आप अच्छी शारीरिक कद–काठी के धनी रहेंगे और आपका व्यक्तित्व बेहद शानदार रहेगा। आप स्वयं के अंदर निरंतर बदलाव करते रहेंगे जिससे लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे। आप स्वयं को नए अंदाज में प्रस्तुत करके नये संबंध स्थापित करेंगे। आपके पास आय के कई साधन होंगे। भौतिक सुखों की चाह से ज्यादा आप मित्र और सामाजिक संपर्क बनाना ज्यादा पसंद करेंगे। एकादश भाव के स्वामी का प्रथम भाव में स्थित रहना यह भी दर्शाता है कि, आपकी व्यक्तिगत छवि बेहद अच्छी होगी और इसकी मदद से आप कई लाभकारी संपर्क बनाएँगे। परिवार में आप भाई–बहन और वरिष्ठजनों से अच्छे संबंध रखेंगे।

खर्च, मोक्ष

सप्तम भाव व्यक्तिगत रिश्तों और साझेदारी को लेकर आपके झुकाव को दर्शाता है। यह भाव कर्म समूह का भाव है जो इच्छाओं के आवेग को प्रकट करता है। द्वादश भाव मोक्ष भाव कहलाता है और यह रिश्ते,नाते और सांसारिक जीवन से अलगाव को इंगित करता है। जब आपके द्वादश भाव का स्वामी सप्तम भाव में स्थित रहता है तो वह अपने मूल भाव से अष्टम स्थान की दूरी पर होता है। यह स्थिति रिश्तों में अप्रत्याशित और बड़े परिवर्तन को दर्शाती है, चाहे वो अंतरंग संबंध हो या फिर व्यावसायिक संबंध। आपके मन में अंतरंग या कामुक संबंध को लेकर बहुत अधिक इच्छा नहीं होगी। या द्वादश भाव के प्रभाव की वजह से सप्तम भाव से संबंधित अंतरंग संबंध प्रभावित हो सकते हैं। वैवाहिक जीवन प्रभावित होने की वजह से आप मानसिक संतुलन खो सकते हैं। इस बात की भी संभावना है कि आपका जीवनसाथी के साथ अलगाव हो जाये। हालांकि ऐसा नहीं है कि आप दोनों अलग हो जाएंगे बलकि वैचारिक रूप से संबंधों में मतभेद आ जाएंगे। द्वादश भाव के स्वामी के प्रभाव से आपकी व्यावसायिक साझेदारी भी प्रभावित हो सकती है। व्यवसाय में आपको हानि और आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है या फिर बिजनेस–पार्टनरशिप टूट सकती है। वहीं सप्तम भाव के प्रभाव से द्वादश भाव के स्वामी में बड़ा परिवर्तन देखने को मिलेगा। इस बात की संभावना है कि, जीवन और लोगों को लेकर आपकी अलगाव की भावना बदल जाये और आप लोगों से मधुर संबंध बनाने को लेकर उत्सुक रहें। यदि द्वादश भाव के स्वामी का प्रभाव आपके सप्तम भाव के संबंधों पर रहता है तो यह आपके असतित्व को बनाये रखने में मददगार साबित होगा। यदि आप और आपका जीवनसाथी आध्यातमिक प्रवृत्ति के हैं तो आप दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय और आनंददायक रहेगा।

।। मंगलदोष विवेचन ।।

सामान्यतः मंगल दोष जन्म–कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से सप्तम भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से सप्तम भाव में है।

अतः मंगल दोषलग्न कुण्डली और चंद्र कुण्डली में उपस्थित है।

ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खडी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)

कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)

1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।

1) चिडियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
2) घर पर हाथी–दांत रखें।
3) बरगद के पेड की पूजा मीठे दूध से करें

नोटः हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

नाम	Punit Pandey
दिनांक	11/4/1979
समय	18:30:0
जन्म स्थान	Agra
लिंग	Male
राशि	कन्या
तिथि	पूर्णि मा
नक्षत्र	हस्त

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	साढे साती	सिंह	सितम्बर 07, 1977	नवम्बर 03, 1979	उदय
2	साढे साती	कन्या	नवम्बर 04, 1979	मार्च 14, 1980	शिखर
3	साढे साती	सिंह	मार्च 15, 1980	जुलाई 26, 1980	उदय
4	साढे साती	कन्या	जुलाई 27, 1980	अक्टूबर 05, 1982	शिखर
5	साढे साती	तुला	अक्टूबर 06, 1982	दिसम्बर 20, 1984	अस्त
6	साढे साती	तुला	जून 01, 1985	सितम्बर 16, 1985	अस्त
7	छोटी पनौती	धनु	दिसम्बर 17, 1987	मार्च 20, 1990	
8	छोटी पनौती	धनु	जून 21, 1990	दिसम्बर 14, 1990	
9	छोटी पनौती	मेष	अप्रैल 18, 1998	जून 06, 2000	
10	साढे साती	सिंह	नवम्बर 01, 2006	जनवरी 10, 2007	उदय
11	साढे साती	सिंह	जुलाई 16, 2007	सितम्बर 09, 2009	उदय

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	साढे साती	कन्या	सितम्बर 10, 2009	नवम्बर 14, 2011	शिखर
13	साढे साती	तुला	नवम्बर 15, 2011	मई 15, 2012	अस्त
14	साढे साती	कन्या	मई 16, 2012	अगस्त 03, 2012	शिखर
15	साढे साती	तुला	अगस्त 04, 2012	नवम्बर 02, 2014	अस्त
16	छोटी पनौती	धनु	जनवरी 27, 2017	जून 20, 2017	
17	छोटी पनौती	धनु	अक्टूबर 27, 2017	जनवरी 23, 2020	
18	छोटी पनौती	मेष	जून 03, 2027	अक्टूबर 19, 2027	
19	छोटी पनौती	मेष	फरवरी 24, 2028	अगस्त 07, 2029	
20	छोटी पनौती	मेष	अक्टूबर 06, 2029	अप्रैल 16, 2030	
21	साढे साती	सिंह	अगस्त 28, 2036	अक्टूबर 22, 2038	उदय
22	साढे साती	कन्या	अक्टूबर 23, 2038	अप्रैल 05, 2039	शिखर
23	साढे साती	सिंह	अप्रैल 06, 2039	जुलाई 12, 2039	उदय
24	साढे साती	कन्या	जुलाई 13, 2039	जनवरी 27, 2041	शिखर
25	साढे साती	तुला	जनवरी 28, 2041	फरवरी 05, 2041	अस्त
26	साढे साती	कन्या	फरवरी 06, 2041	सितम्बर 25, 2041	शिखर
27	साढे साती	तुला	सितम्बर 26, 2041	दिसम्बर 11, 2043	अस्त
28	साढे साती	तुला	जून 23, 2044	अगस्त 29, 2044	अस्त
29	छोटी पनौती	धनु	दिसम्बर 08, 2046	मार्च 06, 2049	

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	छोटी पनौती	धनु	जुलाई 10, 2049	दिसम्बर 03, 2049	
31	छोटी पनौती	मेष	अप्रैल 07, 2057	मई 27, 2059	
32	साढे साती	सिंह	अक्टूबर 13, 2065	फरवरी 03, 2066	उदय
33	साढे साती	सिंह	जुलाई 03, 2066	अगस्त 29, 2068	उदय
34	साढे साती	कन्या	अगस्त 30, 2068	नवम्बर 04, 2070	शिखर
35	साढे साती	तुला	नवम्बर 05, 2070	फरवरी 05, 2073	अस्त
36	साढे साती	तुला	मार्च 31, 2073	अक्टूबर 23, 2073	अस्त
37	छोटी पनौती	धनु	जनवरी 17, 2076	जुलाई 10, 2076	
38	छोटी पनौती	धनु	अक्टूबर 12, 2076	जनवरी 14, 2079	
39	छोटी पनौती	मेष	मई 22, 2086	नवम्बर 09, 2086	
40	छोटी पनौती	मेष	फरवरी 08, 2087	जुलाई 17, 2088	
41	छोटी पनौती	मेष	अक्टूबर 31, 2088	अप्रैल 05, 2089	
42	साढे साती	सिंह	अगस्त 19, 2095	अक्टूबर 11, 2097	उदय
43	साढे साती	कन्या	अक्टूबर 12, 2097	मई 02, 2098	शिखर
44	साढे साती	सिंह	मई 03, 2098	जून 19, 2098	उदय

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

शनि साढे सातीः उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पङ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खङी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पङ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बङे आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कङी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बङा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढे सातीः शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य–संबंधी समस्या, चरित्र–हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कङी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा–तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पङ सकता है। संभव है कि इस काल–खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घङी से निकाल सकता है।

शनि साढे सातीः अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बङी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई–लिखाई पर थोङा नकारात्मक प्रभाव पङ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे–धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल–खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाङी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली–भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोटः उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है और हम पाठकों से यह आलेख पढ़ने का अनुरोध करते हैं। सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

।। कालसर्प दोष ।।

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थित को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर हैं। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतरू मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग–अलग जातकों पर अलग–अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन–कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पडता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन–किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषध्योग का असर पडता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणामः आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

लग्न चक्रः

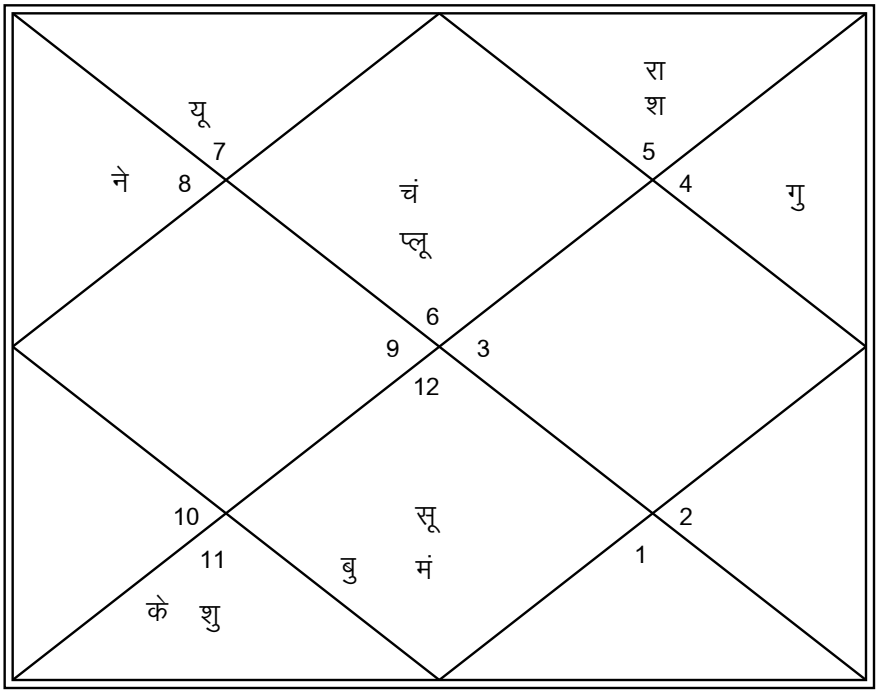

।। विंशोत्तरी महादशा फल ।।

चन्द्र महादशा फल (जन्म से दिसम्बर 3, 1984)

चन्द्र कन्या आपके प्रथम भाव में स्थित है:

इस अवधि में भी मिले जुले फल मिलेंगे। कई अच्छे अवसर मिलेंगे पर आप उनका पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्य के कारण परेशान रहेंगे। मित्र, परिवार और सहयोगियों के साथ बर्ताव में सर्तक रहें। यात्राएं सफलदायक नहीं होंगी इसलिये उनसे बचें। मां बाप का रूग्ण स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा।

मंगल महादशा फल (दिसम्बर 3, 1984 से दिसम्बर 3, 1991)

मंगल मीन आपके सप्तम भाव में स्थित है:

नित्य चर्चा में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। शत्रु छवि बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। सहयोगियों तथा भागीदारों से विवाद होने की संभावना है। पारिवारिक जीवन भी सुखद नहीं रहेगा। अपनी तन्दुरस्ती का ख्याल रखें। यात्राओं से निराशा मिलेगी। साथी के स्वास्थ्य के कारण चिन्तित रहेंगे। इस दौरान आपका जीवन समस्याओं एवम् परेशानियों से आक्रान्त रहेगा।

राहू महादशा फल (दिसम्बर 3, 1991 से दिसम्बर 3, 2009)

राहू सिंह आपके द्वादश भाव में स्थित है:

इस अवधि में निवास स्थान या नौकरी का परिवर्तन संभावित है। भारी व्यय से आप व्यथित रहेंगे। अपने लोगों से ही झगड़े विवाद हो सकते हैं। यात्राएं थकाने वाली और सफलदायक नहीं रहेंगी। पारिवारिक सदस्य आपके प्रति उदासीन रहेंगे। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। दुष्ट मित्रों से सावधान रहें। वह आपकी प्रतिष्ठा पर आंच लायेंगे। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी चिन्ता का एक कारण रहेगा। अभी किसी यात्रा की योजना न बनाएं।

गुरू महादशा फल (दिसम्बर 3, 2009 से दिसम्बर 3, 2025)

गुरू कर्क आपके एकादश भाव में स्थित है:

इस अवधि मे आप काफी उत्साह सुख पूर्ण होंगे। यह समय बेहद अच्छा बीतेगा। विदेशियों या सुदूर स्थलों पर रहने वाले लोगों से आपके संबधित सौमनस्यपूर्ण रहेंगे। नये उद्यमों के साथ आपके सम्बंद्ध रहेंगे। भाई बहन भी इस अवधि में खुशहाल रहेंगे। यदि आप किसी प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में भाग ले रहें हैं तो अवश्य सफल होंगे। इस अवधि के दौरान आप समाधि इत्यादि में दिलचस्पी रखेंगे। आपकी स्पष्ट रूप से वृती दार्शनिक रहेगी।

शनि महादशा फल (दिसम्बर 3, 2025 से दिसम्बर 3, 2044)

शनि सिंह आपके द्वादश भाव में स्थित है:

इस अवधि में जीवन शक्ति में कमी होने के कारण आप बेहद अशक्त महसूस करेंगे। फालतू के कामों में आप अपनी घ र्जा बर्बाद करेंगे। धन हानि होगी। परिवारजनों की बीमारी आपकी मानसिक शांति भंग कर देगी। व्यय करने की प्रवृति बढ़ेगी। अवांछित स्थान पर आपको निवास करना पड़ सकता है। लेकिन यह इद्रयातीत अनुभव प्राप्त करने के लिये बुरा समय नहीं है। धार्मिक क्रियाकलापों में कुछ समय बिताने की सलाह दी जाती है। सांसारिक मामलों के लिहाज सेयह श्रेष्ठ समय नहीं है।

।। विंशोत्तरी महादशा फल ।।

बुध महादशा फल (दिसम्बर 3, 2044 से दिसम्बर 3, 2061)

बुध मीन आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि एवम् सम्मान में इजाफा होगा। विद्वानों के साथ रहने का मौका आयेगा। आपका व्यापार या व्यवसाय बढैगा और चमकेगा। स्त्री वर्ग से आपके क्षेत्र में सहायता मिलेगी। सुखद यात्रा की भी संभावना है। लाभप्रद सौदा करेंगे और आपके भागीदार व सहयोगी आपको अपना बेहतर सहयोग देंगे। किसी प्रतिस्पर्धा में भी सफल रहना निश्चित है।

केतु महादशा फल (दिसम्बर 3, 2061 से दिसम्बर 3, 2068)

केतु कुंभ आपके षष्ट भाव में स्थित है:

व्यापार धन्धै में इस अवधि में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अगर नौकरी पेशा हैं तो नौकरी की हालतों में सुधार होगा। व्यापार के विस्तृत होने की संभावना है। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान हर क्षेत्र से आपको सम्मान मिलेगा। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। दुश्मनों की आपका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। अचानक यात्रा सौभाग्य वृद्धि करेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे प्रयास कर सौभाग्यकाल को पूरी तरह भुनाने के लिये यह श्रेयस्कर समय है।

शुक्र महादशा फल (दिसम्बर 3, 2068 से दिसम्बर 3, 2088)

शुक्र कुंभ आपके षष्ट भाव में स्थित है:

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

सूर्य महादशा फल (दिसम्बर 3, 2088 से दिसम्बर 3, 2094)

सूर्य मीन आपके सप्तम भाव में स्थित है:

यह एक कठिन काल सिद्ध होगा। कड़ी मेहनत का अच्छा फल नहीं मिलेगा। व्यवसायिक या व्यापार के साथी नुकसान करेंगे और आपके लिये समस्यायें पैदा कर देंगे। घरेलु झंझटों में अपने मिजाज पर काबू रखें अन्यथा अप्रीतिकर स्थितियां झेलनी पड़ सकतीं हैं। आप भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त और बीमार रह सकते हैं।

।। अंतर्दशा फल ।।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुंडली में उपस्थित ग्रह अनेक रूपों में प्रभाव डालते हैं। कुंडली में बनने वाले अच्छे अथवा बुरे योगों का फल विभिन्न ग्रहों की अवधि में प्राप्त होता है। इसी कारण वैदिक ज्योतिष में ग्रहों को दशा समय के विभिन्न गणनाओं के आधार पर एक सीमा में बांधा गया है। यहाँ विंशोत्तरी दशा पद्धति के आधार पर गणना की गई है। जन्म के समय चंद्रमा द्वारा अधिष्ठित नक्षत्र के स्वामी की दशा जन्म के समय प्राप्त होती है और अन्य ग्रहों की दशाएँ उसके आगे अपना प्रभाव छोड़ती जाती है। प्रत्येक ग्रह की महादशा में सभी ग्रहों की अंतर्दशाएँ (भुक्ति) आती हैं। हालाँकि पूर्ण प्रभाव का अनुभव जन्म कुंडली के साथ–साथ दशा तथा गोचर पर निर्भर करता है जिसके लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है जो कि एक विद्वान, दैवज्ञ (ज्योतिषी) द्वारा ही संभव है। आपकी कुंडली में विभिन्न दशाओं की दशावधि निम्नलिखित है:

बृहस्पति महादशा

बृहस्पति की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशा का फल

केतु अंतर्दशा(15/10/2016-21/ 9/2017)

बृहस्पति की महादशा में केतु की अंतर्दशा लगभग 11 महीने 6 दिन की होगी। बृहस्पति और केतु परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। क्योंकि बृहस्पति शुभ ग्रह है जबकि केतु क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको मिश्रित परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस अवधि में आप स्वयं को धार्मिक कार्यों में व्यस्त रखेंगे और तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए अधिक उत्साहित रहेंगे। कई माध्यमों से आपको लाभ प्राप्त होगा और आपकी आथकि स्थिति मजबूत होगी। गुरु, शिक्षक, परिवार के बड़े सदस्य और कार्य स्थल पर अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं।

इसके अलावा शस्त्र और क्रोध को लेकर सावधान रहें। कार्य स्थल पर सेवक या अधीनस्थ कर्मचारियों से आपके संबंध बेहतर रहने की संभावना कम है, हो सकता है कि आपका उनसे विवाद जाए इसलिए अपने व्यवहार में संयम बरतें। मानसिक तनाव अधिक होने से आपकी निर्णयन क्षमता प्रभावित होगी।

शुक्र अंतर्दशा(21/ 9/2017-21/ 5/2020)

बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष और 8 माह की होगी। बृहस्पति और शुक्र दोनों ही शुभ ग्रह हैं लेकिन बृहस्पति शुक्र को अपना शत्रु मानता है जबकि शुक्र बृहस्पति के प्रति सामान्य भाव रखता है। इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको मिश्रित परिणाम की प्रापति होगी।

इस अवधि में आप भौतिक सुख–सुविधाओं का आनंद लेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होने के साथ–साथ लाभ की प्रापति होगी। कार्य स्थल पर पदोन्नति और वेतन बढ़ोतरी की संभावना है। आप कोई नया वाहन खरीद सकते हैं साथ ही सरकारी पक्ष से लाभ की संभावना है। वहीं दूसरी ओर स्त्री/पुरुष से मतभेद हो सकते हैं। दूसरों के प्रति आपके मन में ईर्ष्या की भावना हो सकती है। आपके अंदर दिखावा करने की आदत बढ़ेगी।

इसके अलावा आपका अपने मित्रों के साथ अलगाव हो सकता है। आप वायु विकार और खुजली से परेशान रह सकते हैं। गलत कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ सकता है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी और लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। कुल मिलाकर इस दशा अवधि में आपको आनंद की प्रापति भी होगी और कुछ मतभेद भी हो सकते हैं।

सूर्य अंतर्दशा(21/ 5/2020-9/ 3/2021)

बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लगभग 9 माह और 18 दिन की होगी। बृहस्पति व सूर्य दोनों मित्र ग्रह हैं और परस्पर एक–दूसरे से अच्छे संबंध रखते हैं। सूर्य नवग्रहों का राजा है और बृहस्पति उसका मंत्री है, इसलिए इस दशा की अवधि में आपको बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

अगर आप विवाहित हैं तो इस अवधि में बच्चे के जन्म से आपको प्रसन्नता होगी। आर्थिक लाभ होगा और आय में वृद्धि होगी। सामाजिक और व्यवसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य स्थल पर आपको प्रशासनिक अधिकार या पदोन्नति मिलने की संभावना है। आप विरोधियों पर इस कदर हावी रहेंगे कि वे आपका सामना करने की हिम्मत नहीं जुटा पाएंगे। आप स्वयं को अंदर से प्रसन्न और प्रफुललित महसूस करेंगे साथ ही आपके चारों ओर खुशी का वातावरण रहेगा।

इसके अलावा आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और यदि कोई पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो उसमें सुधार देखने को मिलेगा। सरकार या उच्च अधिकारी आपके पक्ष में खड़े रहेंगे। आपको इनके माध्यम से सम्मान की प्रापति भी हो सकती है। इस अवधि में आपको किसी कार्य के लिए प्रशंसा भी मिल सकती है।

चंद्र अंतर्दशा(9/ 3/2021-9/ 7/2022)

बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष 4 माह की होगी। बृहस्पति चंद्रमा को अपना मित्र मानता है लेकिन चंद्रमा बृहस्पति से सामान्य भाव रखता है। दोनों शुभ ग्रह माने जाते हैं और इनके संयोग से शुभ फल की प्रापति होती है।

इस अवधि में आपको लाभ की प्रापति होगी, विशेषकर सरकारी संस्थाओं से। यदि आप सरकारी सेवा में कार्यरत हैं तो इस दशा के दौरान आपको कई शुभ फल की प्रापति होगी। महिलाओं की मदद से आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे इसलिए महिलाओं से अच्छे संबंध बनाकर चलें। धन लाभ होने के साथ–साथ आपके अंदर ज्ञान की वृद्धि होगी और यह समय आपके जीवन का सबसे प्रगतिशील काल होगा।

अगर आप अविवाहित हैं तो इस समय अवधि में विवाह के बंधन में बंध सकते हैं। आप अपनी योजनाओं को लागू करने में सक्षम होंगे और उसकी वजह से आपका उत्थान होगा। इसके फलस्वरुप आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा।

मंगल अंतर्दशा(9/ 7/2022-15/ 6/2023)

बृहस्पति की महादशा में मंगल की अंतर्दशा 11 माह 6 दिन की होगी। बृहस्पति और मंगल दोनों मित्र ग्रह हैं और एक–दूसरे के साथ अच्छे संबंध रखते हैं। इस दशा की समय अवधि में आपको कई अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। मंगल एक क्रूर ग्रह है जबकि बृहस्पति एक शुभ ग्रह है इसलिए कुछ धीमे परिणाम भी मिल सकते हैं हालांकि कुल मिलाकर बृहस्पति और मंगल के प्रभाव से आपको मिश्रित फल की प्रापति होगी।

इस अवधि में आप विरोधी और प्रतिद्वंदियों पर विजय पाने में सफल रहेंगे। उन लोगों में आपका सामना करने की हिम्मत नहीं होगी। आपके अच्छे कामों से समाज में आपको प्रसिद्धि और पहचान मिलेगी, लोग आपके अच्छे कार्यों से प्रभावित होंगे।

इसके अलावा स्वास्थ्य थोड़ा कमजोर रह सकता है। आप बुखार और सिरदर्द से परेशान रह सकते हैं। यदि मंगल शुभ फल नहीं देता है तो आपके अंदर ऊर्जा की कमी बनी रहेगी। वहीं दूसरी ओर कानून से जुड़े मामलों में आपको सफलता मिल सकती है और सरकारी कार्यों से लाभ प्राप्त हो सकता है।

राहु अंतर्दशा(15/ 6/2023-9/11/2025)

बृहस्पति की महादशा में राहु की अंतर्दशा करीब 2 वर्ष, 4 माह और 24 दिन की होगी। बृहस्पति और राहु परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। बृहस्पति एक शुभ ग्रह है जबकि राहु क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा में आपको मंद परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में पारिवारिक विवाद की संभावना है, साथ ही मानसिक बेचौनी बढ़ेगी। इस समय अवधि में आपकी निर्णयन क्षमता भी प्रभावित होगी। विरोधी आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। सरकारी पक्ष से लाभ नहीं मिलेगा। कानूनी विवाद से बचने की कोशिश करें।

इसके अलावा गलतफहमी की वजह से आपके रिश्तों में दरार आ सकती है इसलिए बेवजह की बातों पर ध्यान नहीं दें।

शनि महादशा

शनि की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशा का फल

शनि अंतर्दशा(9/11/2025-12/11/2028)

शनि की महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष और 3 दिन की होगी। शनि देव को परम दण्डाधिकारी कहा गया है। वे मनुष्य को उसके अच्छे और बुरे कर्म का फल देते हैं। शनि स्वभाव से न्याय और अनुशासन प्रिय है। शनि अनुशासन, बुढ़ापा, जिम्मेदारी, दीर्घायु, सेवक, सहयोगी, अलगाव, आध्यात्मिकता और गहराई आदि का कारक होता है। शनि वायु तत्व का ग्रह है।

इस अवधि में परिजन या प्रियजन से विवाद हो सकता है। पारिवारिक जीवन से अलगाव भी हो सकता है। स्वास्थ्य कमजोर रहने की संभावना है। स्वभाव में अहंकार और ईर्ष्या की भावना बढ़ सकती है। इस दौरान मन में निराशा का भाव भी रह सकता है, प्रियजनों से सहयोग नहीं मिलेगा। साथ ही सरकारी विभाग या उच्च अधिकारी आपके पक्ष में नहीं रहेंगे। छोटे–मोटे विवाद और बेचौनी आपके लिए कष्टकारी हो सकती है। सांसारिक जीवन से मोहभंग हो सकता है। आशा के अनुरूप परिणाम नहीं मिलेंगे। इस समय अवधि में आप एकांत में रहकर चंतन–मनन करना अधिक पसंद करेंगे। कार्य क्षेत्र में आपको अत्याधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

बुध अंतर्दशा(12/11/2028-21/ 7/2031)

शनि की महादशा में बुध की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष, 8 माह और 9 दिन की होगी। शनि और बुध परस्पर अच्छे संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा व आपको प्रसिद्धि मिलेगी। आपको कई प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ेगा। आपके संयमित व्यवहार से लोग प्रभावित होंगे। व्यवसाय में लाभ और कृषि भूमि खरीदने की संभावना बन रही है। इसके अलावा आप कोई नया व्यवसाय भी शुरू कर सकते हैं।

इसके अलावा यदि विवाहित हैं तो जीवन साथी और बच्चों की ओर से सुख मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपको समाज में नई पहचान मिलेगी। विद्वान और बुद्धिजीवी व्यक्ति आपकी प्रशंसा करेंगे और उनके माध्यम से आपको लाभ प्राप्त होगा। शरीर में कफ संबंधी विकार से परेशानी हो सकती है।

केतु अंतर्दशा(21/ 7/2031-30/ 8/2032)

शनि की महादशा में केतु की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष 1 माह और 9 दिन की होगी। शनि और केतु क्रूर ग्रह हैं हालांकि दोनों ही परस्पर अच्छा भाव नहीं रखते हैं इसलिए इस दशा की अवधि में आपको मंद या अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

इस अवधि में बुरे लोगों के साथ आपका विवाद हो सकता है। आपका अनुभव दुखद रह सकता है। इस वजह से मानसिक तनाव और अस्थिरता बढ़ेगी। आध्यातमिक क्रियाकलापों के लिए यह समय बहुत अच्छा होगा। इस अवधि में धर्म और अध्यात्म को लेकर आपके मन में एकाग्रता बढ़ेगी। इस दशा अवधि में प्रियजन या प्रियजन से अलगाव होने की संभावना है।

इसके अलावा आपके स्वास्थ्य में गिरावट देखने को मिल सकती है। आप वात और पित्त संबंधित विकारों से परेशान रह सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं तो इस समय अवधि में जीवन साथी या बच्चों से अलग हो सकते हैं या आप किसी महत्वपूर्ण कार्य के चलते उनसे दूर जा सकते हैं।

शुक्र अंतर्दशा(30/ 8/2032-30/10/2035)

शनि की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा लगभग 3 वर्ष 2 माह की होगी। शनि और शुक्र परस्पर मित्रता का भाव रखते हैं।

शनि स्वभाव से क्रूर ग्रह है जबकि शुक्र शुभ ग्रह है इसलिए इस दशा अवधि में शनि और शुक्र के संयोग से आपको मिश्रित व अलग तरह के परिणामों की प्रापति होगी।

इस अवधि में आप जीवन के बेहतर क्षणों का आनंद लेंगे। जीवन साथी या बच्चों से सुख मिलेगा। यदि अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। यदि विवाहित हैं और संतान की इच्छा रखते हैं तो इस अवधि में आपको संतान की प्रापति हो सकती है। कृषि कार्य से लाभ की संभावना है। यदि आप राजनीति में सक्रिय हैं तो आपको भारी जन समर्थन मिलने की संभावना है।

इसके अलावा आपके प्रति बच्चों का लगाव व स्नेह और बढ़ेगा। कार्य स्थल पर आपको कोई उच्च पद की प्रापति हो सकती है या आप किसी संगठन के मुखिया बन सकते हैं। भाग्य का साथ मिलेगा और प्रसिद्धि मिलेगी। आप अपने विरोधियों पर हावी रहेंगे।

सूर्य अंतर्दशा(30/10/2035-12/10/2036)
शनि की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लगभग 11 माह और 12 दिन की होगी। वैदिक ज्योतिष के अनुसार शनि देव सूर्य देव के पुत्र हैं लेकिन दोनों पिता–पुत्र परस्पर शत्रुता का भाव रखते हैं। इसलिए इस दशा अवधि में आपको मंद परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में आपके जीवन साथी और बच्चों को कष्ट उठाना पड़ सकता है, साथ ही भाई–बहन के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। स्वास्थ्य थोड़ा कमजोर रहने की संभावना है, कुछ रोगों से परेशानी हो सकती है। आप पर कोई झूठा आरोप लगा सकता है। इस अवधि में आप कड़ी मेहनत करेंगे लेकिन परिणाम इच्छा के अनुरूप प्राप्त नहीं होंगे।

इसके अलावा धन हानि की संभावना भी बन रही है। विरोधी आपके विरुद्ध आवाज उठा सकते हैं। मानसिक तनाव बढ़ेगा। किसी न्यायिक मामले में आपको सजा मिल सकती है। इस दौरान चोरी की भी संभावना है। आप नेत्र और पेट से जुड़ी बीमारी से पीडति रह सकते हैं। प्राणायाम करना आपके लिए लाभकारी रहेगा। किसी भी तरह के विवाद और न्यायिक मामले में पड़ने से बचें। क्योंकि इससे आपकी छवि को नुकसान पहुंच सकता है। इसके अतिरिक्त अनैतिक कार्यों से दूर रहें।

चंद्र अंतर्दशा(12/10/2036-12/ 5/2038)
शनि की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 माह की होगी। शनि और चंद्रमा परस्पर मित्रता का भाव नहीं रखते हैं। शनि एक क्रूर ग्रह है जबकि चंद्रमा मन का कारक है इसलिए इस दशा की अवधि में विभिन्न कार्यों के परिणाम आपके पक्ष में रहने की संभावना कम है।

इस अवधि में जीवन साथी से मतभेद हो सकते हैं। ऐसी संभावना भी है कि रिश्तों में कड़वाहट बढ़ने से आप जीवन साथी से अलग हो सकते हैं। इसके अलावा आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य भी प्रभावित रह सकता है। पड़ोसी और परिजनों से विरोध बढ़ सकता है। प्रियजन और महिलाओं से विवाद की संभावना है जो आपके पारिवारिक जीवन को चोट पहुंचा सकता है।

इसके अलावा जीवन में खुशियों का अभाव रहेगा। मानसिक तनाव की वजह से बेचौनी बढ़ेगी और आप अलगाव महसूस करेंगे। आप कुछ समय के लिए एकांत में रहना पसंद करेंगे। स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है, वायु विकार से संबंधित परेशानी हो सकती है। एकाग्रता बढ़ाने के लिए प्राणायाम करना लाभकारी रहेगा। इस अवधि में अच्छी बात यह है कि, आपको धन की प्रापति होगी और आय में बढ़ोतरी होगी।

मंगल अंतर्दशा(12/ 5/2038-21/ 6/2039)
शनि की महादशा में मंगल की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष, 1 माह और 9 दिन की होगी। शनि और मंगल क्रूर ग्रह हैं और

दोनों परस्पर शत्रुता का भाव रखते हैं इसलिए इस दशा अवधि में आपके सामने कई चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं, जिनका आपको साहस के साथ सामना करना होगा।

इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। बुखार, चोट या दुर्घटना की संभावना है। इस दौरान वाहन सावधानी से चलाएं और लापरवाही बिल्कुल ना बरतें। बेवजह विवाद करने से बचने की कोशिश करें, क्योंकि यह आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्य क्षेत्र में गिरावट देखने को मिल सकती है या फिर कार्य स्थल पर आप किसी साजिश के शिकार हो सकते हैं। इस अवधि में आप अपने पैतृक निवास पर लौट सकते हैं। चोरी और आग जनित हथियार व उपकरणों से हानि की संभावना है।

इसके अलावा आप अपने परिवार विशेषकर जीवन साथी और बच्चों से दूर रह सकते हैं। भाई और मित्रों के साथ मतभेद भूलकर उनके साथ अच्छे संबंध बनाएं। ऐसा कोई भी कार्य करने से बचें, जिसकी वजह से समाज में आपकी बदनामी हो। अच्छा जीवन जीने के लिए क्रोध पर नियंत्रण रखें और बेवजह परेशान ना हों।

राहु अंतर्दशा(21/ 6/2039-27/ 4/2042)

शनि की महादशा में राहु की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 10 माह और 6 दिन की होगी। शनि और राहु क्रूर ग्रह हैं और दोनों परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। इसलिए इस दशा में आपको सामान्यतः मंद परिणाम मिलेंगे लेकिन कुछ परिस्थितियों में अप्रत्याशित परिणाम मिलने की भी संभावना है।

इस अवधि में कोई पुरानी या पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही बीमारी आपको परेशान कर सकती है, इसलिए अपने स्वास्थ्य पर नियमित रूप से ध्यान दें। आर्थिक नुकसान की भी आशंका है। इस दशा अवधि में चोरी और लूटपाट का भय भी रह सकता है।

इसके अलावा इस अवधि में आप दुर्घटना के शिकार भी हो सकते हैं इसलिए सावधान रहें। आप बुखार, जोड़ों के दर्द और गैस से संबंधित विकारों से परेशान रह सकते हैं। विरोधी आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। मानसिक तनाव बढ़ेगा लेकिन सकारात्मक सोच आपको जीवन में आगे लेकर जाएगी।

बृहस्पति अंतर्दशा(27/ 4/2042-9/11/2044)

शनि की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 6 माह और 12 दिन की होगी। बृहस्पति शुभ ग्रह है जबकि शनि एक क्रूर ग्रह है। दोनों ग्रह परस्पर तटस्थ संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा की अवधि में आपको जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में धार्मिक और आध्यातमिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप तीर्थ यात्रा पर जाएंगे और वहां आपकी मुलाकात धार्मिक और विद्वान लोगों से होगी। आपके मन में सामाजिक सेवा का भाव आएगा और आप दूसरों की मदद करेंगे। पारिवारिक जीवन में सद्भाव बना रहेगा और शारीरिक सुख की प्रापति होगी। आप सफलता को प्राप्त करेंगे। आपके वरिष्ठ सहकर्मी इस सफलता की बड़ी वजह बनेंगे।

इसके अलावा आपके परिवार का आकार बढ़ेगा और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कई लोग आपसे सलाह लेने आएंगे। कार्य स्थल पर प्रोन्नति मिल सकती है। कड़ी मेहनत और अच्छे काम करने से आपको नाम और प्रसिद्धि मिलेगी।

बुध महादशा

बुध की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशा का फल

बुध अंतर्दशा(9/11/2044-6/ 4/2047)

बुध की महादशा में बुध की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 4 माह और 27 दिन की होगी। बुध ग्रह बुद्धि, शिक्षा, भाषा, संचार, लेखन, व्यवसाय और वाणिज्य आदि का कारक है। बुध सामान्यतः एक शुभ ग्रह माना जाता है और इसका शरीर में

वात–पित्त–कफ नियंत्रण रहता है। बुरे ग्रहों का साथ मिलने पर बुध अशुभ फल देता है। बुध के प्रभाव से व्यक्ति एक अच्छा व्यवसायी बनता है, साथ ही विद्वान, शिक्षक और चंतक बनकर समाज में लोकप्रियता व स्नेह पाता है।

इस पूरी अवधि में आप के जीवन पर बुध का प्रभाव रहेगा। इस दौरान आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी और आप कुछ नया सीखने की इच्छा रखेंगे। आपका पूरा ध्यान और समर्पण जीवन से जुड़ी कुछ नई चीजों को सीखने व समझने की दिशा में होगा। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आर्थिक लाभ मिलने की संभावना है। आप मंत्र आदि को सीखना पसंद करेंगे।

इसके अलावा इस अवधि में आपको नए वस्त्रों की प्रापति होगी। आप नया घर खरीदने के बारे में भी सोच सकते हैं। भाई–बहनों से भरपूर सहयोग मिलेगा। वे आर्थिक और वैचारिक रूप से आपकी मदद करेंगे। प्रियजन और समाज के प्रबुद्ध नागरिक के माध्यम से आपको लाभ की प्रापति होगी। बेहतर सोच से आपको सफलता प्राप्त होगी। वाणिज्य और सांखयिकी आदि से जुड़े क्षेत्र में सफलता प्राप्त होने की संभावना है।

केतु अंतर्दशा(6/ 4/2047-3/ 4/2048)

बुध की महादशा में केतु की अंतर्दशा लगभग 11 माह और 27 दिन की होगी। बुध और केतु परस्पर तटस्थ भाव रखते हैं। चूंकि केतु एक क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा की अवधि में आपको मिश्रित परिणाम मिलेंगे। इनमें कुछ अशुभ फल भी प्राप्त हो सकते हैं।

इस अवधि में प्रियजन की वजह से आपको कष्ट उठाना पड़ सकता है। वे लोग जो आपको बेहद प्रिय हैं, आपको जान बूझकर या अनजाने में दुख पहुंचा सकते हैं। जीवन में प्रसन्नता का अभाव रहेगा और आप अलगाव महसूस कर सकते हैं। तनाव बरकरार रहने से आप जीवन के अन्य मामलों पर ध्यान नहीं दे पाएंगे।

इसके अलावा आपके विरोधियों को बल मिलेगा और वे आप पर हावी होने की कोशिश कर सकते हैं। परिसथितियों को अपने पक्ष में करने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। इस दौरान काम में कुछ अड़चनें आ सकती हैं।

शुक्र अंतर्दशा(3/ 4/2048-3/ 2/2051)

बुध की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 10 माह की होगी। बुध और शुक्र परस्पर अच्छे संबंध रखते हैं। शुक्र शुभ ग्रह है वहीं बुध भी सामान्यतः शुभ फल देने वाला ग्रह है इसलिए बुध और शुक्र की इस दशा में शुभ फल की प्रापति होगी। आप जीवन में बड़े परिवर्तन और प्रगति की आशा रख सकते हैं।

इस अवधि में आपकी मुलाकात समाज के प्रबुद्ध और संपन्न लोगों से होगी और इनकी मदद और मार्गदर्शन से आपको लाभ मिलेगा। आप धार्मिक और आध्यातमिक कार्यों में सममिलित होंगे। आप भक्ति भाव से ईश्वर की आराधना करेंगे और अतिथियों का स्वागत करेंगे, साथ ही आप दान–धर्म भी करेंगे। इस अवधि में आप महंगे वस्त्र, गहने और अन्य भौतिक वस्तुओं की खरीददारी कर सकते हैं।

इसके अलावा मित्रों का साथ मिलने से आप बेहद प्रसन्न रहेंगे, विशेषकर महिला/पुरुष मित्रों का साथ मिलने पर ज्यादा खुशी होगी। आप सैर के लिए पिकनिक पर जा सकते हैं, साथ ही फिल्म और होटल में खाना खाने भी जा सकते हैं। इस अवधि में मनोरंजन और कलात्मक कार्य के लिए ज्यादा समय देंगे। इस समय अवधि में आपके जीवन में संपन्नता और प्रसन्नता आएगी।

सूर्य अंतर्दशा(3/ 2/2051-9/12/2051)

बुध की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लगभग 10 माह और 6 दिन की होगी। बुध और सूर्य परस्पर सामान्य संबंध रखते हैं। सूर्य अग्नि तत्व का ग्रह है जबकि बुध एक शांत और कोमल ग्रह है। बुध और सूर्य के साथ होने से बुधादित्य योग बनता है। इसके परिणामस्वरूप जातक को ज्ञान, नाम और प्रसिद्धि मिलती है, इसलिए इस दशा की अवधि में आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में आप नया और कोई अच्छा वाहन खरीद सकते हैं। यदि आप सरकारी सेवा में कार्यरत हैं तो सरकारी विभाग की ओर से आपको वाहन उपलब्ध कराया जा सकता है। आपके जीवन में समृद्धि आएगी और आप भौतिक सुख–साधनों का आनंद प्राप्त करेंगे।

इसके अलावा यदि आप विवाहित हैं तो घर में बच्चे का जन्म हो सकता है। सदाचार और उदारवादी कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ेगा। सरकारी विभाग से आपको सम्मान की प्रापति हो सकती है। कार्य स्थल पर वरिष्ठ अधिकारी आपके पक्ष में रहेंगे और आपके सम्मान में वृद्धि होगी। नेत्र से जुड़ी पीड़ा होने की संभावना है। इसके अलावा आपकी कार्यशैली असंगठित रह सकती है।

चंद्र अंतर्दशा(9/12/2051-9/ 5/2053)

बुध की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष और 5 दिन होगी। बुध और चंद्रमा एक–दूसरे से विरोधाभासी संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा में आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। सामान्यतः ये परिणाम मंद होंगे।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है। आपके शत्रु और विरोधी बढ़ेंगे व उनके बल में वृद्धि होगी, ये लोग आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। सामान्य रूप से आपको सफलता मिलती रहेगी। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें क्योंकि इस अवधि में दुर्घटना की संभावना है।

इसके अलावा कई तरह के विवाद सामने आने से आप मानसिक तनाव में रहेंगे। स्वास्थ्य संबंधी विकार आपकी परेशानी बढ़ा सकते हैं। प्राणायाम करना और मानसिक शांति बनाये रखना आपके लिए अच्छा होगा।

मंगल अंतर्दशा(9/ 5/2053-6/ 5/2054)

बुध की महादशा में मंगल की अंतर्दशा लगभग 11 माह और 27 दिन की होगी। मंगल को एक क्रूर ग्रह के तौर पर जाना जाता है जबकि बुध को शुभ ग्रह माना जाता है। ये दोनों ग्रह परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं इसलिए इस दशा में मिश्रित परिणाम मिलते हैं।

इस अवधि में धार्मिक गतिविधियों में शामिल होने से समाज में आपको पहचान और प्रसिद्धि मिल सकती है। आप अपने विवेक से अपनी ऊर्जा का सही इस्तेमाल करेंगे। सरकार या उच्च अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है।

इसके अलावा इस अवधि में आपका स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है। आप नेत्र पीड़ा और वात संबंधी विकार से परेशान रह सकते हैं। हालांकि चंता की कोई बात नहीं है आप जल्द स्वस्थ होकर जीवन का आनंद लेंगे। खर्च में वृद्धि होने से परेशान बढ़ेगी। जीवन साथी और बच्चों की भाषा आपके प्रति कठोर हो सकती है।

।। गोचर फल (21–8–2017)।।

सूर्य सिंहराशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

आप क्षणिक उन्माद में कोई काम न करें। निर्णय लेने से पहले पूरा सोच विचार करें। गलत निर्णय के कारण आपका नुकसान भी हो सकता है। आप व्यर्थव्यय भी करेंगे। व्यापार से संबंधित कोई बुरी खबर मिल सकती है। भारी हानि होने की संभावना है। स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। मित्रों और रिश्तेदारों से संबंध मधुर रखें अन्यथा आपस में चाव पैदा हो सकता है। सट्टेबाजी से बचें अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है।

चन्द्र कर्कराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

आपके मित्र और सहयोगी आपकी सहायता करेंगे। इस अवधि में आपकी महत्वाकांक्षा और इच्छाओं की पूर्ति होगी। किसी लाभप्रद सौदे से आप सम्बंधित रहेंगे। लम्बी यात्राओं की प्रबल संभावना है। सभी लिहाज से परिणाम बहुत अच्छे रहेंगे।

मंगल कर्कराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

।। गोचर फल (21–8–2017)।।

बुध सिंहराशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

यह अवधि आपको मानसिक चिन्ताएं देगी। विरोधी प्रतिष्ठा पर आंच लाने का प्रयत्न करेंगे। व्यय बढ़ता रहेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण परेशान रहेंगे। हानिकर कार्यों से भी सम्बंधित रह सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौमनस्यपूर्ण नहीं रहेगा। आपका मन अध्यात्म की ओर झुकेगा। समस्याओं परेशानियों का प्रतिरोध करने की कोशिश करें। जोखिम उठाने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें और सब प्रकार की सट्टेबाजी से बचें।

गुरू कन्याराशि में आपके पहले भाव में स्थित है:

आप शुभ एवम श्रेष्ठ कृत्यों से सम्ब्दीत रहेंगे। इस दौरान आप काफी प्रसन्न रहेंगे और परिवार में कोई श्रेष्ठ संस्कार भी सम्पन्न होगा। आपकी आमदनी बढैगी तथा घ ध्रुचे सरकारी अफसरों से आपके संबंध भी सुधरेंगे। अपनी योग्यता के कारण आप विपरीत परिस्थितियों का भी भली प्रकार सामना कर लेंगे। पारिवारिक सुख सुनिश्चित रहेगा। दर्शन एवम् तत्व मीमांसा में आपकी विशेष रूचि रहेगी। इस अवधि मे दिमाग पूरी तरह चैतन्य और सानकूल रहेगा।

शुक्र कर्कराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपको हर प्रयास में सफलता मिलेगी। मित्र और सहयोगी आपको पूरा सहयोग देंगे। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं और इच्छाओं की सम्पूर्ति होगी। भाई बहिन भी अपने अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य करेंगे। यात्राओं से लाभ होगा। उच्च कोटि का पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मिलने वाले मित्रों और सहयोगियों से अच्छी पटेगी। खर्चे अधिक होंगे लेकिन आमदनी से पूर पड़ती रहेगी।

।। गोचर फल (21–8–2017)।।

शनि वृश्चिकराशि में आपके तीसरे भाव में स्थित है:

हर काम को सलीके से करने की आपकी बलवती इच्छा रहेगी। आपका विश्वास बहुत बढ़ा चढ़ा रहेगा। नौकरी व्यापार या व्यवसाय में उत्साहवर्धक परिणाम निश्चित रूप से सामने आएंगें। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। आमदनी साधारण रूप से अच्छी रहेगी। पारिवारिक वातावरण बड़ा सौहार्दपूर्ण रहेगा। संचार माध्यमों से कोई अच्छी खबर मिल सकती है।

राहू कर्कराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आमदनी में इजाफा स्पष्टरूप से प्रतिक्षित है। नये उद्यमों से सम्बद्ध रहेंगे। मित्र और सहयोगी पूरी मदद करेंगे। लम्बी यात्राओं से लाभ होगा। विदेशियों से अधिक सम्पर्क बनेंगे। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। प्रणय और प्रेम संबंधों के लिये यह काल वरदान सदृश है। आप संघर्ष में वीरोचित भावना से जूझते रहेंगे और शत्रुओं का पराभव कर देंगे। वैसे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सिर्फ कर्ण रोग से परेशान रह सकते हैं।

केतु मकरराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप बहुत से काम एक साथ करने का प्रयत्न करेंगे और ठीक से कुछ भी नहीं कर पायेंगे। जल्दबाजी से बिल्कुल काम नहीं बनेगा। आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि इस अवधि में परिवार के किसी सदस्य की बीमार पड़ने की संभावना है। कुल मिलाकर पारिवारिक माहौल तनावग्रस्त ही रहेगा। जोखिम उठाने की प्रवृति को लगाम दें। शत्रु आपकी साख बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। इस ओर पूरी तरह शर्क्तिक रहें। जहां तक संभव हो। यात्रा से बचें। पेट के रोग से व्यथित रहेंगे।

।। लाल किताब गणना ।।

नाम	Punit Pandey			**सूर्योदय**	05. 59. 45	**दशा भोग्य**	SAT 2 Y 9 M 4 D
लिंग	Male	**रेखांश**	77.25.E	**तिथि**	पूर्णिमा	**सूर्यास्त**	18. 43. 24
दिनांक	11.4.1979	**अक्षांश**	28.40.N	**योग**	व्याघात	**करण**	विष्टि
दिन	बुधवार	**जन्म स्थान**	Agra	**लग्न**	कन्या	**लग्न स्वामी**	बुध
समय	18.30.0	**अयनांश**	023-34-01	**राशि**	कन्या	**राशि स्वामी**	बुध
साम्पातिक काल	07.26.14	**अयनांश नाम**	लाहिरी	**नक्षत्र**	हस्त–2	**नक्षत्र स्वामी**	चंद्र

लग्न चक्र

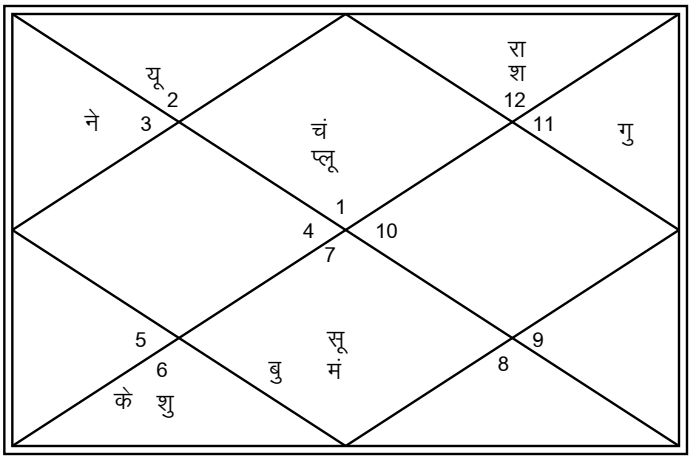

लाल किताब ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	नेक / मंदा
सूर्य	तुला	———	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
चंद्र	मेष	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
मंगल	तुला	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
बुध	तुला	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
गुरू	कुंभ	———	हाँ	हाँ	मंदा / अशुभ
शुक्र	कन्या	———	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
शनि	मीन	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
राहु	मीन	———	नहीं	हाँ	मंदा / अशुभ
केतु	कन्या	———	नहीं	हाँ	मंदा / अशुभ

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/1979
अंत	11/04/1985
राहु	11/04/1981
बुध	11/04/1983
शनि	11/04/1985

राहु 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/1985
अंत	11/04/1991
मंगल	11/04/1987
केतु	11/04/1989
राहु	11/04/1991

केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	11/04/1991
अंत	11/04/1994
शनि	11/04/1992
राहु	11/04/1993
केतु	11/04/1994

गुरू 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/1994
अंत	11/04/2000
केतु	11/04/1996
गुरू	11/04/1998
सूर्य	11/04/2000

सूर्य 2 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2000
अंत	11/04/2002
सूर्य	11/12/2000
चन्द्र	11/08/2001
मंगल	11/04/2002

चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2002
अंत	11/04/2003
गुरू	11/08/2002
सूर्य	11/12/2002
चन्द्र	11/04/2003

शुक्र 3 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2003
अंत	11/04/2006
मंगल	11/04/2004
सूर्य	11/04/2005
चन्द्र	11/04/2006

मंगल 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2006
अंत	11/04/2012
मंगल	11/04/2008
शनि	11/04/2010
शुक्र	11/04/2012

बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2012
अंत	11/04/2014
चन्द्र	11/12/2012
मंगल	11/08/2013
गुरू	11/04/2014

शनि 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2014
अंत	11/04/2020
राहु	11/04/2016
बुध	11/04/2018
शनि	11/04/2020

राहु 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2020
अंत	11/04/2026
मंगल	11/04/2022
केतु	11/04/2024
राहु	11/04/2026

केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2026
अंत	11/04/2029
शनि	11/04/2027
राहु	11/04/2028
केतु	11/04/2029

गुरू 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2029
अंत	11/04/2035
केतु	11/04/2031
गुरू	11/04/2033
सूर्य	11/04/2035

सूर्य 2 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2035
अंत	11/04/2037
सूर्य	11/12/2035
चन्द्र	11/08/2036
मंगल	11/04/2037

चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2037
अंत	11/04/2038
गुरू	11/08/2037
सूर्य	11/12/2037
चन्द्र	11/04/2038

शुक्र 3 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2038
अंत	11/04/2041
मंगल	11/04/2039
सूर्य	11/04/2040
चन्द्र	11/04/2041

मंगल 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2041
अंत	11/04/2047
मंगल	11/04/2043
शनि	11/04/2045
शुक्र	11/04/2047

बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2047
अंत	11/04/2049
चन्द्र	11/12/2047
मंगल	11/08/2048
गुरू	11/04/2049

शनि 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2049
अंत	11/04/2055
राहु	11/04/2051
बुध	11/04/2053
शनि	11/04/2055

राहु 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2055
अंत	11/04/2061
मंगल	11/04/2057
केतु	11/04/2059
राहु	11/04/2061

केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2061
अंत	11/04/2064
शनि	11/04/2062
राहु	11/04/2063
केतु	11/04/2064

गुरू 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2064
अंत	11/04/2070
केतु	11/04/2066
गुरू	11/04/2068
सूर्य	11/04/2070

सूर्य 2 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2070
अंत	11/04/2072
सूर्य	11/12/2070
चन्द्र	11/08/2071
मंगल	11/04/2072

चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2072
अंत	11/04/2073
गुरू	11/08/2072
सूर्य	11/12/2072
चन्द्र	11/04/2073

शुक्र 3 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2073
अंत	11/04/2076
मंगल	11/04/2074
सूर्य	11/04/2075
चन्द्र	11/04/2076

मंगल 6 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2076
अंत	11/04/2082
मंगल	11/04/2078
शनि	11/04/2080
शुक्र	11/04/2082

बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	11/04/2082
अंत	11/04/2084
चन्द्र	11/12/2082
मंगल	11/08/2083
गुरू	11/04/2084

।। लालकिताब फलकथन ।।

सूर्य आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवें भाव में स्थित सूर्य यदि शुभ है और यदि बृहस्पति, मंगल अथवा चंद्रमा दूसरे भाव में है तो जातक सरकार में मंत्री जैसा पद प्राप्त करता है। बुध उच्च का हो या पांचवें भाव में हो अथवा सातवां भाव मंगल से देखा जा रहा हो तो जातक के पास आमदनी का अंतहीन श्रोत होता है। यदि सातवें भाव में स्थित सूर्य हानिकारक हो और बृहस्पति, शुक्र या कोई और अशुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो तथा बुध किसी भी भाव में नीच का हो तो जातक की मौत किसी मुठभेड में परिवार के कई सदस्यों के साथ होती है। जातक को सरकार की ओर से परेशानियां तथा तपेदित और अस्थमा जैसी बीमारियां हो सकती हैं। आगजनी, सांवलापन और अन्य पारिवारिक कष्ट से आई झुंझलाहट जातक को वैरागी बनने या आत्महत्या करने को मजबूर कर सकती है। सातवें भाव हानिकारक सूर्य हो और मंगल या शनि दूसरे या बारहवें भाव में स्थित हों तथा चंद्रमा पहले भाव में हो तो जातक को कुष्ट या ल्यूकोडर्मा जैसे चर्मरोग हो सकते हैं।

उपाय

1) नमक सेवन की मात्रा को कम करें।
2) किसी भी काम को शु करने से पहले मीठा खाएं और उसके बाद पानी जर पियें।
3) खाना खाने से पहले रोटी का एक टुकघ रसोई घर की आग में डालें।
4) काली अथवा बिना सींग वाली गाय को पालें और उसकी सेवा करें लेकिन ध्यान रहे गाय सफेद नहीं होनी चाहिए।

।। लालकिताब फलकथन ।।

चन्द्र आपके पहले भाव में स्थित है:

सामान्य तौर पर कुण्डली का पहला घर मंगल और सूर्य के प्रभाव के अंतर्गत आता है। जब चंद्रमा यहां स्थित हो तो यह भाव मंगल, सूर्य और चंद्रमा के संयुक्त प्रभाव में होगा। ये तीनों आपस में मित्र हैं और तीनो यहां की स्थिति के अनुसार परिणाम देंगे। सूर्य और मंगल इस घर में स्थित चंद्रमा को पूर्ण सहयोग देंगे। ऐसा जातक रहमदिल होगा और उसके भीतर उसकी मां के सभी लक्षण और गुण मौजूद होंगे। वह या तो भाइयों में बडा होगा या फिर उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जाता होगा। जातक पर उसकी मां का आशिर्वाद हमेशा रहता है साथ ही वह अपनी मां को प्रसन्न रखता है ऐसा करने से वह उन्नति करता है और उसे हर प्रकार से समृद्धि मिलती है। बुध से सम्बंधित चीजें और रिश्तेदार जैसे साली और हरा रंग आदि जो चंद्रमा के लिए हानिकार है, जातक के लिए भी प्रतिकूल प्रभाव साबित होगें इसलिए बेहतर है उन लोगों से दूर रहें। दूध से खोया बनाना या लाभ के लिए दूध बेचना आदि कृत्य पहले भाव में स्थित चंद्रमा को कमजोर करते हैं इसका मतलब यदि जातक स्वयं भी इस प्रकार के कामों सें संलग्न होता है तो जातक का जीवन और सम्पत्ति नष्ट होने लगती है। ऐसे में जातक को दूध और पानी मुफ्त में बांटना चाहिए इससे आयु बढती और चारो ओर से समृद्धि आती है। ऐसा करने से जातक को 90 साल की दीर्घायु मिलती है और उसे सरकार से सम्मान और प्रसिद्धि मिलती है।

उपाय

1) 24 से 27 वर्ष की आयु के मध्य शादी नहीं करनी चाहिए, या तो 24 साल के पहले अथवा 27 साल के बाद ही शादी करनी चाहिए।
2) 24 से 27 वर्ष की आयु के मध्य अपनी कमाई से घर का निर्माण नहीं करना चाहिए।
3) हरे रंग और पत्नी की बहन अर्थात शाली से दूर रहना चाहिए।
4) घर में टोटी के साथ एक चांदी के बर्तन या केतली न रखें।
5) यथा सम्भव बरगद की जघ में पानी डालें।
6) चारपाई के चारों पायों में तांबें की कीलें ठोके।
7) अपने बच्चों के कल्याण के लिए जब भी एक नदी पार करें, हमेशा उसमें एक सिक्का डालें।
8) हमेशा अपने घर में चांदी की एक थाली रखें।
9) पानी या दूध पीने के लिए हमेशा चांदी के बर्तन का प्रयोग करें, कांच के बने बर्तन के उपयोग से बचें।

मंगल आपके सातवें भाव में स्थित है:

यदि घर में शुक्र और बुध, के प्रभाव के अंतर्गत आता है जो कि आपस में मिलकर सूर्य का फल देते हैं। यदि मंगल सातवें भाव में है तो सातवां भाव मंगल और सूर्य के प्रभाव के अंतरगत आएगा जो यह सुनिश्चित करता की जातक की महत्वाकांक्षा पूरी हो जाएगी। धन संपत्ति, और परिवार में वृद्धि होगी। लेकिन अगर बुध भी मंगल ग्रह के साथ स्थित है तो बुध से संबंधित बातों और रिश्तों जैसे, बहन, भाभी, नर्सों, नौकरानी, तोता, बकरी आदि प्रतिकूल प्रभावी होंगी अत इनसे दूर रहना बेहतर होगा।

उपाय

1) समृद्धि के लिए घर में चांदी का ठोस टुकघ रखें।
2) हमेशा बेटी, बहन, भाभी और विधवाओं को मिठाई भेंट करें।
3) बार बार एक छोटी सी दीवार बनाएं और गिराएं।

।। लालकिताब फलकथन ।।

बुध आपके सातवें भाव में स्थित है:

पुरुष कुंडली में सातवें घर में स्थित बुध जातक के शुभचिंतकों के लिए शुभ परिणाम देता है। स्त्री जातक की कुण्डली में भी यह अच्छा परिणाम देता है। जातक की कलम में तलवार से ज्यादा ताकत होगी। जातक की शाली हर लिहाघ से सहयोगी सिद्ध होगी। यदि चन्द्रमा पहले भाव में स्थित हो तो विदेश यात्रा लाभकारी रहेगी। तीसरे भाव में स्थित शनि ससुराल वालों को अमीर बनाता है।

उपाय

1) साझेदारी के व्यापार से बचें।
2) सट्टेबाजी से बचें।
3) खराब चरित्र वाली साली से सम्बन्ध न रखें।

गुरू आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

इस घर में बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों बुध, शुक्र और राहु से सम्बंधित चीजों और रिश्तेदारों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। नतीजतन, जातक की पत्नी दुखी रहेगी। इसी तरह, बहनें, बेटियां और बुआ भी दुखी रहेंगी। बुध सही स्थिति में तो भी जातक कर्जदार होता है। जातक तभी आराम से रह पाएगा जब वह पिता, भाइयों, बहनों और मां के साथ साथ एक संयुक्त परिवार में रहे।

उपाय

1) हमेशा अपने शरीर पर सोना पहनें।
2) तांबे का कडा पहनें।
3) पीपल के पेड़ में जल चढाएं।

।। लालकिताब फलकथन ।।

शुक्र आपके छठे भाव में स्थित है:

यह घर बुध और केतू का माना गया है जो एक दूसरे के शत्रु हैं। लेकिन शुक्र दोनों का मित्र है। इस घर में शुक्र नीच का होता है। लेकिन यदि जातक विपरीत लिंगी को प्रसन्न रखता है और सारे और सुविधा उपलब्ध करवाता है तो उसके धन और पैसे में बृद्धि होगी। जातक की पत्नी को पुरुषों के जैसे कपडे नहीं पहनने चाहिए और न ही पुरुषों के जैसे बाल रखने चाहिए अन्यथा गरीबी बढती है। ऐसे जातक को उसी से विवाह करना चाहिए जिसके भाई हों। इसके अलावा, जातक कोई भी पूरा किए बिना काम बीच में नहीं छोडता।

उपाय

1) पत्नी के बालों में सोने की हेयर क्लिप का उपयोग करवाएं।
2) खयाल रखें कि पत्नी नंगे पैर न चले।
3) निजी अंगों को लाल दवा से धोएं।

शनि आपके बारहवें भाव में स्थित है:

शनि इस घर में अच्छा परिणाम देता है। जातक के दुश्मन नहीं होंगे। उसके कई घर होंगे। उसके परिवार और व्यापार में वृद्धि होगी। वह बहुत अमीर हो जाएगा। हालांकि, यदि जातक शराब पिए, मांशाहार करे या अपने घर के अंधेरे कमरे में रोशनी करे तो शनि नीच का हो जाएगा।

उपाय

1) किसी काले कपड़े में बारह बादाम बांधकर उसे किसी लोहे के बर्तन में भरकर किसी अंधेरे कमरे में रखने से अच्छे परिणाम मिलेंगे।

।। लालकिताब फलकथन ।।

राहू आपके बारहवें भाव में स्थित है:

बारहवां घर बृहस्पति से संबंधित होता है। यह शयन सुख का घर होता है। यहां स्थित राहु मानसिक परेशानियां और अनिद्रा देता है। यह बहनों और बेटियों पर अत्यधिक व्यय भी करवाता है। यदि राहु शत्रु ग्रहों के साथ हो तो आप कितनी भी मेहनत कर लें आपके खर्चे आपकी आमदनी से अधिक ही रहेंगे। यह झूठे आरोप भी लगवाता है। जातक आत्महत्या की चरमसीमा तक जा सकता है। जातक मानसिक चिंताओं से घिरा रहता है। झूठ बोलना, दूसरों को धोखा आदि देना राहु को और भी हानिकर बानाता है। किसी भी नए काम की शुरुआत में अशुभ परिणाम मिलते हैं। चोरी, बामारी और झूठे आरोपों के लगने का भय रहता है। यदि यहां राहू के साथ मंगल भी हो तो अच्छे परिणाम मिलते हैं।

उपाय

1) रसोई में बैठ कर ही भोजन करें।

2) रात में अच्छी नींद के लिए तकिये के नीचे सौंफ और खांड रखें।

केतु आपके छठे भाव में स्थित है:

छठवां घर बुध का होता है। यहां केतू दुर्बल माना जाता है। हालांकि यह केतू का पक्का घर होता है। यहां केतू के परिणाम बृकस्पति की प्रकृति पर निर्भर करते हैं। यह संतान के लिए अच्छे परिणाम देता है। जातक एक अच्छा सलाहकार होता है। यदि बृहस्पति शुभ हो तो जातक दीर्घायु होता है। मां खुशहाल होती है और जीवन शांतिपूर्ण होता है। यदि कोई भी दो पुरुष ग्रह जैसे सूर्य, बृहस्पति, मंगल अच्छी स्थित में हों तो केतू शुभ परिणाम देता है।यदि केतु छठे भाव में अशुभ है तो मामा परेशान रहता है। जातक भी बेकार की यात्राओं से परेशान रहता है। लोग बिना कारण के दुश्मन बन जाते हैं। जातक त्वचा रोग से परेशान रहता है। यदि चंद्रमा दूसरे भाव में हो तो मां परेशान होती है और स्वयं जातक की बृद्धा अवस्था परेशानियों में गुजरती है।

उपाय

1) बाएं हाथ की उंगली में सोने की अंगूठी पहनें।

2) दूध में केसर डालकर पियें और कान में सोना पहनें।

3) सोने की सलाई गर्म करके दूध में बुझाएं और इसके बाद उस दूध को पियें इससे मानसिक शांति बढेगी, आयु वृद्धि होगी और यह बेटों के लिए भी अच्छा रहेगा।

4) एक कुत्ता पालें।

।। रत्न विचार ।।

रत्न क्या हैं?

प्राचीन काल से रत्नों का उपयोग आध्यात्मिक क्रियाकलापों और उपचार के लिए किया जाता रहा है। हालाँकि रत्न कठिनाई से मिलते थे और बहुत सुन्दर होते थे, लेकिन उनके बहुमूल्य होने का प्रमुख कारण पहनने वाले को उनसे हासिल होने वाली शक्तियाँ थीं। रत्न शक्तियों के भण्डार की तरह हैं, जिनका असर स्पर्श के माध्यम से शरीर में जाता है। रत्नों का असर धारण करने वाले पर सकारात्मक या नकारात्मक रूप से हो सकता है – यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें किस तरह उपयोग में लाया जाता है। सभी रत्नों में अलग–अलग परिमाण में चुम्बकीय शक्तियाँ होती हैं, जिनमें से कई उपचार के दृष्टिकोण से हमारे लिए बेहद लाभदायक हैं। ये रत्न ऐसे स्पन्दन पैदा करते हैं, जिनका हमारे पूरे अस्तित्व पर बहुत गहरा असर होता है। आइए, देखें कि आपके लिए रत्न–विचार किस प्रकार है।

आपका जीवन रत्न

जीवन–रत्न लग्न के स्वामी का रत्न है। इस रत्न की रहस्यमयी शक्तियों का अनुभव करने के लिए इसे जीवन भर धारण किया जा सकता है। जीवन रत्न धारण करना सारी बाधाएँ मिटा सकता है और जातक को प्रसन्न, सफल व समृद्ध कर सकता है। सामान्यतः इसे व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति के लिए धारण किया जाता है। इसके ब्रह्माण्डीय तरंगें व्यक्ति के सम्पूर्ण अस्तित्व को प्रभावित करती हैं।

सुझाव

रत्न–सुझाव	पन्ना
रत्न की गुणवत्ता	1.5 रत्ती
धारण करने के नियम	स्वर्ण धातु, अनामिका अंगुली में या कनिष्ठिका अंगुली में
रत्न–धारण का मंत्र	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

आपका पुण्य–रत्न

जीवन परिश्रम और भाग्य का बढिया सम्मिश्रण है। अपना पुण्य–रत्न धारण करके भाग्य को अपने हित में कार्य करने दें। व्यक्ति का पुण्य–रत्न वह होता है, जो उस व्यक्ति के सौभाग्य को आकर्षित करके उसके जीवन में सुखद आश्चर्य घोलता रहता है। हमारे अनुसार आपका पुण्य–रत्न है –

सुझाव

रत्न–सुझाव	नीलम
रत्न की गुणवत्ता	2 रत्ती
धारण करने के नियम	स्वर्ण धातु, मध्यमा अंगुली में
रत्न–धारण का मंत्र	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

आपका भाग्य–रत्न

भाग्य–रत्न का निर्धारण नवम भाव के स्वामी के आधार पर किया जाता है। जब आपको वाकई भाग्य की आवश्यकता होती है, यह रत्न उस समय नियति को आपके पक्ष में करता है। व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में यह सकारात्मकता प्रवाहित करता है। आपकी समृद्धि के मार्ग में जो भी बाधाएँ हों, भाग्य–रत्न उन्हें दूर करने का कार्य करता है।

सुझाव

रत्न–सुझाव	हीरा
रत्न की गुणवत्ता	1 रत्ती
धारण करने के नियम	स्वर्ण धातु या चाँदी धातु, मध्यमा अंगुली में
रत्न–धारण का मंत्र	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

आवश्यक जानकारी

रत्न–धारण करते समय कुछ बातों का सदैव ध्यान रखें। केवल असली रत्न ही खरीदें, क्योंकि नकली रत्न धारण करने से उनका कोई प्रभाव नहीं होता है। साथ ही आपको उस वजन का रत्न धारण करना चाहिए, जिसका सुझाव दिया गया हो। इसे प्रायः "रत्ती" के माध्यम से इंगित किया जाता है। आज–कल बाजार नकली रत्नों से भरे पडे हैं। अपने पाठकों की सहायता के लिए एस्ट्रोकैम्प/ऐस्ट्रोसेज आपके लिए असली रत्नों का संग्रह लाया है।

।। शुभ घड़ी ।।

विवाह के लिए शुभ समय

विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। कभी–कभी कुछ कारणों की वजह से विवाह में विलंब आते हैं। वहीं वैवाहिक जीवन में भी कुछ परेशानियां आती हैं। इस संबंध में हमने पूरी कोशिश की है कि आपको जन्म कुंडली के आधार पर सटीक जानकारी दी जाये। नीचे दी गई सारणी में सिलसिलेवार तरीके से उल्लेख किया है कि, आपके विवाह और वैवाहिक जीवन के लिए कौन सा समय सबसे अच्छा होगा? साथ ही इन मामलों में आपको कब–कब परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, इसकी जानकारी भी आप ले सकते हैं

18 से 65 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
राहु	केतु	9/ 5/2002	27/ 5/2003	शुभ
राहु	शुक्र	27/ 5/2003	27/ 5/2006	शुभ
राहु	चंद्र	21/ 4/2007	21/10/2008	शुभ
राहु	मंगल	21/10/2008	9/11/2009	शुभ
बृहस्पति	बृहस्पति	9/11/2009	27/12/2011	शुभ
बृहस्पति	शनि	27/12/2011	9/ 7/2014	**उत्तम**
बृहस्पति	केतु	15/10/2016	21/ 9/2017	शुभ
बृहस्पति	शुक्र	21/ 9/2017	21/ 5/2020	शुभ
बृहस्पति	चंद्र	9/ 3/2021	9/ 7/2022	शुभ
बृहस्पति	मंगल	9/ 7/2022	15/ 6/2023	शुभ
बृहस्पति	राहु	15/ 6/2023	9/11/2025	**सर्वोत्तम**

।। शुभ घड़ी ।।

करियर के लिए शुभ समय

करियर को लेकर हर व्यक्ति की एक महत्वाकांक्षा होती है।

जीवन में हर कोई आगे बढ़ना चाहता है और कुछ करना चाहता है, लेकिन जीवन में कभी–कभी कुछ ऐसे मोड़ आते हैं जब करियर के क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर कभी ऐसा संयोग भी बनता है जब हमें करियर के क्षेत्र में तरक्की भी मिलती है। हमारा प्रयास है कि आपकी जन्म कुंडली के आधार पर आपकी करियर लाइफ का सटीक विश्लेषण करें। इस टेबल के जरिए आप जान सकते हैं आपके करियर का बेहतर और कठिन समय

18 से 65 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
राहु	बुध	21/10/1999	9/ 5/2002	शुभ
राहु	शुक्र	27/ 5/2003	27/ 5/2006	शुभ
राहु	सूर्य	27/ 5/2006	21/ 4/2007	शुभ
राहु	चंद्र	21/ 4/2007	21/10/2008	शुभ
राहु	मंगल	21/10/2008	9/11/2009	**उत्तम**
बृहस्पति	बृहस्पति	9/11/2009	27/12/2011	**सर्वोत्तम**
बृहस्पति	शनि	27/12/2011	9/ 7/2014	**उत्तम**
बृहस्पति	बुध	9/ 7/2014	15/10/2016	शुभ
बृहस्पति	सूर्य	21/ 5/2020	9/ 3/2021	शुभ
बृहस्पति	चंद्र	9/ 3/2021	9/ 7/2022	शुभ
बृहस्पति	मंगल	9/ 7/2022	15/ 6/2023	शुभ
बृहस्पति	राहु	15/ 6/2023	9/11/2025	शुभ
शनि	शनि	9/11/2025	12/11/2028	**उत्तम**
शनि	बुध	12/11/2028	21/ 7/2031	शुभ
शनि	सूर्य	30/10/2035	12/10/2036	शुभ
शनि	चंद्र	12/10/2036	12/ 5/2038	शुभ
शनि	मंगल	12/ 5/2038	21/ 6/2039	शुभ

शनि	राहु	21/ 6/2039	27/ 4/2042	शुभ
शनि	बृहस्पति	27/ 4/2042	9/11/2044	**सर्वोत्तम**
बुध	बुध	9/11/2044	6/ 4/2047	शुभ

।। शुभ घड़ी ।।

व्यापार के लिए शुभ अवधि

व्यापार में वृद्धि और जीवन में समृद्धि हर व्यक्ति की इच्छा होती है। जहां व्यापार में सफलता हमें उन्नति के शिखर पर लेकर जाती है, वहीं दूसरी ओर कई बार व्यापार में मिलने वाली असफलता से आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है। हर व्यक्ति अपने व्यापार को बढ़ाना चाहता है और जीवन में आर्थिक रूप से समृद्ध होना चाहता है। नीचे दी गई तालिका में हमने प्रयास किया है कि आपको व्यापार के बारे में शुभ और चुनौतिपूर्ण समय की जानकारी दे सकें। जिसके द्वारा आप अपने व्यापार को एक नई दिशा दे सकें

18 से 65 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
राहु	बुध	21/10/1999	9/ 5/2002	शुभ
राहु	केतु	9/ 5/2002	27/ 5/2003	शुभ
राहु	शुक्र	27/ 5/2003	27/ 5/2006	शुभ
राहु	सूर्य	27/ 5/2006	21/ 4/2007	शुभ
राहु	चंद्र	21/ 4/2007	21/10/2008	**उत्तम**
राहु	मंगल	21/10/2008	9/11/2009	शुभ
बृहस्पति	बृहस्पति	9/11/2009	27/12/2011	**उत्तम**
बृहस्पति	केतु	15/10/2016	21/ 9/2017	शुभ
बृहस्पति	शुक्र	21/ 9/2017	21/ 5/2020	शुभ
बृहस्पति	सूर्य	21/ 5/2020	9/ 3/2021	शुभ
बृहस्पति	चंद्र	9/ 3/2021	9/ 7/2022	**सर्वोत्तम**
बृहस्पति	मंगल	9/ 7/2022	15/ 6/2023	शुभ
बृहस्पति	राहु	15/ 6/2023	9/11/2025	शुभ
शनि	केतु	21/ 7/2031	30/ 8/2032	शुभ
शनि	शुक्र	30/ 8/2032	30/10/2035	शुभ
शनि	सूर्य	30/10/2035	12/10/2036	शुभ
शनि	चंद्र	12/10/2036	12/ 5/2038	**उत्तम**

शनि	मंगल	12/ 5/2038	21/ 6/2039	शुभ
शनि	राहु	21/ 6/2039	27/ 4/2042	शुभ
शनि	बृहस्पति	27/ 4/2042	9/11/2044	**सर्वोत्तम**

।। शुभ घड़ी ।।

गृह निर्माण के लिए शुभ अवधि

जीवन में अपना घर हर किसी का सपना होता है। हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसके पास एक अच्छा घर और खुशहाल जीवन हो। इसके लिए हर व्यक्ति अपने स्तर पर भरपूर प्रयास करता है। हालांकि अपने इस सपने को पूरा करने में कुछ लोग जल्दी सफल हो जाते हैं और कुछ लोगों को लंबा इंतजार करना पड़ता है। नीचे दी गई सारणी के माध्यम से आप जान सकते हैं कि, कौन सा समय आपके गृह निर्माण के लिए उपयुक्त रहेगा

18 से 75 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
राहु	बुध	21/10/1999	9/ 5/2002	शुभ
राहु	केतु	9/ 5/2002	27/ 5/2003	शुभ
राहु	शुक्र	27/ 5/2003	27/ 5/2006	शुभ
राहु	चंद्र	21/ 4/2007	21/10/2008	**उत्तम**
बृहस्पति	बृहस्पति	9/11/2009	27/12/2011	शुभ
बृहस्पति	शनि	27/12/2011	9/ 7/2014	शुभ
बृहस्पति	बुध	9/ 7/2014	15/10/2016	शुभ
बृहस्पति	केतु	15/10/2016	21/ 9/2017	**उत्तम**
बृहस्पति	शुक्र	21/ 9/2017	21/ 5/2020	शुभ
बृहस्पति	चंद्र	9/ 3/2021	9/ 7/2022	शुभ
बृहस्पति	राहु	15/ 6/2023	9/11/2025	**सर्वोत्तम**
शनि	शनि	9/11/2025	12/11/2028	शुभ
शनि	बुध	12/11/2028	21/ 7/2031	शुभ
शनि	केतु	21/ 7/2031	30/ 8/2032	शुभ
शनि	शुक्र	30/ 8/2032	30/10/2035	शुभ
शनि	चंद्र	12/10/2036	12/ 5/2038	शुभ
शनि	राहु	21/ 6/2039	27/ 4/2042	**उत्तम**
शनि	बृहस्पति	27/ 4/2042	9/11/2044	**सर्वोत्तम**

बुध	बुध	9/11/2044	6/ 4/2047	शुभ
बुध	केतु	6/ 4/2047	3/ 4/2048	**सर्वोत्तम**
बुध	शुक्र	3/ 4/2048	3/ 2/2051	शुभ
बुध	चंद्र	9/12/2051	9/ 5/2053	शुभ
बुध	राहु	6/ 5/2054	24/11/2056	शुभ

।। उपाय ।।

ज्योतिष में नौ ग्रह हैं जिनकी अपनी अलग–अलग प्रकृति है। ये ग्रह हमारी राशि के अनुसार हमें कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक परिणाम देते हैं। ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए ज्योतिषीय उपाय का बड़ा महत्व है। ऐसा करने पर न केवल ग्रहों के बुरे प्रभाव दूर होते हैं बल्कि जातक को ग्रहों से शुभ फल भी प्राप्त होते हैं।

यदि आप बीमार पड़ते हैं तो चिकित्सक के पास जाते हैं। अब चिकित्सक आपके रोग को पहचानने के लिए पहले जाँच–पड़ताल करता है और उसके बाद वह आपको दवा देता है ताकि आप रोग मुक्त हो सकें। ठीक उसी प्रकार एक ज्योतिषी आपकी जन्म कुंडली को देखकर आपकी समस्या का निदान हेतु आपको उन ग्रहों से संबंधित उपाय करने की सलाह देता है। जब आप उन उपायों को क्रियान्वित करते हैं तब जाकर आपकी समस्याओं का निदान होता है।

वेश–भूषा एवं जीवन शैली

हमारे जीवन में बड़े ही विचित्र रूप से ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। जब हमारे जीवन में किसी विशेष ग्रह की दशा की शुरुआत होती है तो हमारे आसपास उस ग्रह से संबंधित घटनाएँ घटने लगती हैं। प्रत्येक ग्रह का किसी न किसी रंग/वस्तुओं से संबंध होता है। ज्योतिष के अनुसार यदि कोई ग्रह आपके लिए शुभ फलदायी है तो आपको उस ग्रह से संबंधित वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए परंतु यदि वह ग्रह आपके लिए कष्टकारी है तो आपको उस ग्रह से संबंधित चीजों से परहेज अथवा उन्हे दान करना चाहिए।

यहाँ ग्रह एवं उनसे संबंधित रंग तथा क्रियाओं को बताया जा रहा हैः –

लाल और केसरिया रंग के वस्त्र धारण करें।
पिता जी, सरकार एवं उच्च अधिकारियों का सम्मान करें।
प्रातः सूर्योदय से पहले उठें और अपनी नग्न आँखों से उगते हुए सूरज का दर्शन करें।

सुबह के लिए प्रार्थना

ईश्वर से आत्मीय संपर्क बनाने के लिए प्रार्थना को सबसे बेहतर माध्यम माना गया है। प्रार्थना में हम भगवान से अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों से लड़ने के लिए साहस एवं शक्ति अथवा इच्छापूर्ति के लिए कामना करते हैं। हिन्दू धर्म में प्रत्येक ग्रह को ईश्वर के स्वरूप माना गया है इसलिए किसी विशेष ग्रह से शुभ फल पाने के लिए हम उससे संबंधित देवी/देवताओं की प्रार्थना करते हैं।

भगवान विष्णु की पूजा करें।
सूर्य देव की पूजा करें।
भगवान राम की पूजा करें।
आदित्य हृदय स्तोत्र का जाप करें।
हरिवंश पुराण का पाठ करें।

व्रत

आध्यातमिक दृष्टिकोण से व्रत धारण कर हम अपने ईश्वर की उपासना करते हैं। जबकि वैज्ञानिक दृष्टि से भी उपवास रखना हमारे स्वस्थ्य शरीर के लिए बहुत अच्छा है। इससे हमारे शरीर का आतंरिक एवं बाह्य भाग शुद्ध होता है। इसके अलावा यह हमारी इच्छा शक्ति को भी मजबूत बनाता है। जीवन को स्वस्थ्य बनाने एवं ग्रहों का आशीर्वाद पाने हेतु यहाँ ग्रहों से संबंधित व्रत धारण करने का दिन बताया जा रहा हैः–

सूर्य ग्रह का आशीर्वाद पाने हेतु रविवार को व्रत धारण किया जाता है।

दान

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए दान करना शुभ माना जाता है। हालाँकि दान करते समय मन में किसी बात का लालच नहीं रहना चाहिए और पूरी श्रद्धा के साथ दान की प्रक्रिया पूर्ण की जानी चाहिए। ध्यान रखें, दान हमेशा जरुरतमंद लोगों को करें। ज्योतिष के अनुसार जिस ग्रह से संबंधित आप दान कर रहे हैं उस ग्रह से आपको शुभ परिणामों की प्रापति होगी और यदि उस ग्रह से आपको कष्टकारी परिणाम मिल रहे हैं तो उससे संबंधित चीजें दान करने से आपके कष्ट दूर हो जाएंगे। यहाँ नीचे ग्रह एवं उनसे संबंधित दान की जाने वस्तुओं एवं दान विधि बतायी जा रही हैः–

सूर्य ग्रह से संबंधित वस्तुओं का दान रविवार को सूर्य की होरा और सूर्य के नक्षत्रों (कृतिका, उत्तरा–फाल्गुनी, उत्तरा षाढ़ा) में प्रातः 10 बजे से पूर्व किया जाना चाहिए।

दान करने वाली वस्तुएँ– गुड़, गेहूँ, तांबा, रूबि माणिक्य, लाल पुष्प, खस, मैनसिल आदि।

जड़ी

ग्रहों से संबंधित जडयिाँ हमारे लिए बहुत ही लाभकारी होती हैं। ये हमारे जीवन में ग्रहों के प्रभाव को नियंत्रण में रखती हैं। यदि आप वैदिक ज्योतिष के अनुसार किसी विशेष ग्रह से संबंधित जड़ी धारण करते हैं तो उस ग्रह के बुरे प्रभाव आपके जीवन पर नहीं पड़ेंगे और आपको उस ग्रह से शुभ परिणामों की प्रापति होगी।

सूर्य का आशीर्वाद पाने के लिए बेल मूल धारण करें। इस जड़ को रविवार के दिन सूर्य की होरा अथवा सूर्य के नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

रुद्राक्ष

ऐसा माना जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव की आँखों के जलबिन्दुओं से हुई है। रुद्राक्ष हमारी ऊर्जा एवं आध्यात्म शक्ति को बढ़ाता है। इसके साथ ही यह हमारे जीवन में सुख–शांति एवं समृद्धि लाता है। इसके प्रभाव से हमारे जीवन में आने वाली सारी चुनौतियाँ दूर हो जाती हैं। साथ ही हमारे स्वास्थ्य जीवन के लिए यह बेहद कारगर होता है। यदि आप इसको धारण करते हैं तो आपको भगवान शिव की अनुकम्पा प्राप्त होती है। प्रत्येक ग्रह की अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं इसलिए सभी ग्रहों के लिए अलग–अलग रुद्राक्ष निर्धारित किए गए हैं।

1 मुखी / 3 मुखी / 12 मुखी

एक मुखी रुद्राक्ष धारण करने के लिए मंत्रः
ऊँ ह्रीं नमः।
ऊँ यें हं श्रों ये।।

तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने हेतु मंत्रः
ऊँ क्लीं नमः।
ऊँ रें हूं ह्रीं हूं।।

बारह मुखी रुद्राक्ष धारण करने हेतु मंत्रः
ऊँ क्रों श्रों रों नमः।
ऊँ ह्रीं श्रीं घृणि श्रीं।।

यंत्र

ज्योतिष में मंत्रों की भांति यंत्रों का प्रयोग कुंडली में स्थित दोषों को दूर करने के लिए किया जाता है। इसके साथ ही इनका प्रयोग किसी विशेष ग्रह, देवी, देवताओं से शुभ फल की प्राप्ति के लिए करते हैं। इसको भोजपत्र, कागज अथवा किसी सतह पर एक सममितीय ढांचे के द्वारा दर्शाया जाता है। इन यंत्रों में अलौकिक शक्तियाँ समाहित होती हैं। वैसे तो इन यंत्रों को आप अपने हाथों से बना सकते हैं। इसके अलावा आप इसे बाजार से खरीद सकते है।

यदि आप ग्रहों के यंत्रों को अपने हाथों से बनाना चाहते हैं तो आपको निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होगीः

1) अनार के वृक्ष की टहनीय जो एक छोर से पेन की तरह से कलम की गई हो।
2) अष्टगंधय यह आठ प्रकार की वस्तुओं को मिश्रण है।
3) भोज पत्र के छोटे–छोटे टुकड़े।
4) गंगा जल।
5) तांबे से बनी ताबीज। यह नीचे दिए गए चित्र के आकार की हो।

मुहूर्तः यंत्र को विशेष मुहूर्त में तैयार किया जाता है इसलिए हर एक ग्रह का भी अपना विशेष मुहूर्त होता है।

प्रक्रियाः एक चुटकी अष्टगंध लें इसमें गंगा जल की कुछ बूँदे डालकर इसकी स्याही बनाए। अब अनार की शाखा से निर्मित कलम से भोज पत्र के टुकड़ों पर ग्रहों से संबंधित यंत्र का चित्र बनाएँ और इसे सूखने दें। अब सूखे हुए यंत्र को अच्छी तरह से मोड़कर अपनी ताबीज में डालें। आप इस ताबीज को पीले अथवा लाल धागे में डालकर अपने गले अथवा दाहिनी भुजा में पहन सकते हैं। इस यंत्र को बनाते एवं धारण करते समय संबंधित ग्रह का मंत्र अवश्य उच्चारण करें।

सूर्य ग्रह से शुभ फल पाने के लिए रविवार के दिन सूर्य यंत्र को सूर्य की होरा एवं इसके नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

6	1	8
7	5	3
2	9	4

मंत्र

प्राचीन काल से ही वैदिक ज्योतिष में मंत्रों का बड़ा महत्व है। मंत्र का सही उच्चारण करने पर वातावरण में एक प्रकार की सकारात्मक ऊर्जा बहती है। यदि जातक किसी विशेष ग्रह अथवा देवी, देवताओं से संबंधित मंत्र का जाप करता है तो उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। नीचे सभी नौ ग्रहों के मंत्रों को बताया जा रहा है–

सूर्य ग्रह को प्रसन्न करने के लिए आप सूर्य बीज मंत्र का जाप कर सकते हैं। मंत्र– ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नम।

वैसे तो सूर्य बीज मंत्र को 7000 बार जपना चाहिए परंतु देश–काल–पात्र सिद्धांत के अनुसार कलयुग में इस मंत्र का (7000•4) 28000 बार उच्चारण करना चाहिए।

आप इस मंत्र का भी जाप कर सकते हैं– ऊँ घृणि सूर्याय नमः!

।। वर्षफल विवरण 2017 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	11 / 4 / 2017
18:30:0	जन्म समय	12:18:20
बुधवार	जन्म दिन	मंगलवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	11 : 58 : 00
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 53
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 43 : 51
कन्या	लग्न	कर्क
बुध	लग्नस्वामी	चंद्र
कन्या	राशि	कन्या
बुध	राशि स्वामी	बुध
हस्त	नक्षत्र	चित्रा
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	मंगल
	योग	हर्षण
विष्टि	करण	बालव
मेष	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–05–52
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

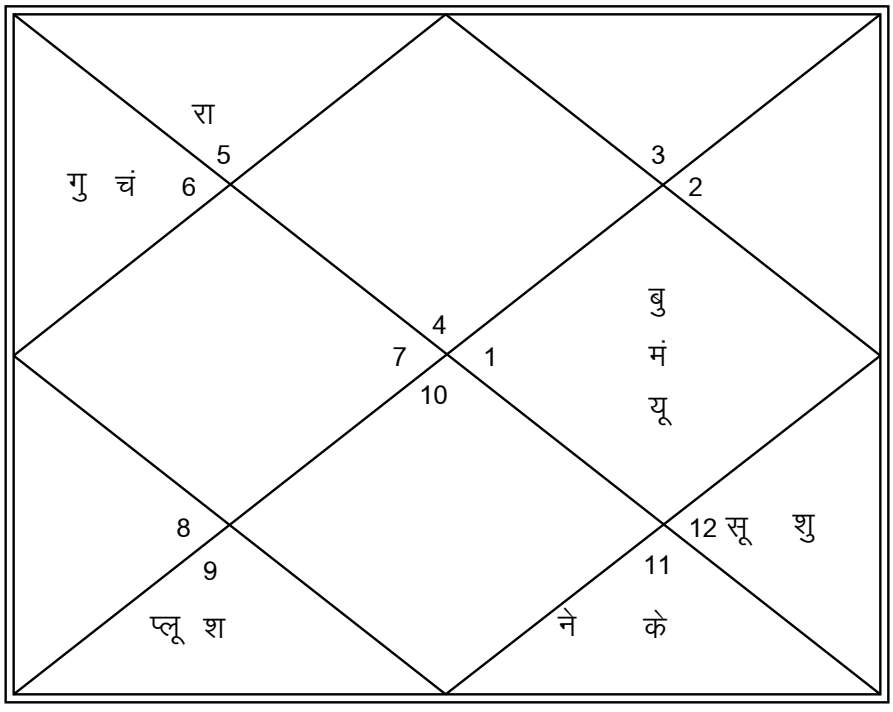

।। वर्षफल विवरण 2017 ।।

मुन्थाः 5 भाव

मुंथा के लिए यह एक अनुकूल स्थिति है। आप कुछ सामाजिक व पुनीत कार्यों में भाग लेंगे। बच्चे के जन्म अथवा बच्चों की वजह से खुशियॉ प्राप्त होंगी। कॅरिअर की दृष्टि से समय बेहतर है। सम्मान की प्राप्ति होगी। ंचे पदों पर बैठे लोगों से आपका संपर्क बढेगा।

अप्रैल 11, 2017 – जून 05, 2017 दशा राहू

राहू भाव संख्या 2

रोजमर्रा के जीवन में पैसा वसूल करने में आपको परेशानी हो सकती है। किसी भी उघम की प्रायोजना की पूरी जांच परख कर के ही पूंजी निवेश की सोचें। घर का वातावरण भी तनावपूर्ण रहेगा। परिवारजनों से कभी कभी मतभेद रहेगा।इस अवधि में आंख की पीड़ा भी आप भोग सकते हैं। साधारण रूप से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। घर के मामलों में एक असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगे।

जून 05, 2017 – जुलाई 23, 2017 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 3

इस अवधि में आपके क्रियाकलाप प्रशंसा के हकदार होंगे और आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका आत्मविश्वास बढा चढ़ा रहेगा। आपका सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा। छोटी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। पारिवारिक उत्थान के लिये आप कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहेंगे। अगर आप शादी शुदा हैं तो वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा। सहयोगियों और भागीदारों से खूब पटेगी। किसी बुजुर्ग से आप सहारा प्राप्तकरेंगे। छोटे मोटे रोगों के उभरने की भी संभावना है।

जुलाई 23, 2017 – सितम्बर 19, 2017 दशा शनि

शनि भाव संख्या 6

आप अपने कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा काम करेंगे। नौकरी या व्यवसाय की परिस्थितियों में काफी सुधार आएगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। रोजमर्रा के जीवन में आप अत्यधिक स्फूर्तिवान महसूस करेंगे। विरोधियों की आपके सामने पड़ने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। आर्थिक रूप से यह बहुत अच्छा समय सिद्ध होगा। छोटी यात्राएं उपयोगी रहेंगी। परिवार का माहौल पूर्ण संतोषप्रद रहेगा। इस अवधि के मध्य में छोटी मोटी बीमारी होने की संभावना है जिस पर आपको थोड़ा बहुत ध्यान रखने की आवश्यकता है।

सितम्बर 19, 2017 – नवम्बर 10, 2017 दशा बुध

बुध भाव संख्या 10

व्यापार या व्यवसाय में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार भी हो सकता है। इस अवधि के दौरान आप पूरी तरह कर्मठ रहेंगे। वरिष्ठ लोगों या सत्तावान व्यक्तियों के साथ आपके संबंधों में सुधार आयेगा। पारिवारिक माहौल संतोषप्रद रहेगा। आपको वाहन भी प्राप्त हो सकता है। विदेशों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। घर में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

।। वर्षफल विवरण 2017 ।।

नवम्बर 10, 2017 – दिसम्बर 01, 2017 दशा केतु

केतु भाव संख्या 8

इस अवधि में अचानक लाभ होने की संभावना है। अगर वसीयत प्राप्त करने की संभावना है या आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक है तो आप उसे प्राप्त कर सकते हैं। आपका मन धार्मिक क्रियाकलापों की ओर झुका रहेगा। कुछ अतीन्द्रिय अनुभव भी प्राप्त कर सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौहार्दपूर्ण रहेगा। अचानक यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सम्मान में इजाफा होगा। छोटी मोटी बीमारियां मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। आप तीर्थाटन पर जा सकते हैं। कुल मिलाकर सुखी रहेंगे।

दिसम्बर 01, 2017 – जनवरी 31, 2018 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 9

उच्च पदस्थ लोगों से आप सम्मान प्राप्त करेंगे और उनके कृपा भाजन रहेंगे। माता पिता और गुरूजनों से संबंध अति मधुर रहेंगे। इस अवधि के दौरान आप सुदूर प्रदेशों की यात्रा करेंगे। पारिवारिक जीवन आपके लिये सुखद एवम् अनुकूल रहेगा। आप के थोड़े प्रयत्न करने पर भी आपकी आमदनी बढ जायेगी। इस अवधि के दौरान विपरीत परिस्थितियों से सही तौर पर निपटने की आपकी क्षमता का विकास होगा। अगर आपकी पदोन्नति होने ही वाली है तो जैसी चाहेंगे वैसी ही होगी। आपका दिमाग धार्मिक क्रियाकलापों एवम् जीवन संबंधी उच्च दर्शन की ओर आकृष्ट रहेगा। हर लिहाज से यह समय अच्छा है।

जनवरी 31, 2018 – फरवरी 18, 2018 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 9

इस अवधि में मिले जुले फल मिलेंगे। लम्बी यात्राएं सफल नहीं होंगी न सफलदायक ही सिद्ध होगी। उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त लोगों से भेंट होगी और उनकी कृपा रहेगी। माता पिता बीमार रह सकते हैं। धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण करेंगे। साख अच्छी रहने से काम भी खूब मिलेगा। रूपये पैसे के लिहाज से भी यह समय अच्छा है।

फरवरी 18, 2018 – मार्च 21, 2018 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 3

इस अवधि में आपका आत्म विश्वास बढ़ा चढ़ा रहेगा। भाई बहिन भी खुशहाल रहेंगे। मां बाप से संबंध बहुत अच्छे रहेंगे। अगर नौकरी करते हैं तो पदोन्नति की संभावना है। स्थान परिवर्तन या व्यवसाय में बदलाव की भी संभावना है।

मार्च 21, 2018 – अप्रैल 11, 2018 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 10

आपको लेन देन के व्यवसाय। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार द्वारा फायदा मिलेगा। उच्च पदस्थ और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपकी मित्रता रहेगी जिनसे आप लाभावत होंगे। व्यापार का विस्तार भी शीघ्र होगा। विपरीत परिस्थितियों को कुशलता से झेलने के लिये आपमें प्रचुर आत्मविश्वास रहेगा। शत्रु आपको नुकसान नहीं पहुंचा पायेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2018 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	11 / 4 / 2018
18:30:0	जन्म समय	18:27:30
बुधवार	जन्म दिन	बुधवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	18 : 07 : 09
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 59 : 09
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 43 : 43
कन्या	लग्न	कन्या
बुध	लग्नस्वामी	बुध
कन्या	राशि	कुंभ
बुध	राशि स्वामी	शनि
हस्त	नक्षत्र	धनिष्ठा
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	मंगल
	योग	ुभ
विष्टि	करण	भाव
मेष	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–06–42
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

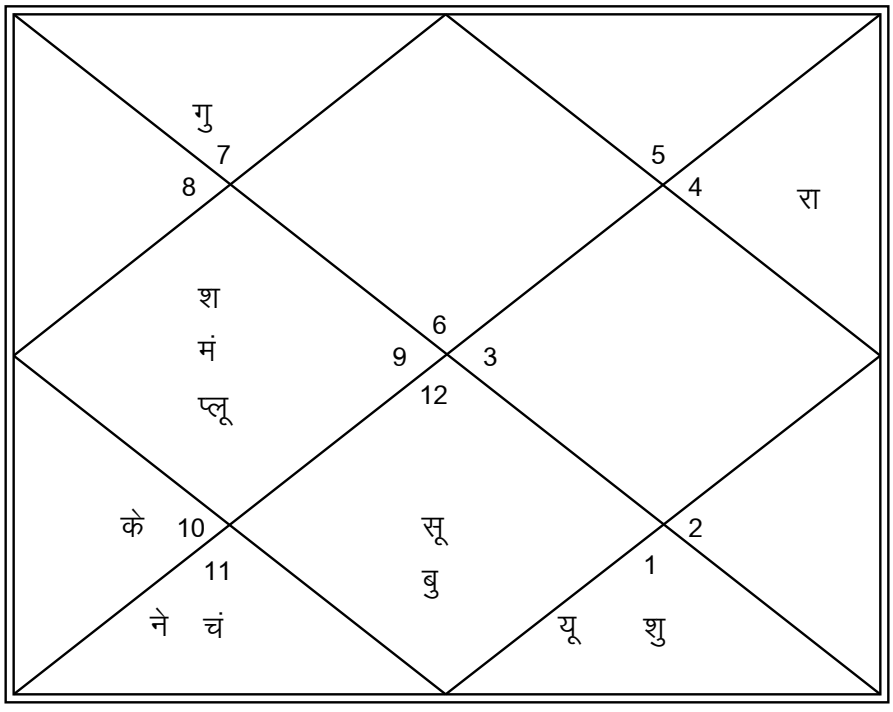

।। वर्षफल विवरण 2018 ।।

मुन्थाः 4 भाव

मुंथा के लिए यह स्थिति अनुकूल नहीं है। यह वर्ष आपके लिए परेशानियों भरा रहेगा। माता की वजह से आप तनावग्रस्त रहेंगे। अपने घनिष्ठ सहयोगियों व रिश्तेदारों से विवाद की संभावना है। पद खोने अथवा घटने की भी संभावनाएं हैं।

अप्रैल 11, 2018 – मई 30, 2018 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 2

इस अवधि के दौरान आय वृद्धि काफी होगी। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में आप पैसा रूपया छोड़ने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप जन प्रिय रहेंगे। परिवार के सदस्यों की संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। शत्रुओं का पराभव कर सकेंगे। वसीयत से लाभ भी शीघ्र प्राप्त होगा। कला कविता एवम् साहित्य में आपका शौक बढ़ा चढ़ा रहेगा। अपने रूचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे। साधारण तौर पर सब प्रकार का सुख भोगना सुनिश्चित है।

मई 30, 2018 – जुलाई 27, 2018 दशा शनि

शनि भाव संख्या 4

आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

जुलाई 27, 2018 – सितम्बर 16, 2018 दशा बुध

बुध भाव संख्या 7

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि एवम् सम्मान में इजाफा होगा। विद्वानों के साथ रहने का मौका आयेगा। आपका व्यापार या व्यवसाय बढैगा और चमकेगा। स्त्री वर्ग से आपके क्षेत्र में सहायता मिलेगी। सुखद यात्रा की भी संभावना है। लाभप्रद सौदा करेंगे और आपके भागीदार व सहयोगी आपको अपना बेहतर सहयोग देंगे। किसी प्रतिस्पर्धा में भी सफल रहना निश्चित है।

सितम्बर 16, 2018 – अक्टूबर 08, 2018 दशा केतु

केतु भाव संख्या 5

इस अवधि में आप बहुत से काम एक साथ करने का प्रयत्न करेंगे और ठीक से कुछ भी नहीं कर पायेंगे। जल्दबाजी से बिल्कुल काम नहीं बनेगा। आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि इस अवधि में परिवार के किसी सदस्य की बीमार पड़ने की संभावना है। कुल मिलाकर पारिवारिक माहौल तनावग्रस्त ही रहेगा। जोखिम उठाने की प्रवृति को लगाम दें। शत्रु आपकी साख बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। इस ओर पूरी तरह शर्क्तिक रहें। जहां तक संभव हो। यात्रा से बचें। पेट के रोग से व्यथित रहेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2018 ।।

अक्टूबर 08, 2018 – दिसम्बर 08, 2018 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 8

किसी बदनामी देने वाले काण्ड में फंसने के कारण आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आयेगी। स्वास्थ्य के लिहाज से भी यह कोई अच्छा समय नहीं है। अचानक धन प्रात की संभावना है। लेकिन साथ ही साथ खर्चे भी बढेंगे। गुप्त और निगूढ सुखों को भोगने वाली प्रवृति पर अंकुश लगाये नहीं तो बड़ी शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। वैसे परिवारजनों का सहयोग पूरा रहेगा। यद्यपि कभी कभी मतभेद भी रह सकता है। जहां तक संभव हो यात्राएं न करें।

दिसम्बर 08, 2018 – दिसम्बर 26, 2018 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 7

यह एक कठिन काल सिद्ध होगा। कड़ी मेहनत का अच्छा फल नहीं मिलेगा। व्यवसायिक या व्यापार के साथी नुकसान करेंगे और आपके लिये समस्यायें पैदा कर देंगे। घरेलु झंझटों में अपने मिजाज पर काबू रखें अन्यथा अप्रीतिकर स्थितियां झेलनी पड़ सकतीं हैं। आप भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त और बीमार रह सकते हैं।

दिसम्बर 26, 2018 – जनवरी 25, 2019 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 6

इस अवधि में किये उद्यमों में सफलता नहीं मिलेगी। शत्रु आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। नौकरी के हालात भी बदतर होते जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें भी मानसिक शांति भंग करेगी। जल्दबाजी या हड़बड़ी से काम करने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी के कारण चिंतित रह सकते हैं।

जनवरी 25, 2019 – फरवरी 16, 2019 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 4

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चावों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पती, वाहन सुख एवम् स्त्रीयों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

फरवरी 16, 2019 – अप्रैल 11, 2019 दशा राहू

राहू भाव संख्या 11

आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आमदनी में इजाफा स्पष्टरूप से प्रतिक्षित है। नये उद्यमों से सम्बद्ध रहेंगे। मित्र और सहयोगी पूरी मदद करेंगे। लम्बी यात्राओं से लाभ होगा। विदेशियों से अधिक सम्पर्क बनेंगे। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। प्रणय और प्रेम संबंधों के लिये यह काल वरदान सदृश है। आप संघर्ष में वीरोचित भावना से जूझते रहेंगे और शत्रुओं का पराभव कर देंगे। वैसे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सिर्फ कर्ण रोग से परेशान रह सकते हैं।

।। वर्षफल विवरण 2019 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	12 / 4 / 2019
18:30:0	जन्म समय	0:36:40
बुधवार	जन्म दिन	गुरूवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	00 : 16 : 20
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 20
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 44 : 09
कन्या	लग्न	धनु
बुध	लग्नस्वामी	गुरू
कन्या	राशि	मिथुन
बुध	राशि स्वामी	बुध
हस्त	नक्षत्र	आर्द्रा
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	राहु
	योग	अतिगण्ड
विष्टि	करण	गर
मेष	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–07–33
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

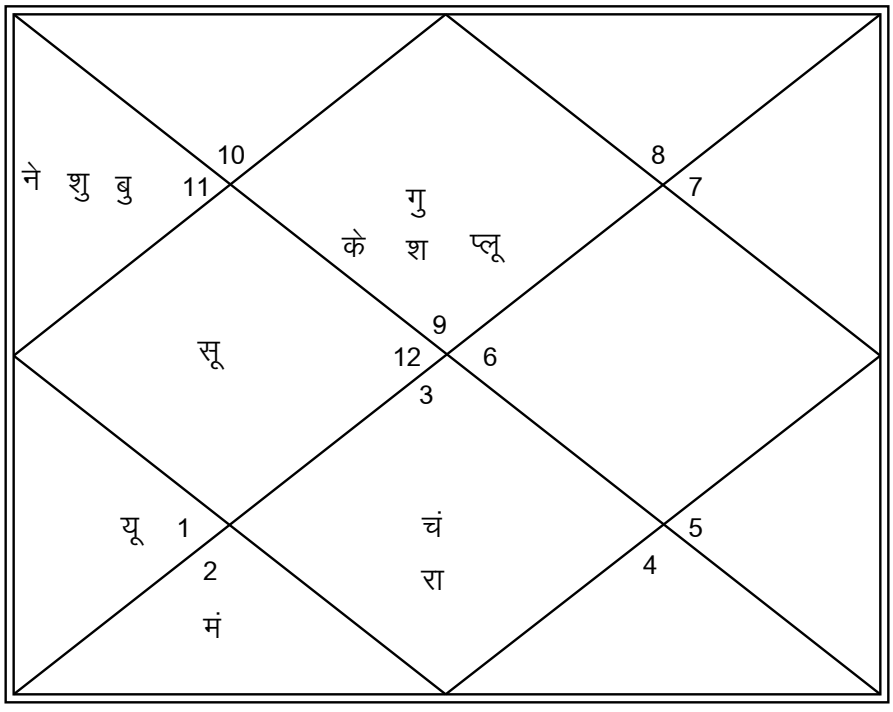

।। वर्षफल विवरण 2019 ।।

मुन्थाः 2 भाव

आकस्मिक धन प्राप्ति का योग है। यह धन लॉटरी, शेयर में सट्टेबाजी आदि माध्यमों से प्राप्त हो सकता है। विभिन्न व्यवसायिक सौदों से आप अधिक धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। पुराने घर की खरीद बिी से भी आपको धन मिलेगा। मान सम्मान की प्राप्ति होगी, बेहतर भोजन का आनंद लेंगे और प्रशासनिक सहयोग प्राप्त करेंगे।

अप्रैल 12, 2019 – जून 08, 2019 दशा शनि

शनि भाव संख्या 1

आपके हर काम में अड़चनें आएगी और देरी होगी। कभी कभी असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगें। काम का बोझ बहुत रहेगा और फालतू के कामों में भी आप फंसे रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रहेगा। रिश्तेदारों के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। भागीदारों या सहयोगियों की लापरवाही के कारण आपको धक्का पहुंच सकता है। वैसे इस अवधि का आखिरी हिस्सा आपको कुछ राहत देगा। आशावादी होना निराशावादी होने से सदैव अच्छा है।

जून 08, 2019 – जुलाई 30, 2019 दशा बुध

बुध भाव संख्या 3

आपकी मेहनत रंग लायेगी। छोटी यात्राएं अच्छा फल प्रदान करेंगी। विदेश स्थलों से अच्छी खबर मिलेगी। भाई बहिनों से सहायता मिलेगी। नये लोगों से सम्पर्क आपके सौभाग्य के कारण बढेंगे और अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। पुराने दोस्तों से मुलाकात होगी। अगर आप प्रकाशन या ऐजेन्सी के काम से सम्बंधित हैं तो शुभ परिणाम सामने आयेंगे। आपमें कलात्मक अभिव्यक्ति प्रकट करने की क्षमता होगी तथा भावनात्मक अभिनय की सहज प्रतिभा रहेगी।

जुलाई 30, 2019 – अगस्त 20, 2019 दशा केतु

केतु भाव संख्या 1

इस अवधि में व्यवहारिक रहने का प्रयत्न करें। वस्तुतः इस दौरान आपकी व्यर्थ के कामों में फंसे रहने की चेष्टा रहेगी। इन सब बातों के कारण आप व्यर्थ में ही परेशान रहेंगे। अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है। पैसा खोने का भी खतरा है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें और अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार के सहारे/मदद पर अधिक निर्भर न रहें। मित्र व हितैषी अपना वचन नहीं निभायेंगे। यात्रा से जितना बचें उतना अच्छा है। विरोधी प्रबल रहेंगे। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा इसलिये उसका ध्यान रखें।

अगस्त 20, 2019 – अक्टूबर 20, 2019 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 3

इस अवधि के दौरान आप अत्यधिक उत्साही और स्फूर्तिवान रहेंगे। छोटी यात्राएं सुखद एवम् सुफलदायक रहेंगी। पारिवारिक सुख कायम रहेगा और भाई बहन भी खुशहाल और सुखी रहेंगे। आप तुरंत निर्णय ले सकने की स्थिति में होगे और वह निर्णय सही होंगे। इस दौरान आपके पास अपना वाहन होगा। लोगों से आपके सम्पर्क बढेंगे। नौकरी के हालात में भी इजाफा होगा। सौभाग्यशाली समय होने के कारण मनचाहा काम होता रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2019 ।।

अक्टूबर 20, 2019 – नवम्बर 07, 2019 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 4

इस अवधि में आपको मेहनत करनी पड़ेगी जो आप कर नहीं पायेंगे। लगातार किया गया कड़ा परिश्रम थका भी शीघ्र देगा और कार्य क्षमता भी कम हो जायेगी। बुरे कार्यों में प्रवृती रहने की आपकी चेष्टा रहेगी। मां बाप का बुरा स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा। कार या कोईवाहन बहुत तेजी से न चलाएं।

नवम्बर 07, 2019 – दिसम्बर 08, 2019 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 7

इस अवधि में आपको सम्पती मिलने की संभावना है। पारिवारिक जीवन भी संतोषप्रद रहेगा। भागीदारों या सहयोगियों की संगति से लाभ प्राप्ति की संभावना है। नित्य चर्चा में काफी व्यस्त रहेंगे। सुदूर स्थलों या विदेश से अच्छी खबर मिलेगी। स्वास्थ्य के बारे में सचेत रहें।

दिसम्बर 08, 2019 – दिसम्बर 29, 2019 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 6

इस अवधि में आप काफी सुखी रहेंगे। नौकरी के हालात सुधरेंगे। प्रचुर लाभ होने की संभावना है। पारिवारिक वातावरण भी सुखद रहेगा। आप अपनी अड़चनें और बाधाएं दूर करने और शत्रुओं का दमन करने के लिये चेष्टारत रहेंगे। कार इत्यादि चलाते समय सावधानी बरतें।

दिसम्बर 29, 2019 – फरवरी 22, 2020 दशा राहू

राहू भाव संख्या 7

इस अवधि में आपके लाख चाहने के बावजूद भागीदारों और सहयोगियों से आपके संबंध मधुर नहीं रह पायेंगे। नित्य चर्चा में भी व्यवधान उपस्थित होंगे। पारिवारिक सदस्यों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। आपके मुकदमाबाजी और कानूनी पचड़ों में फंसने की पूरी संभावना है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें क्योंकि आपके मित्रगण जरूरी अवसर पर आपको नीचा दिखायेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। फूड पाइजनिंग का खतरा हो सकता है। जहां तक संभव हो, यात्राओं से बचें।

फरवरी 22, 2020 – अप्रैल 11, 2020 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 1

आप शुभ एवम श्रेष्ठ कृत्यों से सम्ब्दीत रहेंगे। इस दौरान आप काफी प्रसन्न रहेंगे और परिवार में कोई श्रेष्ठ संस्कार भी सम्पन्न होगा। आपकी आमदनी बढैगी तथा घ ध्ुचे सरकारी अफसरों से आपके संबंध भी सुधरेंगे। अपनी योग्यता के कारण आप विपरीत परिस्थितियों का भी भली प्रकार सामना कर लेंगे। पारिवारिक सुख सुनिश्चित रहेगा। दर्शन एवम् तत्व मीमांसा में आपकी विशेष रूचि रहेगी। इस अवधि मे दिमाग पूरी तरह चैतन्य और सानकूल रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2020 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	11 / 4 / 2020
18:30:0	जन्म समय	6:45:50
बुधवार	जन्म दिन	शनिवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	06 : 25 : 30
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 36
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 44 : 01
कन्या	लग्न	मेष
बुध	लग्नस्वामी	मंगल
कन्या	राशि	वृश्चिक
बुध	राशि स्वामी	मंगल
हस्त	नक्षत्र	अनुराधा
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	शनि
	योग	व्यतिपात
विष्टि	करण	भाव
मेष	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–08–23
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

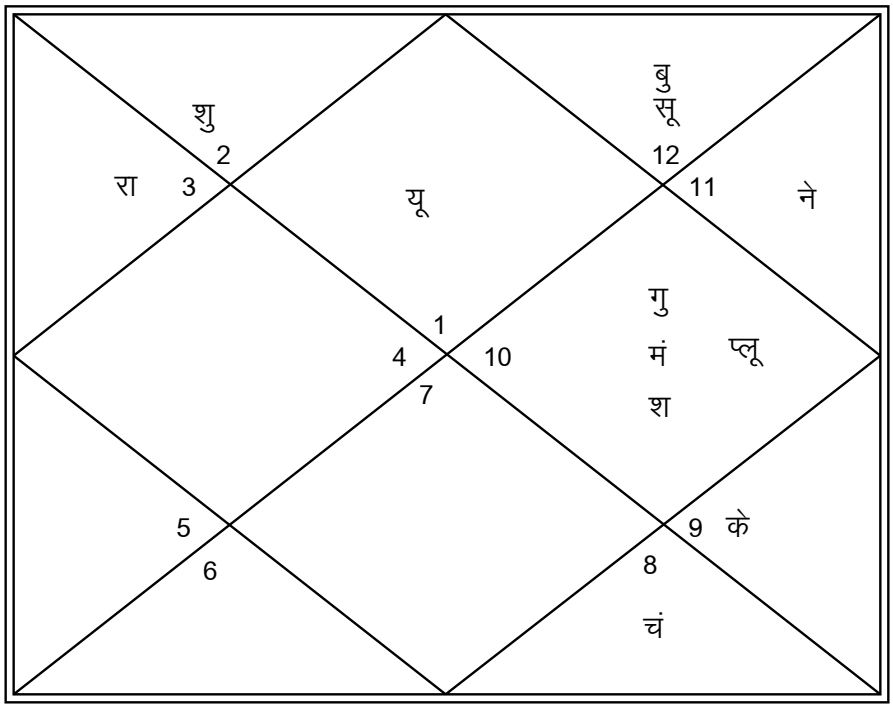

।। वर्षफल विवरण 2020 ।।

मुन्थाः 11 भाव

आप बेहतर स्वास्थ्य, लोकप्रियता, मित्रता व सुखद पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे। आपको उच्च प्रशासनिक अथवा राजकीय पदों से सहयोग मिलेगा। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी और आपकी समस्याओं का अंत होगा।

अप्रैल 11, 2020 – जून 01, 2020 दशा बुध

बुध भाव संख्या 12

यह अवधि आपको मानसिक चिन्ताएं देगी। विरोधी प्रतिष्ठा पर आंच लाने का प्रयत्न करेंगे। व्यय बढ़ता रहेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण परेशान रहेंगे। हानिकर कार्यों से भी सम्बंधित रह सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौमनस्यपूर्ण नहीं रहेगा। आपका मन अध्यात्म की ओर झुकेगा। समस्याओं परेशानियों का प्रतिरोध करने की कोशिश करें। जोखिम उठाने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें और सब प्रकार की सट्टेबाजी से बचें।

जून 01, 2020 – जून 23, 2020 दशा केतु

केतु भाव संख्या 9

किसी संस्थान के प्रमुख व्यक्ति के आप सम्पर्क में आयेंगे। औरों के प्रति जनकल्याण की भावना से काम करने की प्रवृति होगी। किसी नयी सृजनात्मक उपलब्धि के कारण आपको मान्यता मिल सकती है। वैसे इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा बढेंगी और सम्मान में इजाफा होगा। आप अति सम्मानीय व्यक्ति समझे जायेंगे। यात्रा का बहुत महत्व होगा। आपकी धर्म एवम् अध्यात्म की ओर झुकने की प्रवृति में भावनात्मक गहराई का समावेश होगा। पारिवारिक जीवन हर्षोल्लास से सम्पन्न रहेगा। परिवार में कोई मंगल कृत्य होगा। इस अवधि का पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करें।

जून 23, 2020 – अगस्त 23, 2020 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 2

परिवारजनों के साथ आप अच्छा निबाह कर सकेंगे। आप परिस्थितियों का बड़ी चतुरता से सामना करेंगे। आय में वृद्धि होनी चाहिए। संदेहास्पद साधनों या गलत तरीकों से भी आपके पास पैसा आयेगा। परिवार में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा। स्त्री वर्ग का साथ आपको रूचिकर लगेगा। महंगे और स्वादिष्ट भोजन के लिये आपका स्वाद जागृत होगा। घर की चीजों के लिये आप पैसा खर्च कर सकते हैं। घर पर सब लोग इकट्ठे होंगे।

अगस्त 23, 2020 – सितम्बर 10, 2020 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 12

आप क्षणिक उन्माद में कोई काम न करें। निर्णय लेने से पहले पूरा सोच विचार करें। गलत निर्णय के कारण आपका नुकसान भी हो सकता है। आप व्यर्थव्यय भी करेंगे। व्यापार से संबंधित कोई बुरी खबर मिल सकती है। भारी हानि होने की संभावना है। स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। मित्रों और रिश्तेदारों से संबंध मधुर रखें अन्यथा आपस में चाव पैदा हो सकता है। सट्टेबाजी से बचें अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है।

।। वर्षफल विवरण 2020 ।।

सितम्बर 10, 2020 – अक्टूबर 10, 2020 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 8

अपने प्रयत्नों में आपको निराशा मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी रहेंगी। अपने आपको किसी बड़े उद्यम से सम्बदीत न कीजिये। यह जोखिम लेने का समय नहीं है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित रह सकते हैं। फालतु की यात्राओं से बचें।

अक्टूबर 10, 2020 – नवम्बर 01, 2020 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 10

आपको लेन देन के व्यवसाय। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार द्वारा फायदा मिलेगा। उच्च पदस्थ और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपकी मित्रता रहेगी जिनसे आप लाभावत होंगे। व्यापार का विस्तार भी शीघ्र होगा। विपरीत परिस्थितियों को कुशलता से झेलने के लिये आपमें प्रचुर आत्मविश्वास रहेगा। शत्रु आपको नुकसान नहीं पहुंचा पायेंगे।

नवम्बर 01, 2020 – दिसम्बर 25, 2020 दशा राहू

राहू भाव संख्या 3

अपनी उधम शक्ति और महती घ र्जा के द्वारा आप किसी भी काम को बहुत अच्छे तरीके से पूरा करने में सक्षम रहेंगे। आपके उद्देश्य की दृढ़ता सराही जायेगी। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण विपरीत परिस्थिति में भी आपको मति भ्रम नहीं होगा और सही काम करेंगे। आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपकी प्रतिष्ठा में भी बढोत्तरी होगी। काफी भ्रमण करना पड़ेगा। भाई बहिनों से संबंध अच्छे रहेंगे। संचार माध्यम व्दारा आपको उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा। व्यापार और लेन देन के सौदों की बहुत अच्छे रहने की संभावना है। अगर नौकरी में हैं तो शीघ्र पदोन्नति होनी चाहिये।

दिसम्बर 25, 2020 – फरवरी 12, 2021 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 10

व्यापार नौकरी या धन्धे में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार होगा और पद बढ़ेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। व्यापार और नौकरी के सिलसिले में आप काफी भ्रमण करेंगे। शत्रु प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे पर उसमें कामयाब नहीं होंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा।

फरवरी 12, 2021 – अप्रैल 11, 2021 दशा शनि

शनि भाव संख्या 10

अपना मनचाहा परिणाम पाने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। वैसे मोटे तौर पर परिणाम आशाजनक नहीं निकलेंगे लेकिन काम विलम्ब से पूरा होगा। इस अवधि में किसी काम में बड़ा परिवर्तन नहीं करना चाहिए। धैर्य की हर क्रिया में बहुत आवश्यकता रहेगी। साथी का स्वास्थ्य आपको मानसिक रूप से चिन्तित रख सकता है। व्यापार नौकरी के सिलसिले में किए गए भ्रमण लाभकारी सिद्ध होंगे। जमीन की खरीद और किसी अच्छे समय करने के लिए मुल्तवी रखिए।

।। वर्षफल विवरण 2021 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	11 / 4 / 2021
18:30:0	जन्म समय	12:55:0
बुधवार	जन्म दिन	रविवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	12 : 34 : 39
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 51
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 43 : 53
कन्या	लग्न	कर्क
बुध	लग्नस्वामी	चंद्र
कन्या	राशि	मीन
बुध	राशि स्वामी	गुरू
हस्त	नक्षत्र	रेवती
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	बुध
	योग	इन्द्र
विष्टि	करण	चतुष्पाद
मेष	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–09–13
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

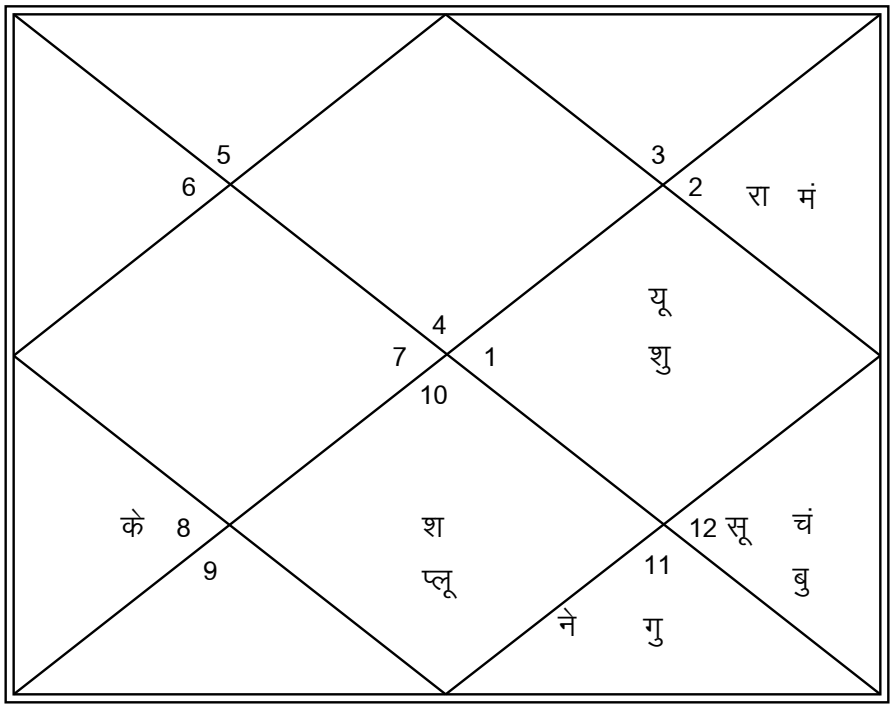

।। वर्षफल विवरण 2021 ।।

मुन्थाः 9 भाव

मुंथा की यह स्थिति आपको वर्ष भर उन्नति और सफलता प्रदान करेगी। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। घर में उत्सव सा माहौल रहेगा। जीवन साथी से, बच्चों से सुख मिलेगा और आपका नाम चारों दिशा में फैलेगा। विदेशी जमीन से भी आय संभव है।

अप्रैल 11, 2021 – मई 02, 2021 दशा केतु

केतु भाव संख्या 5

इस अवधि में आप बहुत से काम एक साथ करने का प्रयत्न करेंगे और ठीक से कुछ भी नहीं कर पायेंगे। जल्दबाजी से बिल्कुल काम नहीं बनेगा। आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि इस अवधि में परिवार के किसी सदस्य की बीमार पड़ने की संभावना है। कुल मिलाकर पारिवारिक माहौल तनावग्रस्त ही रहेगा। जोखिम उठाने की प्रवृति को लगाम दें। शत्रु आपकी साख बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। इस ओर पूरी तरह शर्क्तिक रहें। जहां तक संभव हो। यात्रा से बचें। पेट के रोग से व्यथित रहेंगे।

मई 02, 2021 – जुलाई 02, 2021 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 10

अपने कार्य क्षेत्र में आप महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतिष्ठा और सम्मान में प्रचुर वृद्धि होगी। इस अवधि में विपरीत परिस्थितियों से भी आप कुशलता से निपट सकेंगे। व्यापारी सहयोगियों या व्यवसायकि लोगों ग्राहकों के साथ आपके संबंध दिन व रात सुधरेंगे। समय के साथ साथ आप संग्रहशील होते जायेंगे और विलास सामग्री पर भी व्यय करेंगे। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। व्यापारिक यात्राओं की संभावना है।

जुलाई 02, 2021 – जुलाई 20, 2021 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 9

इस अवधि में मिले जुले फल मिलेंगे। लम्बी यात्राएं सफल नहीं होंगी न सफलदायक ही सिद्ध होगी। उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त लोगों से भेंट होगी और उनकी कृपा रहेगी। माता पिता बीमार रह सकते हैं। धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण करेंगे। साख अच्छी रहने से काम भी खूब मिलेगा। रूपये पैसे के लिहाज से भी यह समय अच्छा है।

जुलाई 20, 2021 – अगस्त 20, 2021 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 9

विद्वान एवम् पढ़े लिखे लोगों से सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विदेशियों से संबंध सफलदायक रहेंगे। लम्बी यात्राओं की भी संभावना है। धार्मिक कृत्य करने की प्रवृति रहेगी। सुखी जीवन बितायेंगे। मां बाप से संबंध अति मधुर रहेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2021 ।।

अगस्त 20, 2021 – सितम्बर 10, 2021 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 11

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

सितम्बर 10, 2021 – नवम्बर 04, 2021 दशा राहू

राहू भाव संख्या 11

आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आमदनी में इजाफा स्पष्टरूप से प्रतिक्षित है। नये उद्यमों से सम्बद्ध रहेंगे। मित्र और सहयोगी पूरी मदद करेंगे। लम्बी यात्राओं से लाभ होगा। विदेशियों से अधिक सम्पर्क बनेंगे। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। प्रणय और प्रेम संबंधों के लिये यह काल वरदान सदृश है। आप संघर्ष में वीरोचित भावना से जूझते रहेंगे और शत्रुओं का पराभव कर देंगे। वैसे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सिर्फ कर्ण रोग से परेशान रह सकते हैं।

नवम्बर 04, 2021 – दिसम्बर 23, 2021 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 8

मानसिक चिन्ताओं के कारण तकलीफ होगी। शारीरिक रोग भी घेरे रह सकते हैं। दिमाग को शांति नहीं मिलेगी। परिवार जनों का बर्ताव भी फर्क रहेगा। लेकिन गूढ़ विाान और परामनोविाान में आपकी रूचि जागृत होगी। इन क्षेत्रों के कुछ अनुभव भी प्राप्त होंगे। अचानक धन लाभ होने की भी संभावना है। पूंजी निवेश का प्रयत्न न करें क्योंकि मन चाहा परिणाम प्राप्त नहीं होगा। मित्र व सहयोगी अपना वचन नहीं निभायेंगे। असुरक्षा की भावना सदैंव विद्यमान रहेगी।

दिसम्बर 23, 2021 – फरवरी 18, 2022 दशा शनि

शनि भाव संख्या 7

यह अच्छा समय नहीं है क्योंकि आपके भागीदार या सहयोगी आपको नीचा दिखाएगें। औरों की लापरवाही और असफलताओं से आप चिन्तित रहेंगे। रोजमर्रा के कामों में भी समस्याएं खड़ी हो सकती है। बेबुनियाद इल्जाम आपके घ पर मंढे जाएगें। छोटे मोटे झंझट या विवादों से बचें। स्त्री वर्ग से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। जहां तक संभव हो फालतू की यात्रा कम करें। व्यापार के बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें।

फरवरी 18, 2022 – अप्रैल 11, 2022 दशा बुध

बुध भाव संख्या 9

प्रभावशाली वाणी होने के कारण लोगों से आप अपनी बात मनवा लेते हैं। प्रसिद्ध व्यक्तियों के आप सम्पर्क में आयेंगे। आपकी ख्याति और प्रतिष्ठा सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। अपनी बुद्धिमत्ता के कारण आप प्रचुर लाभ पायेंगे। अपने व्यवसाय में आप अच्छा काम करेंगे। यात्रा से निश्चित लाभ प्राप्त करेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2022 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	11 / 4 / 2022
18:30:0	जन्म समय	19:4:10
बुधवार	जन्म दिन	सोमवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	18 : 43 : 49
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 59 : 07
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 43 : 44
कन्या	लग्न	तुला
बुध	लग्नस्वामी	शुक्र
कन्या	राशि	कर्क
बुध	राशि स्वामी	चंद्र
हस्त	नक्षत्र	आश्लेषा
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	बुध
	योग	ूल
विष्टि	करण	गर
मेष	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–10–03
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

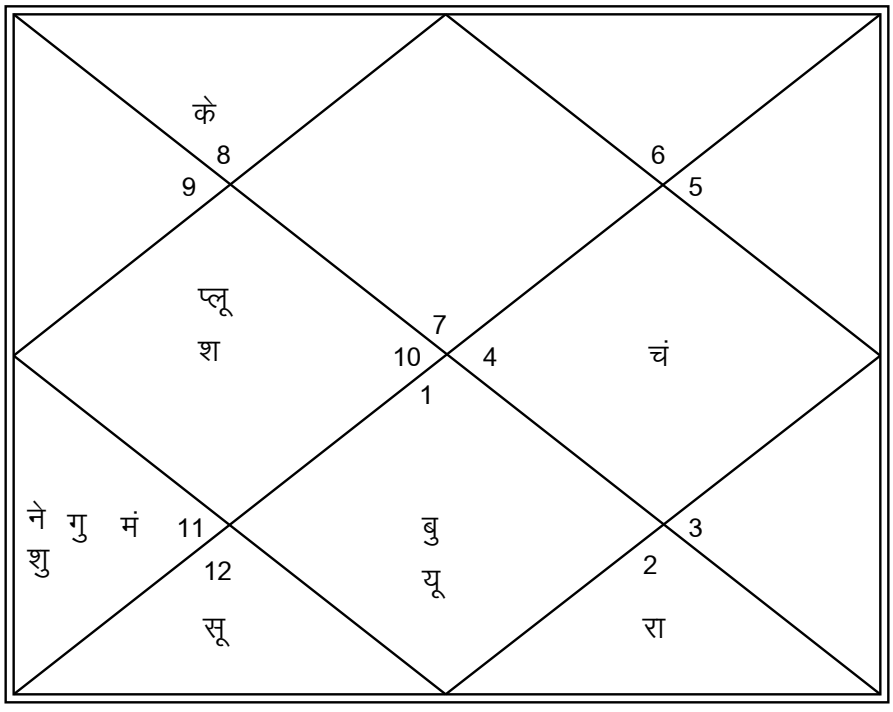

।। वर्षफल विवरण 2022 ।।

मुन्थाः 7 भाव

आपके जीवन साथी को कई स्वास्थ्य संबंधी परेशानिया होंगी। मानसिक रूप से अत्यधिक तनावग्रस्त रहेंगे और वैवाहिक अथवा प्रेमजीवन में कुछ अनहोनी हो सकती है। खर्चों में बढोत्तरी होगी। पद खोने का खतरा रहेगा और आपके वरिष्ठों के आपके विरोध में जाने की भी संभावना है। जीवन के हर मोड़ पर आपको दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

अप्रैल 11, 2022 – जून 11, 2022 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 5

इस अवधि के दौरान आप स्त्रीवर्ग की ओर आकर्षित रहेंगे। इस अवधि में अचानक ऐसी घटनाएं घटेंगी जो आपके लिये हितकर हो। इसके अलावा इस दौरान आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और खुशहाली भी बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं की सम्पूर्ति होगी। यदि आप में सृजनात्मक क्षमता है तो इस अवधि के दौरान आपकी कला संगीत इत्यादि में सफलदायक गति रहेगी। सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा और पुराने मित्रों सहयोगियों से मुलाकात होगी। संचार के माध्यम से आपको कोई बहुत अच्छी खबर भी मिल सकती है।

जून 11, 2022 – जून 29, 2022 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 6

इस अवधि में आप जो भी करेंगे उसमें सफल रहेंगें। सारी समस्याओं का समाधान होता रहेगा और आप सफलता पायेंगे। शत्रुओं को पराजित कर देंगे और वह आपको नुकसान नहीं पहुंचा पायेंगे। आपका काम सफल होगा और नौकरी करने के हालातों में सुधार भी होगा। प्रतिष्ठा एवम् पद वृद्धि की संभावना है। आपको मान्यता मिलेगी और पदोन्नति भी। सम्मान एवम् साख भी प्राप्त करेंगे। सभी हिसाब से यह एक सफलदायक समय रहेगा।

जून 29, 2022 – जुलाई 30, 2022 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 10

आप अपने ही विचारों और योजनाओं को रचनात्मक रूप दे सकेंगे। नौकरी या व्यापार से संबंधित कुछ ठोस परिणाम सामने आयेंगे। आपको सारे ही उद्यमों में सफलता निचत है। अपने से वरिष्ठ लोगों या पर्यवेक्षकों के साथ अति मधुर संबंध रहेंगे। इस समय का पूरा सदुपयोग कीजिये।

जुलाई 30, 2022 – अगस्त 20, 2022 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 5

आप सावधान रहें क्योंकि आपकी विवेक बुद्धि में ह्रास संभावित है। स्वास्थ्य एवम् पारिवारिक सदस्यों के कारण परेशानी पैदा होगी। सट्टेबाजी से बचें। कुछ ऐसे खर्चे भी करने पड़ेंगे जिनके कारण आपके नियंत्रण से बाहर होंगे। मित्र एवम् सहयोगियों से निराशा पायेंगे। यात्रा से थकान होगी।

।। वर्षफल विवरण 2022 ।।

अगस्त 20, 2022 – अक्टूबर 14, 2022 दशा राहू

राहू भाव संख्या 8

इस अवधि के दौरान दुर्घटनायें मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। प्रयासों में असफलता ही हाथ लगेगी। आपके भ्रम भयकारी मनोविकृति बन सकते हैं। आपकी साथी का बर्ताव आपको असहनीय मालूम पड़ेगा। धन्धे / व्यापार में भी काम अच्छा नहीं चलेगा। कुछ न कुछ परेशानियां आपको सदैव घेरे रहेंगी। स्वास्थ्य की समस्याओं के कारण आप सही प्रकार से अपने वचन नहीं निभा पायेंगे। गूढ विज्ञान की ओर आपकी रूचि जागृत होगी और कुछ अतीन्द्रिय अनुभव भी प्राप्त कर सकते हैं।

अक्टूबर 14, 2022 – दिसम्बर 02, 2022 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 5

इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास आपको लगातार विजय दिलायेगा। आप सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा। प्रणय व प्रेम संबंधों के लिये भी यह अच्छा समय है। अपनी बुद्धिमत्ता के और पैनी अर्न्तदृष्टि के कारण आप सही क्षण पर सही निर्णय लें। व्यापार/व्यवसाय में लाभ प्राप्त कर सकेंगे। आपका सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा। धार्मिककिया कलापों से सम्बंद्ध रहने की संभावना है। मित्र व हितैषी पूरा सहयोग देंगे।

दिसम्बर 02, 2022 – जनवरी 28, 2023 दशा शनि

शनि भाव संख्या 4

आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

जनवरी 28, 2023 – मार्च 21, 2023 दशा बुध

बुध भाव संख्या 7

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि एवम् सम्मान में इजाफा होगा। विद्वानों के साथ रहने का मौका आयेगा। आपका व्यापार या व्यवसाय बढैगा और चमकेगा। स्त्री वर्ग से आपके क्षेत्र में सहायता मिलेगी। सुखद यात्रा की भी संभावना है। लाभप्रद सौदा करेंगे और आपके भागीदार व सहयोगी आपको अपना बेहतर सहयोग देंगे। किसी प्रतिस्पर्धा में भी सफल रहना निश्चित है।

मार्च 21, 2023 – अप्रैल 11, 2023 दशा केतु

केतु भाव संख्या 2

गन्दी भाषा बोलने के कारण अपने लोगों से भी आपकी दुश्मनी होने की संभावना है। इसलिये आपको अपनी वाणी पर पूरा नियंत्रण रखना चाहिए। खास तौर पर उन लोगों के प्रति जिनसे आपकी घनिष्टता है। नहीं तो गलतफहमी हो जायेगी। पैसे रूपये की हानि होने की संभावना है। अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ आपके निर्वाह में मुश्किलें पेश आयेंगी। इस अवधि में कोई नये उघम न शुरू करें। इसी माह में आपके व्याधिग्रस्त होने की भी संभावना है। आत्मविश्वास की कमी आपमें स्पष्ट परिलक्षित होगी। यात्राओं का कोई व्यवहारिक अर्थ नहीं निकलेगा। साधारण तौर पर यह समय आपके लिये अच्छा नहीं है क्योंकि आत्मीय जन भी काफीदूर हो जायेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2023 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11/4/1979	जन्म दिनांक	12/4/2023
18:30:0	जन्म समय	1:13:20
मकदमेकंल	जन्म दिन	मंगलवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	00 : 53 : 00
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 18
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 44 : 10
टपतहव	लग्न	धनु
डम्त	लग्नस्वामी	गुरू
टपतहव	राशि	धनु
डम्त	राशि स्वामी	गुरू
भौज।	नक्षत्र	मूल
डव्छ	नक्षत्र स्वामी	केतु
	योग	परिघ
टैप्ज्ज	करण	वणिज
।तपमे	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–10–54
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

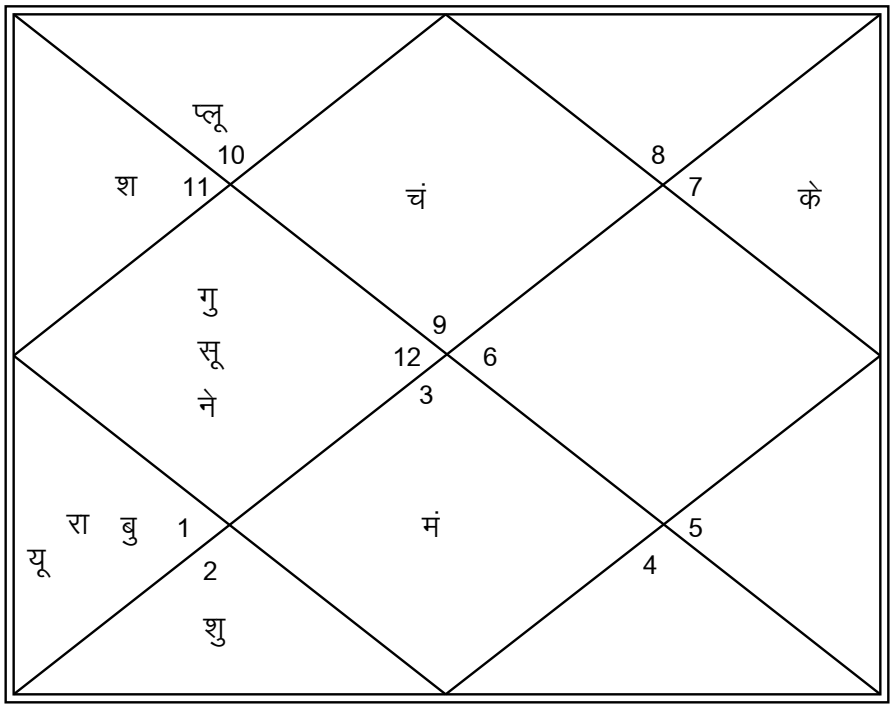

।। वर्षफल विवरण 2023 ।।

मुन्थाः 6 भाव

स्वास्थ्य संबंधी अनेक परेशानियॉ आपको तनावग्रस्त करेंगी। कुछ निकट रिश्तेदार गंभीर रूप से बीमार हो सकते हैं। विरोधियों से खतरा है। संभव है कि चोरी की वजह से आपको नुकसान हो। शत्रु की किसी गतिविधी की वजह से चोट लगने का भी डर है। आपके कार्यस्थल पर आपके विरोधियों को प्रशासनिक सहयोग मिलने की वजह से आप मानसिक यंत्रणा के शिकार हो सकते हैं।

अप्रैल 12, 2023 – अप्रैल 30, 2023 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 4

इस अवधि में आपको मेहनत करनी पड़ेगी जो आप कर नहीं पायेंगे। लगातार किया गया कड़ा परिश्रम थका भी शीघ्र देगा और कार्य क्षमता भी कम हो जायेगी। बुरे कार्यों में प्रवृती रहने की आपकी चेष्टा रहेगी। मां बाप का बुरा स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा। कार या कोईवाहन बहुत तेजी से न चलाएं।

अप्रैल 30, 2023 – मई 30, 2023 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 1

इस अवधि में भी मिले जुले फल मिलेंगे। कई अच्छे अवसर मिलेंगे पर आप उनका पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्य के कारण परेशान रहेंगे। मित्र, परिवार और सहयोगियों के साथ बर्ताव में सर्तक रहें। यात्राएं सफलदायक नहीं होंगी इसलिये उनसे बचें। मां बाप का रूग्ण स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा।

मई 30, 2023 – जून 21, 2023 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 7

नित्य चर्चा में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। शत्रु छवि बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। सहयोगियों तथा भागीदारों से विवाद होने की संभावना है। पारिवारिक जीवन भी सुखद नहीं रहेगा। अपनी तन्दुरस्ती का ख्याल रखें। यात्राओं से निराशा मिलेगी। साथी के स्वास्थ्य के कारण चिन्तित रहेंगे। इस दौरान आपका जीवन समस्याओं एवम् परेशानियों से आक्रान्त रहेगा।

जून 21, 2023 – अगस्त 14, 2023 दशा राहू

राहू भाव संख्या 5

सही निर्णय लेने की आपकी क्षमता और योग्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपने आस पास भ्रम का विश्व बना लेना चाहेंगे। झूठी आशाएं आपके लक्ष्य को भ्रमित कर देंगी। सट्टेबाजी की प्रवृति पर पूरा अंकुश लगाये। मित्रों से संबंध मधुर नहीं रहेंगे। किसी मुकदमेबाजी के चक्कर में अपने आपको न फंसायें। किसी के जमानती बनने की चेष्टा न करें। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें। फूड पाइजनिंग के कारण पेट के रोग उभर सकते हैं।

।। वर्षफल विवरण 2023 ।।

अगस्त 14, 2023 – अक्टूबर 02, 2023 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 4

इस अवधि में जीवन व्यापन सुविधा सम्पन्न रहेगा। पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। सम्पती पर धन व्यय होगा। घर की वस्तुओं चल अचल सम्पती आदि पर व्यय होगा तथा व्यापार/व्यवसाय के विकास पर भी धन व्यय करेंगे। अचानक व अयाचित लाभ प्राप्त करेंगे। बड़ें अफसरों और शक्तिवान व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आपकी ख्याति और सम्मान में इजाफा होगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी की पदोन्नति की संभावना है। धर्म के प्रति आपका झुकाव रहेगा और पवित्र स्थलों की यात्रा करेंगे। इस पूरी अवधि में दिमाग सान्कूल रहेगा और सुख भोगेंगे।

अक्टूबर 02, 2023 – नवम्बर 29, 2023 दशा शनि

शनि भाव संख्या 3

हर काम को सलीके से करने की आपकी बलवती इच्छा रहेगी। आपका विश्वास बहुत बढ़ा चढ़ा रहेगा। नौकरी व्यापार या व्यवसाय में उत्साहवर्धक परिणाम निश्चित रूप से सामने आएंगें। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। आमदनी साधारण रूप से अच्छी रहेगी। पारिवारिक वातावरण बड़ा सौहार्दपूर्ण रहेगा। संचार माध्यमों से कोई अच्छी खबर मिल सकती है।

नवम्बर 29, 2023 – जनवरी 19, 2024 दशा बुध

बुध भाव संख्या 5

इस अवधि में अपनी पैनी विवेक बुद्धि और सही अंदाज लगाने की क्षमता के कारण आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी कल्पना अत्यधिक सक्रिय रहेगी। नये उद्यमों में निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे। यह समय प्रणय और रोमान्स के लिये भी अच्छा है। आपके सृजन बोध की सराहना की जायेगी। पारिवारिक सुख बढा चढ़ा रहेगा। मित्र और शुभ चिन्तक पूरा सहारा देंगे। इस अवधि के दौरान आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। एक यादगार यात्रा होने की भी संभावना है।

जनवरी 19, 2024 – फरवरी 10, 2024 दशा केतु

केतु भाव संख्या 11

अचानक परिस्थितियां आपके काफी अनुकूल होती जायेंगी। कुछ व्यापारिक सौदे आपको काफी लाभावत कर देंगे। मित्र और हितैषियों का पूरा सहयोग रहेगा। उच्च कोटि के शारीरिक या मांसल सुख आपको प्राप्त होंगे। अगर नौकरीपेशा हैं तो पदोन्नति प्राप्त करेंगे। इस अवधि में लम्बी यात्रा की भी प्रबल संभावना है। पारिवारिक जीवन संतोष प्रदान करेगा। सामाजिक क्षेत्र में आप प्रचुर प्रतिष्ठा और सम्मान के भागी होंगे।

फरवरी 10, 2024 – अप्रैल 11, 2024 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 6

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

।। वर्षफल विवरण 2024 ।।

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11/4/1979	जन्म दिनांक	11/4/2024
18:30:0	जन्म समय	7:22:30
मकदमेकंल	जन्म दिन	गुरूवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	07 : 02 : 10
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 34
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 44 : 02
टपतहव	लग्न	मेष
डम्त	लग्नस्वामी	मंगल
टपतहव	राशि	मेष
डम्त	राशि स्वामी	मंगल
भौज।	नक्षत्र	कृतिका
डव्छ	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
	योग	आयुष्मान
टैप्ज्ज	करण	गर
।तपमे	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–11–44
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

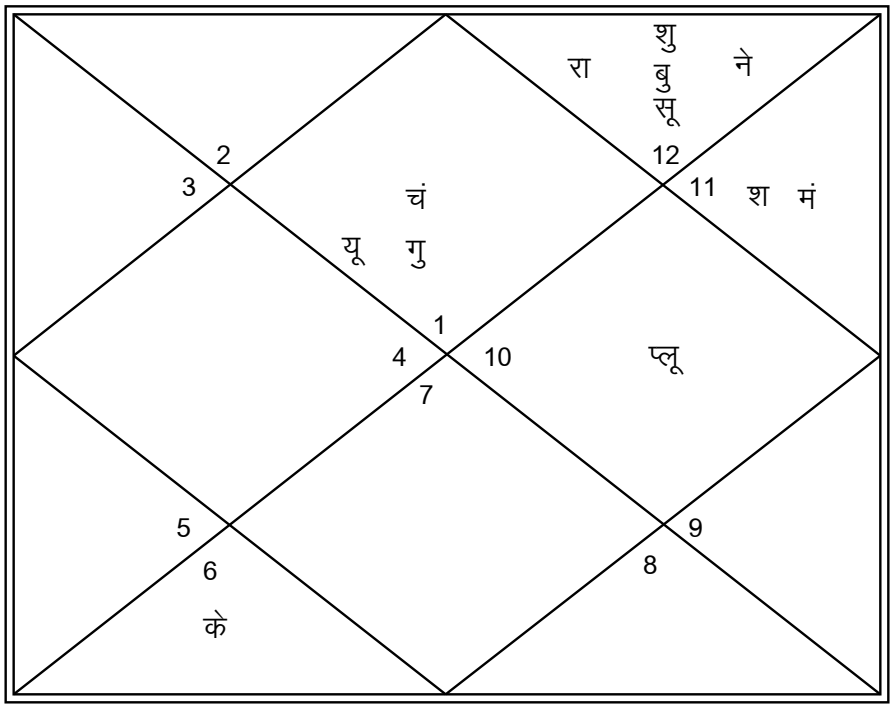

|| वर्षफल विवरण 2024 ||

मुन्थाः 3 भाव

आप अपने विरोधियों और शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होंगे। कानूनी लड़ाइयों में विजय मिलेगी। आपको बेहतर स्वास्थ्य का लाभ मिलेगा और नाम व दाम दोनों का आनंद लेंगे। आपके नये मित्र बनेंगे और आपको भाइयों व बहनों का सहयोग प्राप्त होगा।

अप्रैल 11, 2024 – मई 11, 2024 दशा चन्द्र
चन्द्र भाव संख्या 1

इस अवधि में भी मिले जुले फल मिलेंगे। कई अच्छे अवसर मिलेंगे पर आप उनका पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्य के कारण परेशान रहेंगे। मित्र, परिवार और सहयोगियों के साथ बर्ताव में सर्तक रहें। यात्राएं सफलदायक नहीं होंगी इसलिये उनसे बचें। मां बाप का रूग्ण स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा।

मई 11, 2024 – जून 02, 2024 दशा मंगल
मंगल भाव संख्या 11

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

जून 02, 2024 – जुलाई 26, 2024 दशा राहू
राहू भाव संख्या 12

इस अवधि में निवास स्थान या नौकरी का परिवर्तन संभावित है। भारी व्यय से आप व्यथित रहेंगे। अपने लोगों से ही झगड़े विवाद हो सकते हैं। यात्राएं थकाने वाली और सफलदायक नहीं रहेंगी। पारिवारिक सदस्य आपके प्रति उदासीन रहेंगे। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। दुष्ट मित्रों से सावधान रहें। वह आपकी प्रतिष्ठा पर आंच लायेंगे। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी चिन्ता का एक कारण रहेगा। अभी किसी यात्रा की योजना न बनाएं।

जुलाई 26, 2024 – सितम्बर 13, 2024 दशा गुरू
गुरू भाव संख्या 1

आप शुभ एवम श्रेष्ठ कृत्यों से सम्ब्दीत रहेंगे। इस दौरान आप काफी प्रसन्न रहेंगे और परिवार में कोई श्रेष्ठ संस्कार भी सम्पन्न होगा। आपकी आमदनी बढेगी तथा घ ध्५चे सरकारी अफसरों से आपके संबंध भी सुधरेंगे। अपनी योग्यता के कारण आप विपरीत परिस्थितियों का भी भली प्रकार सामना कर लेंगे। पारिवारिक सुख सुनिश्चित रहेगा। दर्शन एवम् तत्व मीमांसा में आपकी विशेष रूचि रहेगी। इस अवधि मे दिमाग पूरी तरह चैतन्य और सानकूल रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2024 ।।

सितम्बर 13, 2024 – नवम्बर 10, 2024 दशा शनि
शनि भाव संख्या 11

इस अवधि में आपकी सारी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप नए उद्यम शुरू करेंगे। मित्रों और हितैषियों से खूब मदद मिलेगी। इस अवधि में व्यापार द्वारा आपको अच्छा खासा लाभ होना चाहिए। निकट संबंधी के बारे में कोई अच्छी खबर मिल सकती है। सुदूर प्रदेशों के निवासियों से आपके अच्छे संबंध कायम होंगे। भ्रमण उपयोगी रहेगा। प्रणय संबंधों के लिए भी यह समय अच्छा है। परिवारजनों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा रहेगा।

नवम्बर 10, 2024 – दिसम्बर 31, 2024 दशा बुध
बुध भाव संख्या 12

यह अवधि आपको मानसिक चिन्ताएं देगी। विरोधी प्रतिष्ठा पर आंच लाने का प्रयत्न करेंगे। व्यय बढ़ता रहेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण परेशान रहेंगे। हानिकर कार्यों से भी सम्बंधित रह सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौमनस्यपूर्ण नहीं रहेगा। आपका मन अध्यात्म की ओर झुकेगा। समस्याओं परेशानियों का प्रतिरोध करने की कोशिश करें। जोखिम उठाने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें और सब प्रकार की सट्टेबाजी से बचें।

दिसम्बर 31, 2024 – जनवरी 22, 2025 दशा केतु
केतु भाव संख्या 6

व्यापार धन्धै में इस अवधि में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अगर नौकरी पेशा हैं तो नौकरी की हालतों में सुधार होगा। व्यापार के विस्तृत होने की संभावना है। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान हर क्षेत्र से आपको सम्मान मिलेगा। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। दुश्मनों की आपका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। अचानक यात्रा सौभाग्य वृद्धि करेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे प्रयास कर सौभाग्यकाल को पूरी तरह भुनाने के लिये यह श्रेयस्कर समय है।

जनवरी 22, 2025 – मार्च 24, 2025 दशा शुक्र
शुक्र भाव संख्या 12

आप सुविधा और विलास के साधनों पर खर्च करेंगे। उच्च कोटि का वैवाहिक सुख भोगेंगे। फिर भी अच्छा होगा कि आप अपनी भोग वृती पर अंकुश लगायें वरना आनन्द प्राप्त करने के बजाय परेशानी उठानी पड़ जायेगी। छोटी मोटी बीमारी परेशान करेगी। प्रणय संबंधों की गति धीमी रखें। विरोधी और प्रतिद्वन्दी नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। यघपि आप उनकी परवाह नहीं करेंगे फिर भी आप को सलाह दी जाती है कि ऐसा न करें। आर्थिक रूप से यह बुरा समय नहीं है पर खर्चो पर नियंत्रण रखें। परिवार जन के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं।

मार्च 24, 2025 – अप्रैल 11, 2025 दशा सूर्य
सूर्य भाव संख्या 12

आप क्षणिक उन्माद में कोई काम न करें। निर्णय लेने से पहले पूरा सोच विचार करें। गलत निर्णय के कारण आपका नुकसान भी हो सकता है। आप व्यर्थव्यय भी करेंगे। व्यापार से संबंधित कोई बुरी खबर मिल सकती है। भारी हानि होने की संभावना है। स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। मित्रों और रिश्तेदारों से संबंध मधुर रखें अन्यथा आपस में चाव पैदा हो सकता है। सट्टेबाजी से बचें अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है।

|| वर्षफल विवरण 2025 ||

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11 / 4 / 1979	जन्म दिनांक	11 / 4 / 2025
18:30:0	जन्म समय	13:31:40
ॅमकदमेकंल	जन्म दिन	थ्तपकंल
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	13 : 11 : 20
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 58 : 49
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 43 : 54
टपतहव	लग्न	ब्ंदबमत
डम्त	लग्नस्वामी	डव्छ
टपतहव	राशि	टपतहव
डम्त	राशि स्वामी	डम्त
भ्ैज।	नक्षत्र	न्ज्ज।त।च्भ।स्
डव्छ	नक्षत्र स्वामी	ैन्छ
	योग	क्भ्न्ट।
टैभ्ज्	करण	ळ।त्
।तपमे	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	।तपमे
023—34—01	अयनांश	024—12—34
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

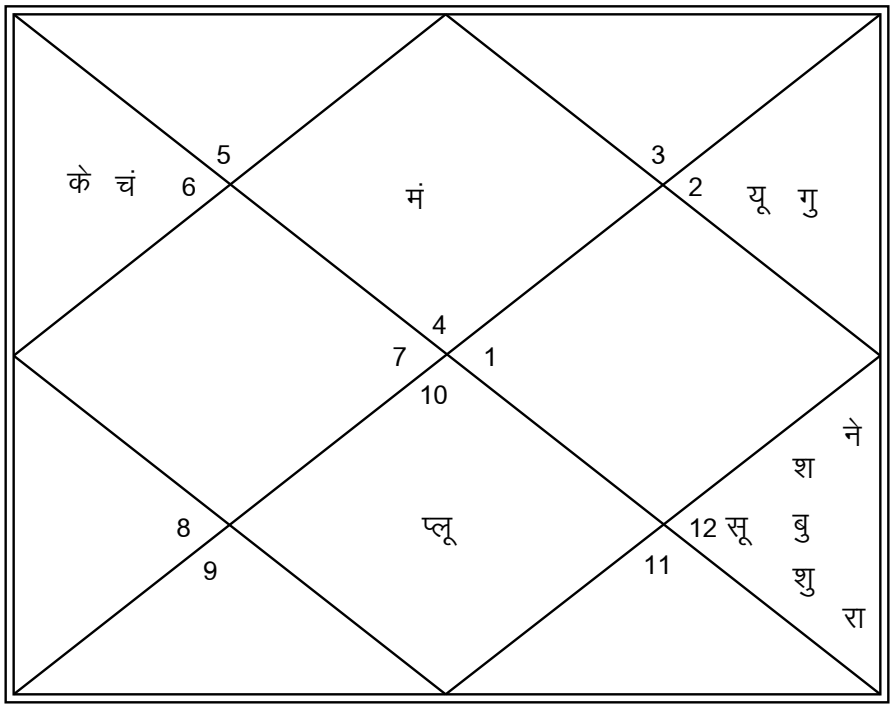

।। वर्षफल विवरण 2025 ।।

मुन्थाः 1 भाव

यह एक अनुकूल स्थिति है। आपको बेहतर कॅरिअर संभावनाएं और चतुर्मुख उन्नति के अवसर मिलेंगे। अपने विरोधियों को परास्त करने में आप सक्षम होंगे। आपका मान बढ़ेगा। आपको बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त होगा और आर्थिक दृष्टि से आप अधिक समृद्ध होंगे।

अप्रैल 11, 2025 – मई 02, 2025 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 1

इस अवधि में मिले जुले फल मिलेंगे। आपकी इच्छाओं के विपरीत परिणाम हो सकते हैं इसलिये फल के प्रति अधिक उत्साह दिखाने वाली प्रवृति पर नियंत्रण रखें। छोटी मोटी बीमारी या हल्की दुर्घटना होने की संभावना भी है। जोखिम उठाने या सट्टेबाजी के लिये यह समय श्रेयस्कर नहीं है। पारिवारिक झंझटों के कारण मानसिक शांति भंग हो सकती है।

मई 02, 2025 – जून 26, 2025 दशा राहू

राहू भाव संख्या 9

इस अवधि में आपको मिले जुले फल मिलेंगे। वैसे आप अपने व्यवसाय/व्यापार में अच्छा काम करेंगे। आप अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होंगे और एक बार हाथ में लेने के बाद काम छोड़ेंगे नहीं। आपका निश्चय दृढ़ रहेगा। लेकिन गुरूजनों और माता पिता से संबंध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। कभी कभी आप तर्क बुद्धि से इतना काम लेंगे कि मामले की तह तक ही न पहुंच पायेंगे। आपके व्यक्तित्व में अहंकार का प्रवेश हो जायेगा। आपके इस बर्ताव से आप जनप्रिय नहीं रह पायेंगे। अपनी अर्न्तदृष्टि से अपने आप को जांचने परखने का प्रयत्न करें।

जून 26, 2025 – अगस्त 14, 2025 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 11

इस अवधि मे आप काफी उत्साह सुख पूर्ण होंगे। यह समय बेहद अच्छा बीतेगा। विदेशियों या सुदूर स्थलों पर रहने वाले लोगों से आपके संबधित सौमनस्यपूर्ण रहेंगे। नये उद्यमों के साथ आपके सम्बंद्ध रहेंगे। भाई बहन भी इस अवधि में खुशहाल रहेंगे। यदि आप किसी प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में भाग ले रहें हैं तो अवश्य सफल होंगे। इस अवधि के दौरान आप समाधि इत्यादि में दिलचस्पी रखेंगे। आपकी स्पष्ट रूप से वृती दार्शनिक रहेगी।

अगस्त 14, 2025 – अक्टूबर 11, 2025 दशा शनि

शनि भाव संख्या 9

इस अवधि के दौरान आप खूब खुश रहेंगे। आपके प्रयास अच्छे परिणाम देना शुरू कर देंगे। सरकारी अफसरों, वरिष्ठ लोगों एवं माता पिता से संबंध अति मधुर रहेंगे। एक लम्बी यात्रा बहुत फायदेमंद रहेगी। आपके मित्र व सहयोगी आपकी पूरी सहायता करेंगे। आपका मन अध्यात्म और जीवन के उच्च दर्शन की ओर मुड़ जाएगा। नए व्यापार करने या नौकरी बदलने की पूरी संभावना है। विरोधी आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएगें। छोटी मोटी बीमारियां लगी रहेंगी।

।। वर्षफल विवरण 2025 ।।

अक्टूबर 11, 2025 – दिसम्बर 01, 2025 दशा बुध

बुध भाव संख्या 9

प्रभावशाली वाणी होने के कारण लोगों से आप अपनी बात मनवा लेते हैं। प्रसिद्ध व्यक्तियों के आप सम्पर्क में आयेंगे। आपकी ख्याति और प्रतिष्ठा सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। अपनी बुद्धिमत्ता के कारण आप प्रचुर लाभ पायेंगे। अपने व्यवसाय में आप अच्छा काम करेंगे। यात्रा से निश्चित लाभ प्राप्त करेंगे।

दिसम्बर 01, 2025 – दिसम्बर 23, 2025 दशा केतु

केतु भाव संख्या 3

आप अपने काम बुद्धिमानी से नहीं निपटायेंगे। वैसे इस पूरी अवधि में आप आशावादी रहेंगे। संचार द्वारा प्राप्त समाचार से लाभावत होंगे। अचानक यात्रा करने से भी अच्छे फल निकलेंगे। आमदनी में इजाफा होगा। पारिवारिक जीवन पर राहतकारी प्रभाव पड़ेगा। अगर पदोन्नति होने वाली है तो जैसी आप चाहेंगे वैसी ही होगी। मित्र मंडली बढ़ेगी। दिमाग का अध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। वास्तव में यह आपके लिये एक सौभाग्यशाली समय है।

दिसम्बर 23, 2025 – फरवरी 21, 2026 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 9

उच्च पदस्थ लोगों से आप सम्मान प्राप्त करेंगे और उनके कृपा भाजन रहेंगे। माता पिता और गुरूजनों से संबंध अति मधुर रहेंगे। इस अवधि के दौरान आप सुदूर प्रदेशों की यात्रा करेंगे। पारिवारिक जीवन आपके लिये सुखद एवम् अनुकूल रहेगा। आप के थोड़े प्रयत्न करने पर भी आपकी आमदनी बढ जायेगी। इस अवधि के दौरान विपरीत परिस्थितियों से सही तौर पर निपटने की आपकी क्षमता का विकास होगा। अगर आपकी पदोन्नति होने ही वाली है तो जैसी चाहेंगे वैसी ही होगी। आपका दिमाग धार्मिक क्रियाकलापों एवम् जीवन संबंधी उच्च दर्शन की ओर आकृष्ट रहेगा। हर लिहाज से यह समय अच्छा है।

फरवरी 21, 2026 – मार्च 12, 2026 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 9

इस अवधि में मिले जुले फल मिलेंगे। लम्बी यात्राएं सफल नहीं होंगी न सफलदायक ही सिद्ध होगी। उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त लोगों से भेंट होगी और उनकी कृपा रहेगी। माता पिता बीमार रह सकते हैं। धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण करेंगे। साख अच्छी रहने से काम भी खूब मिलेगा। रूपये पैसे के लिहाज से भी यह समय अच्छा है।

मार्च 12, 2026 – अप्रैल 11, 2026 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 3

इस अवधि में आपका आत्म विश्वास बढ़ा चढ़ा रहेगा। भाई बहिन भी खुशहाल रहेंगे। मां बाप से संबंध बहुत अच्छे रहेंगे। अगर नौकरी करते हैं तो पदोन्नति की संभावना है। स्थान परिवर्तन या व्यवसाय में बदलाव की भी संभावना है।

|| वर्षफल विवरण 2026 ||

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
11/4/1979	जन्म दिनांक	11/4/2026
18:30:0	जन्म समय	19:40:50
मकदमेकंल	जन्म दिन	शनिवार
Agra	जन्म स्थान	Agra
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 19	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 19
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 09 : 40	स्थानीय औसत समय	19 : 20 : 30
05 : 59 : 45	सूर्योदय	05 : 59 : 05
18 : 43 : 24	सूर्यास्त	18 : 43 : 45
टपतहव	लग्न	तुला
डम्त	लग्नस्वामी	शुक्र
टपतहव	राशि	मकर
डम्त	राशि स्वामी	शनि
भ्ैज|	नक्षत्र	श्रवण
डव्छ	नक्षत्र स्वामी	चंद्र
	योग	साध्य
टंभ्ज्	करण	गर
|तपमे	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मेष
023–34–01	अयनांश	024–13–25
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

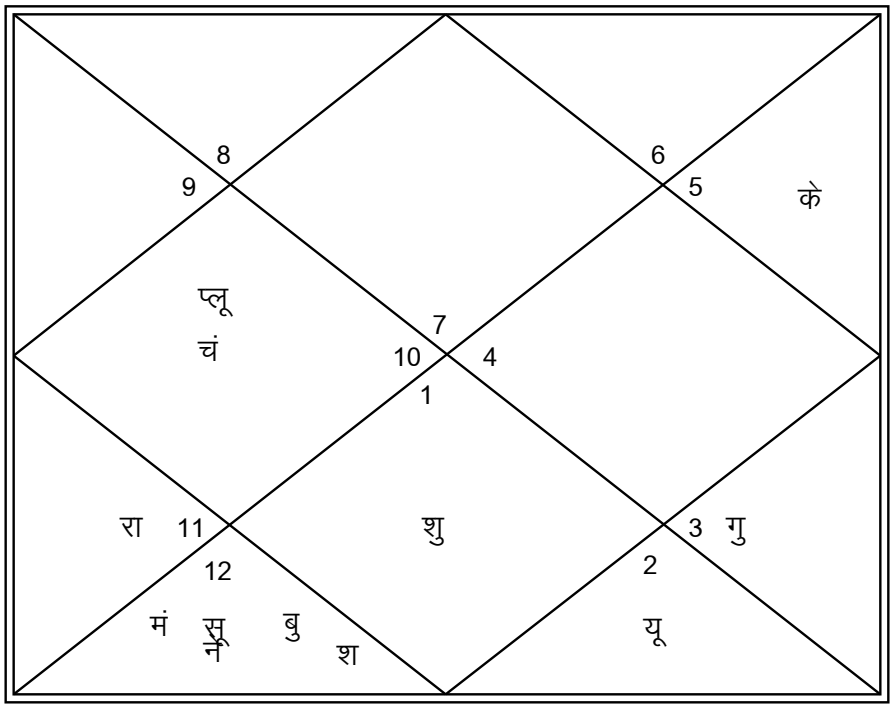

।। वर्षफल विवरण 2026 ।।

मुन्थाः 11 भाव

आप बेहतर स्वास्थ्य, लोकप्रियता, मित्रता व सुखद पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे। आपको उच्च प्रशासनिक अथवा राजकीय पदों से सहयोग मिलेगा। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी और आपकी समस्याओं का अंत होगा।

अप्रैल 11, 2026 – जून 05, 2026 दशा राहू

राहू भाव संख्या 5

सही निर्णय लेने की आपकी क्षमता और योग्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपने आस पास भ्रम का विश्व बना लेना चाहेंगे। झूठी आशाएं आपके लक्ष्य को भ्रमित कर देंगी। सट्टेबाजी की प्रवृति पर पूरा अंकुश लगाये। मित्रों से संबंध मधुर नहीं रहेंगे। किसी मुकदमेबाजी के चक्कर में अपने आपको न फंसायें। किसी के जमानती बनने की चेष्टा न करें। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें। फूड पाइजनिंग के कारण पेट के रोग उभर सकते हैं।

जून 05, 2026 – जुलाई 24, 2026 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 9

इस वर्ष यह अवधि आपके लिये सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होगी। आप प्रचुर सफलता और सम्मान प्राप्त करेंगे। इस अवधि का उपयोग आप मन को एकाग्र करने समाधि और योग क्रियाओं को करने के लिए भी कर सकते हैं। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र के किसी मुखिया से भी आपका सम्पर्क हो सकता है। अपने काम को पूरा करने के लिये आप में प्रचुर उत्साह और विश्वास रहेगा। परिवारिक माहौल से भी सहारा मिलेगा। लम्बी यात्रा सफलदायक सिद्ध होगी। परिवार में नये सदस्य की बढोत्तरी होगी।

जुलाई 24, 2026 – सितम्बर 20, 2026 दशा शनि

शनि भाव संख्या 6

आप अपने कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा काम करेंगे। नौकरी या व्यवसाय की परिस्थितियों में काफी सुधार आएगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। रोजमर्रा के जीवन में आप अत्यधिक स्फूर्तिवान महसूस करेंगे। विरोधियों की आपके सामने पड़ने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। आर्थिक रूप से यह बहुत अच्छा समय सिद्ध होगा। छोटी यात्राएं उपयोगी रहेंगी। परिवार का माहौल पूर्ण संतोषप्रद रहेगा। इस अवधि के मध्य में छोटी मोटी बीमारी होने की संभावना है जिस पर आपको थोड़ा बहुत ध्यान रखने की आवश्यकता है।

सितम्बर 20, 2026 – नवम्बर 10, 2026 दशा बुध

बुध भाव संख्या 6

खर्च नियंत्रण से बाहर हो जायेगा। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी रहेंगी। विरोधी प्रतिष्ठा बिगाड़ने की चेष्टा करेंगे। वैसे नौकरी के हालात में सुधार होगा लेकिन काम का बोझ बढ़ा चढ़ा रहेगा। इसके अलावा व्यर्थ के कामों में भी आप उलझे रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें और कटु न बोलें तथा दूसरों की आलोचना करने की प्रवृति को भी कम करें। पारिवारिक जीवन से तनाव मिलेगा। जहां तक संभव हो यात्रा से बचें।

।। वर्षफल विवरण 2026 ।।

नवम्बर 10, 2026 – दिसम्बर 02, 2026 दशा केतु

केतु भाव संख्या 11

अचानक परिस्थितियां आपके काफी अनुकूल होती जायेंगी। कुछ व्यापारिक सौदे आपको काफी लाभावत कर देंगे। मित्र और हितैषियों का पूरा सहयोग रहेगा। उच्च कोटि के शारीरिक या मांसल सुख आपको प्राप्त होंगे। अगर नौकरीपेशा हैं तो पदोन्नति प्राप्त करेंगे। इस अवधि में लम्बी यात्रा की भी प्रबल संभावना है। पारिवारिक जीवन संतोष प्रदान करेगा। सामाजिक क्षेत्र में आप प्रचुर प्रतिष्ठा और सम्मान के भागी होंगे।

दिसम्बर 02, 2026 – जनवरी 31, 2027 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 7

इस अवधि में आपका सौजन्यता पूर्ण व्यवहार रहेगा और आप मनमुटाव से बचेंगे। एक आनन्द दायक यात्रा की प्रबल संभावना है। स्त्री वर्ग का भी साथ रहेगा। संगति व अन्य ललित कलाओं सुगध एवम् सौन्दर्यपूर्ण वस्तुओं की ओर आपका झुकाव रहेगा। अपने व्यवसाय और व्यापार में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अपने प्रयत्नों से आय वृव्दि प्राप्त करेंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। छोटी मोटी बीमारियां हो सकती हैं। आपका मिलनसार स्वभाव होगा और कई लोगों के सम्पर्क में आयेंगे।

जनवरी 31, 2027 – फरवरी 19, 2027 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 6

इस अवधि में आप जो भी करेंगे उसमें सफल रहेंगें। सारी समस्याओं का समाधान होता रहेगा और आप सफलता पायेंगे। शत्रुओं को पराजित कर देंगे और वह आपको नुकसान नहीं पहुंचा पायेंगे। आपका काम सफल होगा और नौकरी करने के हालातों में सुधार भी होगा। प्रतिष्ठा एवम् पद वृद्धि की संभावना है। आपको मान्यता मिलेगी और पदोन्नति भी। सम्मान एवम् साख भी प्राप्त करेंगे। सभी हिसाब से यह एक सफलदायक समय रहेगा।

फरवरी 19, 2027 – मार्च 21, 2027 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 4

यह बहुत अच्छा समय है। आप सुखी और विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। विलास सामग्री पर भी खर्च करेंगे। मां बाप से संबंध बहुत मधुर रहेंगे। अगर नौकरी करते हैं तो पदोन्नति प्राप्त करेंगे। शत्रुओं पर विजय पायेंगे। आमदनी में काफी इजाफा होगा।

मार्च 21, 2027 – अप्रैल 11, 2027 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 6

इस अवधि में आप काफी सुखी रहेंगे। नौकरी के हालात सुधरेंगे। प्रचुर लाभ होने की संभावना है। पारिवारिक वातावरण भी सुखद रहेगा। आप अपनी अड़चनें और बाधाएं दूर करने और शत्रुओं का दमन करने के लिये चेष्टारत रहेंगे। कार इत्यादि चलाते समय सावधानी बरतें।

।। शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ।।

लग्न चक्र

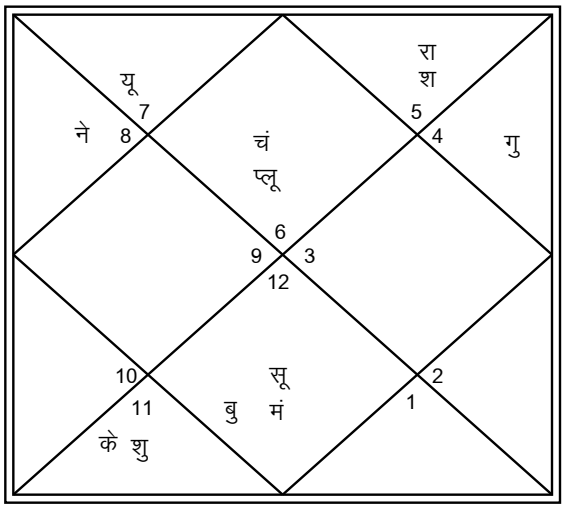

होरा–धन–सम्पत्ति

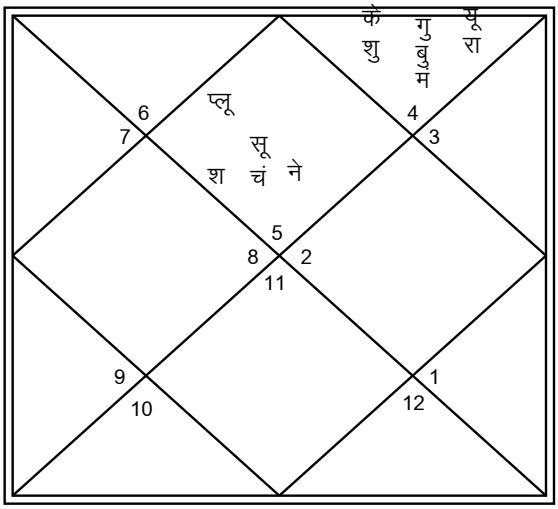

द्रेष्काण–भाई–बहन

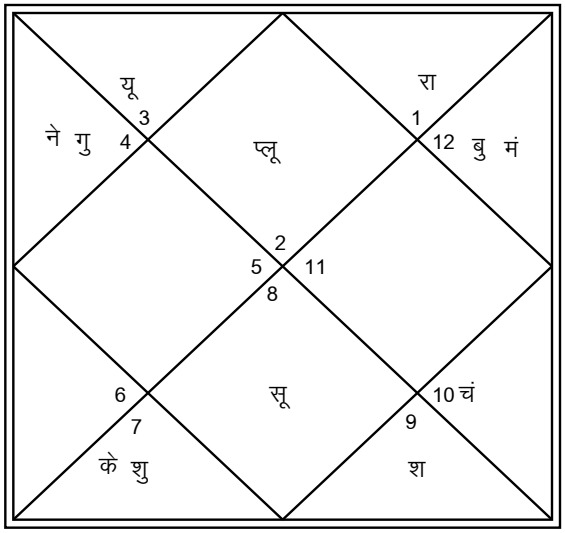

चतुर्थांश–भाग्य

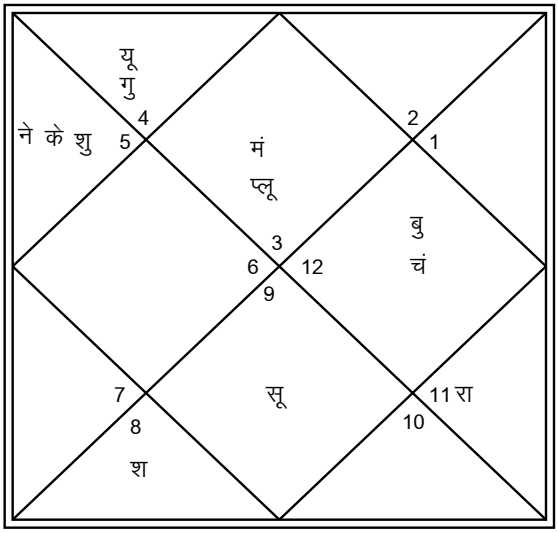

सप्तमांश–बच्चे

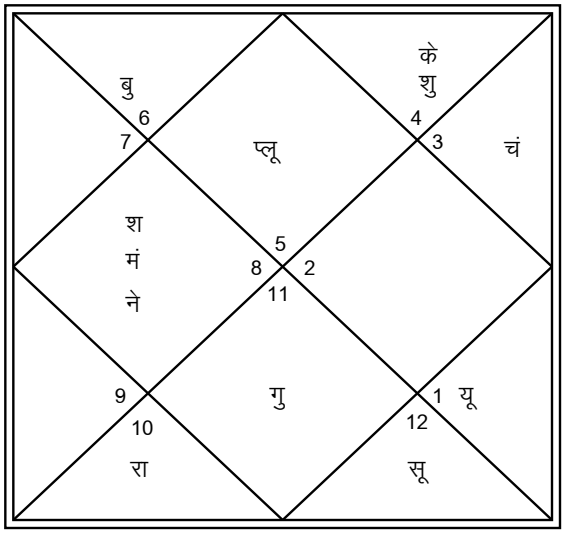

नवमांश–पति–पत्नी

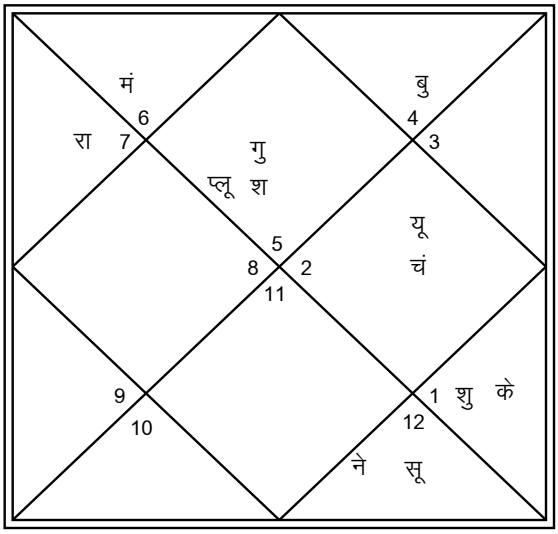

।। शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ।।

दशमांश–व्यवसाय

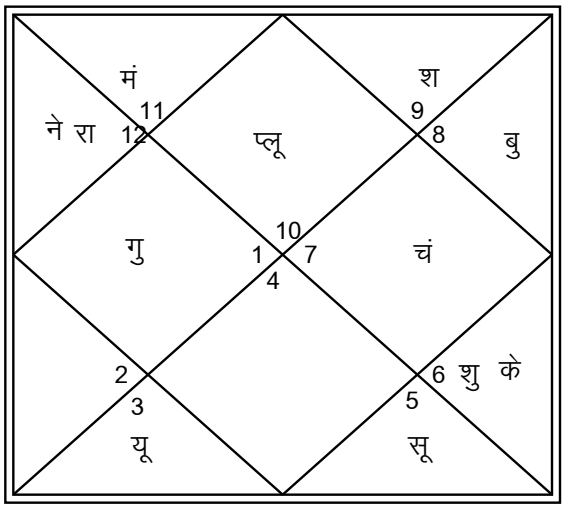

द्वादशांश–माता–पिता

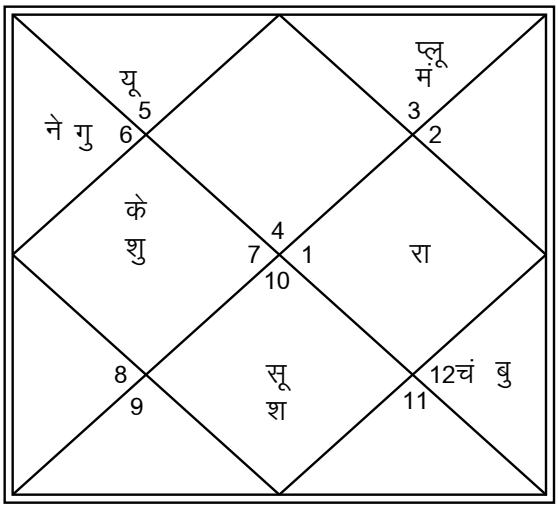

षोडशांश–वाहन

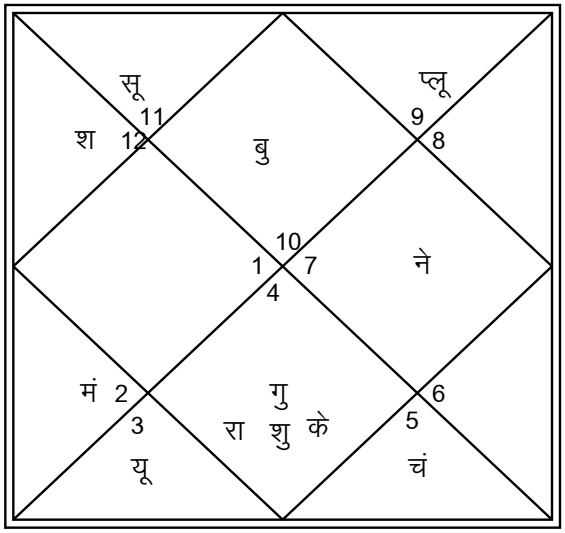

विंशांश–धार्मिक रुचि

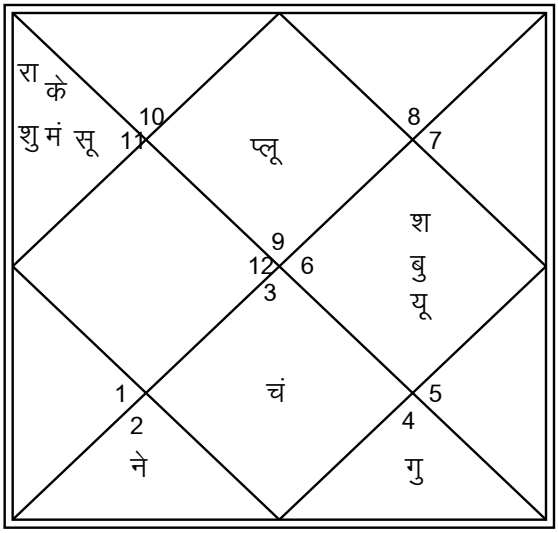

सप्तविंशाश–बल

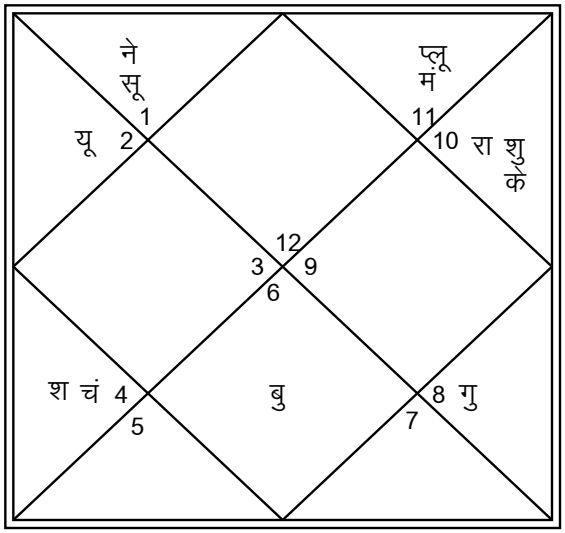

चतुर्विंशांश–शिक्षा

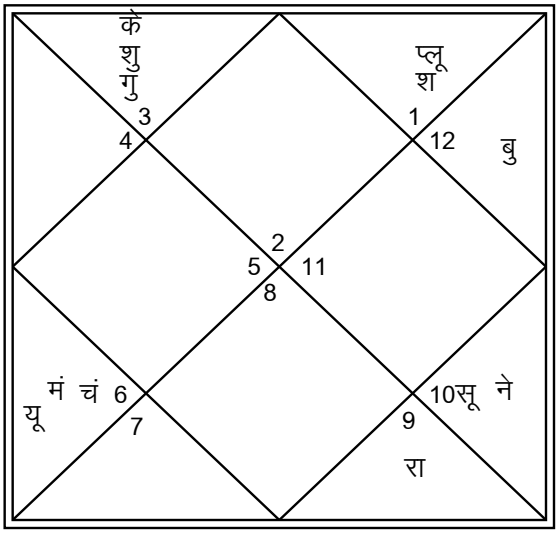

।। शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ।।

त्रिंशांश–दुर्भाग्य

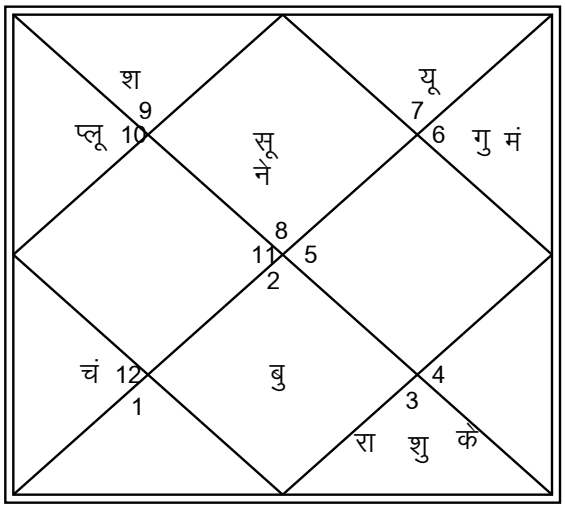

खवेदांश–शुभ फल

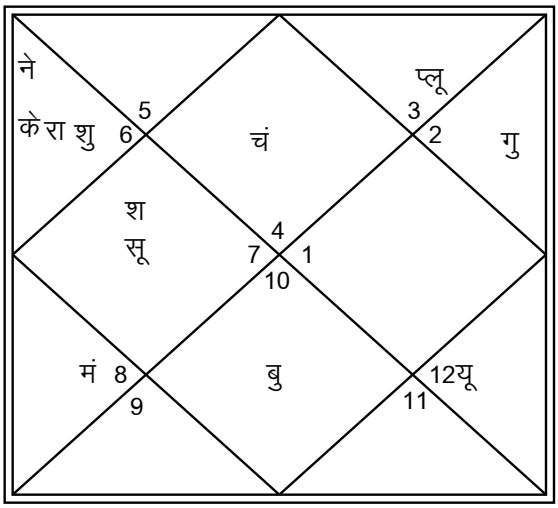

अक्षवेदांश–सामान्य जीवन

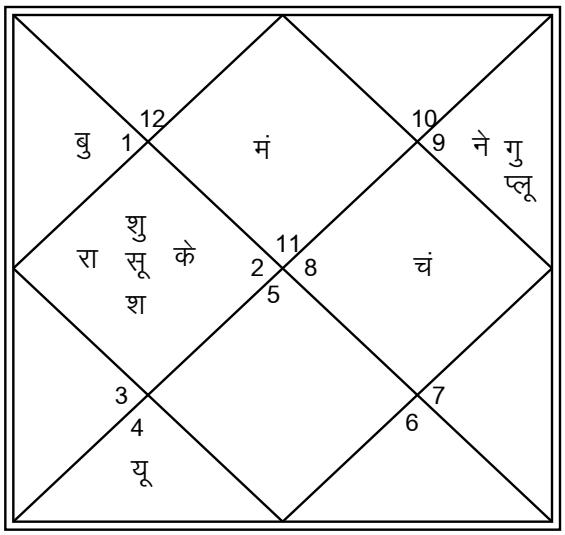

षष्टयंश–सामान्य जीवन

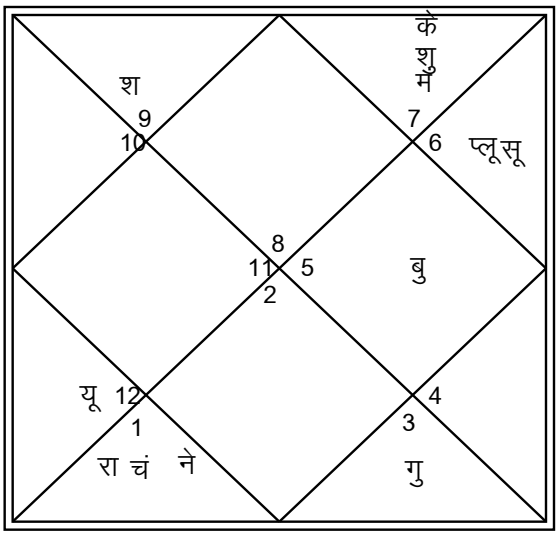

एस्ट्रोसेज शॉप
हमसे संपर्क करें +91 9560670006
+91 9911840126
+91 1204138503
वेब www.AstroSage.com
रत्न
रुद्राक्ष
मूर्तियां
पुस्तकें
जड़ी
परामर्श

|| मैत्री चक्र ||

नैसर्गिक मैत्री

	ॅन्छ	डव्छ	ड ाै	डम्ह	श्रन्व्ज	टम्छन्	ॅ ाज्छ
ॅन्छ	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
डव्छ	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
ड ाै	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
डम्ह	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
श्रन्व्ज	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
टम्छन्	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
ॅ ाज्छ	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	ॅन्छ	डव्छ	ड ाै	डम्ह	श्रन्व्ज	टम्छन्	ॅ ाज्छ
ॅन्छ	...	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
डव्छ	शत्रु	...	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
ड ाै	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
डम्ह	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु	मित्र	शत्रु
श्रन्व्ज	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु	मित्र
टम्छन्	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु
ॅ ाज्छ	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	...

पंचधा मैत्री

	ॅन्छ	डव्छ	ड ाै	डम्ह	श्रन्व्ज	टम्छन्	ॅ ाज्छ
ॅन्छ	...	सम	सम	शत्रु	सम	सम	अतिशत्रु
डव्छ	सम	...	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
ड ाै	सम	सम	...	अतिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु
डम्ह	सम	अतिशत्रु	शत्रु	...	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु
श्रन्व्ज	सम	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु	...	अतिशत्रु	मित्र
टम्छन्	सम	अतिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	...	सम
ॅ ाज्छ	अतिशत्रु	सम	अतिशत्रु	सम	मित्र	सम	...

।। षड्बल एवं भावबल तालिका ।।

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते है तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	55.83	15.73	46.02	4.01	59.73	48.49	38.07
सप्तवर्गज बल	69.38	71.25	58.12	52.5	93.75	108.75	67.5
ओजयुग्मरस्यांश बल	0	30	0	0	15	0	30
केन्द्र बल	60	60	60	60	30	15	15
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	185.2	176.98	179.15	116.51	213.48	187.24	165.57
कुल दिग्बल	30.38	26.48	24.52	7.47	33.48	41.3	13.73
नतोनंत बल	29.3	30.7	30.7	60	29.3	29.3	30.7
पक्ष बल	3.89	56.11	3.89	3.89	56.11	56.11	3.89
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	80.82	34.71	31.76	31.74	55.92	22.98	19.03
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	114.01	121.52	66.35	155.63	261.32	138.39	113.63
कुल चेष्टा बल	37.02	56.11	7.93	40.7	34.61	21.17	45.63
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	16.87	-18.69	14.76	3.79	-23.35	-1.46	0.84
कुल षड्बल	443.48	413.82	309.88	349.83	553.8	429.47	347.97
षड्बल (रुपस)	7.39	6.9	5.16	5.83	9.23	7.16	5.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	1.48	1.15	1.03	0.83	1.42	1.3	1.16
सापेक्षिक क्रम	1	5	6	7	2	3	4

भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	349.83	429.47	309.88	553.8	347.97	347.97	553.8	309.88	429.47	349.83	413.82	443.48
भाव दिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	-31.77	-32.62	7.99	37.65	48.74	26.45	54.54	0.23	-45.89	-48.26	-16.32	-29.25
कुल भाव बल	378.06	446.85	337.86	591.45	446.71	384.41	638.34	350.11	433.58	331.57	407.49	454.24
कुल भाव बल (रुपस में)	6.3	7.45	5.63	9.86	7.45	6.41	10.64	5.84	7.23	5.53	6.79	7.57
सापेक्षिक क्रम	9	4	11	2	5	8	1	10	6	12	7	3

|| केपी पद्धति ||

नाम	Punit Pandey			**सूर्योदय**	05. 59. 45	**दशा भोग्य**	SAT 2 Y 9 M 4 D
लिंग	Male	**रेखांश**	77.25.E	**तिथि**	पूर्णिमा	**सूर्यास्त**	18. 43. 24
दिनांक	11.4.1979	**अक्षांश**	28.40.N	**योग**		**करण**	विष्टि
दिन	बुधवार	**जन्म स्थान**	Agra	**लग्न**	कन्या	**लग्न स्वामी**	बुध
समय	18.30.0	**अयनांश**	023-28-38	**राशि**	कन्या	**राशि स्वामी**	बुध
साम्पातिक काल	07.26.14	**अयनांश नाम**	केपी	**नक्षत्र**	हस्त–2	**नक्षत्र स्वामी**	चंद्र

शासक ग्रह

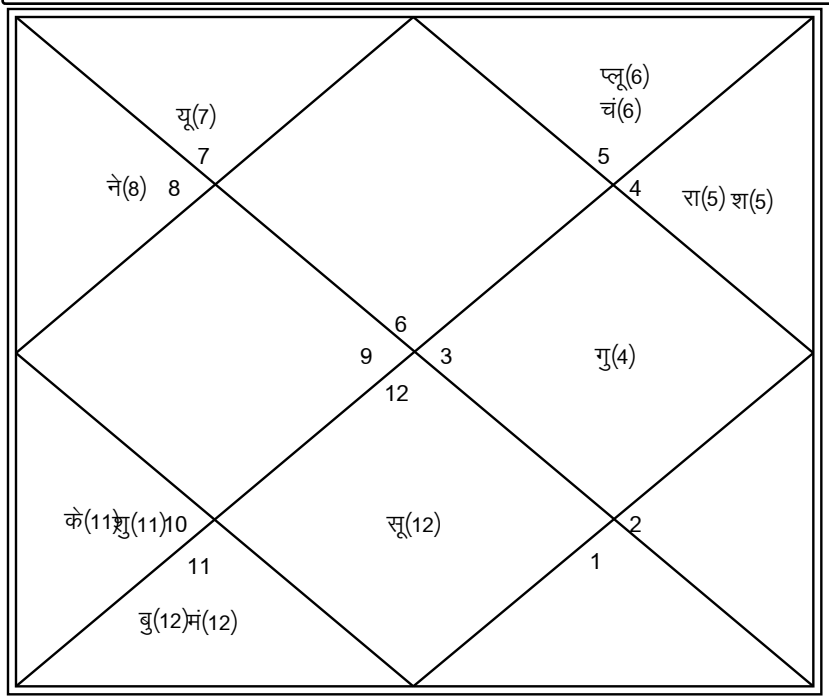

ग्रह	राशि स्वामी	नक्षत्र	सब स्वामी
लग्न	डम्त	ड|त	त|भ
चन्द्र	डम्त	डव्छ	ॅ|ज
दिन स्वामी		डम्त	

भाव स्थिति

भाव	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
1	175.27.56	डम्त	ड|त	त|भ	टम्छ
2	204.05.11	टम्छ	श्रन्च	डम्त	डम्त
3	234.39.40	ड|त	डम्त	त|भ	श्रन्च
4	266.27.00	श्रन्च	टम्छ	झम्ज	ॅ|ज
5	298.23.02	ॅ|ज	ड|त	ॅ|ज	डम्त
6	328.35.28	ॅ|ज	श्रन्च	टम्छ	डम्त
7	355.27.56	श्रन्च	डम्त	त|भ	टम्छ
8	024.05.11	ड|त	टम्छ	डम्त	डम्त
9	054.39.40	टम्छ	ड|त	त|भ	श्रन्च
10	086.27.00	डम्त	श्रन्च	झम्ज	डम्त
11	118.23.02	डव्छ	डम्त	ॅ|ज	डम्त
12	148.35.28	ॅन्छ	ॅन्छ	ड|त	त|भ

ग्रह स्थिति

ग्रह	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
सूर्य	357.34.46	श्रन्च	डम्त	श्रन्च	ड|त
चन्द्र	165.53.53	डम्त	डव्छ	ॅ|ज	ॅ|ज
मंगल	340.01.05	श्रन्च	ॅ|ज	टम्छ	डम्त
बुध	333.04.09	श्रन्च	श्रन्च	त|भ	डव्छ
गुरू	095.54.47	डव्छ	ॅ|ज	डम्त	टम्छ
शुक्र	322.33.46	ॅ|ज	श्रन्च	ॅ|ज	टम्छ
शनि	134.17.20	ॅन्छ	टम्छ	टम्छ	त|भ
राहू	142.25.17	ॅन्छ	टम्छ	ॅ|ज	डम्त
केतु	322.25.17	ॅ|ज	श्रन्च	ॅ|ज	झम्ज
अरूण	206.40.06	टम्छ	श्रन्च	टम्छ	टम्छ
वरूण	236.53.40	ड|त	डम्त	श्रन्च	झम्ज
यम	174.16.58	डम्त	ड|त	त|भ	त|भ

घर के कारक ग्रह

भाव	ग्रह
1	सू बु
2	शु श रा
3	मं
4	बु गु शु के
5	मं गु शु श रा के
6	सू मं बु गु श
7	सू बु गु शु के
8	मं
9	शु श रा
10	सू बु गु शु के
11	चं मं गु श रा
12	सू चं

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1 6 7 10 12
चन्द्र	11 12
मंगल	3 5 6 8 11
बुध	1 4 6 7 10
गुरू	4 5 6 7 10 11
शुक्र	2 4 5 7 9 10
शनि	2 5 6 9 11
राहू	2 5 9 11
केतु	4 5 7 10

डव्छ –10 ल्मंते 11/ 4/79 से 3/12/84	
डव्छ	00/00/00
ड|त	00/00/00
त|भ	00/00/00
श्रन्च	3/3/79
ॅ|ज	3/10/80
डम्त	3/3/82
झम्ज	3/10/82
टम्छ	3/6/84
ॅन्छ	3/12/84

ड|त –7 ल्मंते 3/12/84 से 3/12/91	
ड|त	30/4/85
त|भ	18/5/86
श्रन्च	24/4/87
ॅ|ज	3/6/88
डम्त	30/5/89
झम्ज	27/10/89
टम्छ	27/12/90
ॅन्छ	3/5/91
डव्छ	3/12/91

त|भ –18 ल्मंते 3/12/91 से 3/12/09	
त|भ	15/8/94
श्रन्च	9/1/97
ॅ|ज	15/11/99
डम्त	3/6/02
झम्ज	21/6/03
टम्छ	21/6/06
ॅन्छ	15/5/07
डव्छ	15/11/08
ड|त	3/12/09

श्रन्च –16 ल्मंते 3/12/09 से 3/12/25	
श्रन्च	21/1/12
ॅ|ज	3/8/14
डम्त	9/11/16
झम्ज	15/10/17
टम्छ	15/6/20
ॅन्छ	3/4/21
डव्छ	3/8/22
ड|त	9/7/23
त|भ	3/12/25

ॅ|ज –19 ल्मंते 3/12/25 से 3/12/44	
ॅ|ज	6/12/28
डम्त	15/8/31
झम्ज	24/9/32
टम्छ	24/11/35
ॅन्छ	6/11/36
डव्छ	6/6/38
ड|त	15/7/39
त|भ	21/5/42
श्रन्च	3/12/44

डम्त –17 ल्मंते 3/12/44 से 3/12/61	
डम्त	30/4/47
झम्ज	27/4/48
टम्छ	27/2/51
ॅन्छ	3/1/52
डव्छ	3/6/53
ड|त	30/5/54
त|भ	18/12/56
श्रन्च	24/3/59
ॅ|ज	3/12/61

झम्ज –7 ल्मंते 3/12/61 से 3/12/68	
झम्ज	30/4/62
टम्छ	30/6/63
ॅन्छ	6/11/63
डव्छ	6/6/64
ड|त	3/11/64
त|भ	21/11/65
श्रन्च	27/10/66
ॅ|ज	6/12/67
डम्त	3/12/68

टम्छ –20 ल्मंते 3/12/68 से 3/12/88	
टम्छ	3/4/72
ॅन्छ	3/4/73
डव्छ	3/12/74
ड|त	3/2/76
त|भ	3/2/79
श्रन्च	3/10/81
ॅ|ज	3/12/84
डम्त	3/10/87
झम्ज	3/12/88

ॅन्छ –6 ल्मंते 3/12/88 से 3/12/94	
ॅन्छ	21/3/89
डव्छ	21/9/89
ड|त	27/1/90
त|भ	21/12/90
श्रन्च	9/10/91
ॅ|ज	21/9/92
डम्त	27/7/93
झम्ज	3/12/93
टम्छ	3/12/94

विंशोत्तरी दशा

दशा भोग्यः SAT 2 Y 9 M 4 D

अयनांश नामः लाहिरी

चंद्र — शनि 11/ 4/79 से 3/10/80	
शनि	3/6/79
बुध	24/8/79
केतु	27/9/79
शुक्र	2/1/80
सूर्य	1/2/80
चंद्र	18/3/80
मंगल	22/4/80
राहु	17/7/80
गुरू	3/10/80

चंद्र — बुध 3/10/80 से 3/ 3/82	
बुध	15/12/80
केतु	15/1/81
शुक्र	10/4/81
सूर्य	6/5/81
चंद्र	18/6/81
मंगल	18/7/81
राहु	4/10/81
गुरू	12/12/81
शनि	3/3/82

चंद्र — केतु 3/ 3/82 से 3/10/82	
केतु	15/3/82
शुक्र	20/4/82
सूर्य	1/5/82
चंद्र	18/5/82
मंगल	1/6/82
राहु	2/7/82
गुरू	30/7/82
शनि	3/9/82
बुध	3/10/82

चंद्र — शुक्र 3/10/82 से 3/ 6/84	
शुक्र	13/1/83
सूर्य	13/2/83
चंद्र	3/4/83
मंगल	8/5/83
राहु	8/8/83
गुरू	28/10/83
शनि	3/2/84
बुध	28/4/84
केतु	3/6/84

चंद्र — सूर्य 3/ 6/84 से 3/12/84	
सूर्य	12/6/84
चंद्र	27/6/84
मंगल	8/7/84
राहु	5/8/84
गुरू	29/8/84
शनि	27/9/84
बुध	23/10/84
केतु	3/11/84
शुक्र	3/12/84

मंगल — मंगल 3/12/84 से 30/ 4/85	
मंगल	12/12/84
राहु	4/1/85
गुरू	23/1/85
शनि	17/2/85
बुध	8/3/85
केतु	16/3/85
शुक्र	11/4/85
सूर्य	18/4/85
चंद्र	30/4/85

मंगल — राहु 30/ 4/85 से 18/ 5/86	
राहु	27/6/85
गुरू	17/8/85
शनि	17/10/85
बुध	11/12/85
केतु	3/1/86
शुक्र	6/3/86
सूर्य	25/3/86
चंद्र	26/4/86
मंगल	18/5/86

मंगल — गुरू 18/ 5/86 से 24/ 4/87	
गुरू	3/7/86
शनि	26/8/86
बुध	14/10/86
केतु	3/11/86
शुक्र	29/12/86
सूर्य	16/1/87
चंद्र	14/2/87
मंगल	4/3/87
राहु	24/4/87

मंगल — शनि 24/ 4/87 से 3/ 6/88	
शनि	27/6/87
बुध	24/8/87
केतु	17/9/87
शुक्र	24/11/87
सूर्य	14/12/87
चंद्र	17/1/88
मंगल	10/2/88
राहु	10/4/88
गुरू	3/6/88

मंगल — बुध 3/ 6/88 से 30/ 5/89	
बुध	24/7/88
केतु	15/8/88
शुक्र	14/10/88
सूर्य	2/11/88
चंद्र	2/12/88
मंगल	23/12/88
राहु	16/2/89
गुरू	4/4/89
शनि	30/5/89

मंगल — केतु 30/ 5/89 से 27/10/89	
केतु	9/6/89
शुक्र	3/7/89
सूर्य	11/7/89
चंद्र	23/7/89
मंगल	1/8/89
राहु	24/8/89
गुरू	13/9/89
शनि	6/10/89
बुध	27/10/89

मंगल — शुक्र 27/10/89 से 27/12/90	
शुक्र	7/1/90
सूर्य	28/1/90
चंद्र	3/3/90
मंगल	28/3/90
राहु	1/6/90
गुरू	27/7/90
शनि	3/10/90
बुध	3/12/90
केतु	27/12/90

मंगल — सूर्य 27/12/90 से 3/ 5/91	
सूर्य	4/1/91
चंद्र	14/1/91
मंगल	21/1/91
राहु	10/2/91
गुरू	27/2/91
शनि	17/3/91
बुध	5/4/91
केतु	12/4/91
शुक्र	3/5/91

मंगल — चंद्र 3/ 5/91 से 3/12/91	
चंद्र	21/5/91
मंगल	3/6/91
राहु	4/7/91
गुरू	2/8/91
शनि	6/9/91
बुध	5/10/91
केतु	18/10/91
शुक्र	23/11/91
सूर्य	3/12/91

राहु — राहु 3/12/91 से 15/ 8/94	
राहु	29/4/92
गुरू	9/9/92
शनि	13/2/93
बुध	30/6/93
केतु	27/8/93
शुक्र	9/2/94
सूर्य	28/3/94
चंद्र	19/6/94
मंगल	15/8/94

विंशोत्तरी दशा

दशा भोग्यः SAT 2 Y 9 M 4 D

अयनांश नामः लाहिरी

राहु — गुरू 15/ 8/94 से 9/ 1/97	
गुरू	10/12/94
शनि	27/4/95
बुध	30/8/95
केतु	20/10/95
शुक्र	14/3/96
सूर्य	27/4/96
चंद्र	9/7/96
मंगल	30/8/96
राहु	9/1/97

राहु — शनि 9/ 1/97 से 15/11/99	
शनि	22/6/97
बुध	17/11/97
केतु	17/1/98
शुक्र	8/7/98
सूर्य	29/8/98
चंद्र	25/11/98
मंगल	25/1/99
राहु	28/6/99
गुरू	15/11/99

राहु — बुध 15/11/99 से 3/ 6/02	
बुध	25/3/00
केतु	19/5/00
शुक्र	22/10/00
सूर्य	8/12/00
चंद्र	24/2/01
मंगल	18/4/01
राहु	5/9/01
गुरू	8/1/02
शनि	3/6/02

राहु — केतु 3/ 6/02 से 21/ 6/03	
केतु	25/6/02
शुक्र	28/8/02
सूर्य	17/9/02
चंद्र	19/10/02
मंगल	11/11/02
राहु	7/1/03
गुरू	28/2/03
शनि	28/4/03
बुध	21/6/03

राहु — शुक्र 21/ 6/03 से 21/ 6/06	
शुक्र	21/12/03
सूर्य	15/2/04
चंद्र	15/5/04
मंगल	18/7/04
राहु	30/12/04
गुरू	24/5/05
शनि	15/11/05
बुध	18/4/06
केतु	21/6/06

राहु — सूर्य 21/ 6/06 से 15/ 5/07	
सूर्य	7/7/06
चंद्र	4/8/06
मंगल	23/8/06
राहु	12/10/06
गुरू	25/11/06
शनि	16/1/07
बुध	2/3/07
केतु	21/3/07
शुक्र	15/5/07

राहु — चंद्र 15/ 5/07 से 15/11/08	
चंद्र	30/6/07
मंगल	2/8/07
राहु	23/10/07
गुरू	5/1/08
शनि	30/3/08
बुध	17/6/08
केतु	18/7/08
शुक्र	18/10/08
सूर्य	15/11/08

राहु — मंगल 15/11/08 से 3/12/09	
मंगल	7/12/08
राहु	4/2/09
गुरू	24/3/09
शनि	24/5/09
बुध	18/7/09
केतु	10/8/09
शुक्र	13/10/09
सूर्य	2/11/09
चंद्र	3/12/09

गुरू — गुरू 3/12/09 से 21/ 1/12	
गुरू	16/3/10
शनि	17/7/10
बुध	6/11/10
केतु	21/12/10
शुक्र	29/4/11
सूर्य	7/6/11
चंद्र	11/8/11
मंगल	26/9/11
राहु	21/1/12

गुरू — शनि 21/ 1/12 से 3/ 8/14	
शनि	16/6/12
बुध	25/10/12
केतु	18/12/12
शुक्र	20/5/13
सूर्य	6/7/13
चंद्र	22/9/13
मंगल	15/11/13
राहु	2/4/14
गुरू	3/8/14

गुरू — बुध 3/ 8/14 से 9/11/16	
बुध	29/11/14
केतु	16/1/15
शुक्र	2/6/15
सूर्य	13/7/15
चंद्र	21/9/15
मंगल	9/11/15
राहु	11/3/16
गुरू	30/6/16
शनि	9/11/16

गुरू — केतु 9/11/16 से 15/10/17	
केतु	29/11/16
शुक्र	25/1/17
सूर्य	12/2/17
चंद्र	10/3/17
मंगल	29/3/17
राहु	20/5/17
गुरू	4/7/17
शनि	28/8/17
बुध	15/10/17

गुरू — शुक्र 15/10/17 से 15/ 6/20	
शुक्र	25/3/18
सूर्य	13/5/18
चंद्र	3/8/18
मंगल	29/9/18
राहु	23/2/19
गुरू	1/7/19
शनि	3/12/19
बुध	19/4/20
केतु	15/6/20

गुरू — सूर्य 15/ 6/20 से 3/ 4/21	
सूर्य	30/6/20
चंद्र	24/7/20
मंगल	10/8/20
राहु	24/9/20
गुरू	2/11/20
शनि	18/12/20
बुध	28/1/21
केतु	15/2/21
शुक्र	3/4/21

गुरू — चंद्र 3/ 4/21 से 3/ 8/22	
चंद्र	13/5/21
मंगल	11/6/21
राहु	23/8/21
गुरू	27/10/21
शनि	13/1/22
बुध	21/3/22
केतु	19/4/22
शुक्र	9/7/22
सूर्य	3/8/22

विंशोत्तरी दशा

दशा भोग्यः SAT 2 Y 9 M 4 D

अयनांश नामः लाहिरी

गुरू — चंद्र 3/ 4/21 से 3/ 8/22	
चंद्र	13/ 5/21
मंगल	11/ 6/21
राहु	23/ 8/21
गुरू	27/10/21
शनि	13/ 1/22
बुध	21/ 3/22
केतु	19/ 4/22
शुक्र	9/ 7/22
सूर्य	3/ 8/22

गुरू — मंगल 3/ 8/22 से 9/ 7/23	
मंगल	23/ 8/22
राहु	13/10/22
गुरू	28/11/22
शनि	21/ 1/23
बुध	9/ 3/23
केतु	28/ 3/23
शुक्र	24/ 5/23
सूर्य	11/ 6/23
चंद्र	9/ 7/23

गुरू — राहु 9/ 7/23 से 3/12/25	
राहु	19/11/23
गुरू	14/ 3/24
शनि	1/ 8/24
बुध	3/12/24
केतु	24/ 1/25
शुक्र	18/ 6/25
सूर्य	1/ 8/25
चंद्र	13/10/25
मंगल	3/12/25

शनि — शनि 3/12/25 से 6/12/28	
शनि	25/ 5/26
बुध	28/10/26
केतु	1/ 1/27
शुक्र	2/ 7/27
सूर्य	26/ 8/27
चंद्र	26/11/27
मंगल	29/ 1/28
राहु	12/ 7/28
गुरू	6/12/28

शनि — बुध 6/12/28 से 15/ 8/31	
बुध	24/ 4/29
केतु	20/ 6/29
शुक्र	2/12/29
सूर्य	20/ 1/30
चंद्र	11/ 4/30
मंगल	7/ 6/30
राहु	3/11/30
गुरू	12/ 3/31
शनि	15/ 8/31

शनि — केतु 15/ 8/31 से 24/ 9/32	
केतु	9/ 9/31
शुक्र	15/11/31
सूर्य	5/12/31
चंद्र	8/ 1/32
मंगल	1/ 2/32
राहु	1/ 4/32
गुरू	25/ 5/32
शनि	28/ 7/32
बुध	24/ 9/32

शनि — शुक्र 24/ 9/32 से 24/11/35	
शुक्र	4/ 4/33
सूर्य	1/ 6/33
चंद्र	6/ 9/33
मंगल	13/11/33
राहु	4/ 5/34
गुरू	6/10/34
शनि	6/ 4/35
बुध	18/ 9/35
केतु	24/11/35

शनि — सूर्य 24/11/35 से 6/11/36	
सूर्य	11/12/35
चंद्र	10/ 1/36
मंगल	30/ 1/36
राहु	21/ 3/36
गुरू	7/ 5/36
शनि	1/ 7/36
बुध	19/ 8/36
केतु	9/ 9/36
शुक्र	6/11/36

शनि — चंद्र 6/11/36 से 6/ 6/38	
चंद्र	24/12/36
मंगल	27/ 1/37
राहु	22/ 4/37
गुरू	8/ 7/37
शनि	9/10/37
बुध	29/12/37
केतु	3/ 2/38
शुक्र	8/ 5/38
सूर्य	6/ 6/38

शनि — मंगल 6/ 6/38 से 15/ 7/39	
मंगल	30/ 6/38
राहु	29/ 8/38
गुरू	23/10/38
शनि	26/12/38
बुध	22/ 2/39
केतु	16/ 3/39
शुक्र	22/ 5/39
सूर्य	12/ 6/39
चंद्र	15/ 7/39

शनि — राहु 15/ 7/39 से 21/ 5/42	
राहु	19/12/39
गुरू	6/ 5/40
शनि	18/10/40
बुध	14/ 3/41
केतु	14/ 5/41
शुक्र	5/11/41
सूर्य	26/12/41
चंद्र	21/ 3/42
मंगल	21/ 5/42

शनि — गुरू 21/ 5/42 से 3/12/44	
गुरू	23/ 9/42
शनि	17/ 2/43
बुध	26/ 6/43
केतु	20/ 8/43
शुक्र	22/ 1/44
सूर्य	7/ 3/44
चंद्र	23/ 5/44
मंगल	16/ 7/44
राहु	3/12/44

बुध — बुध 3/12/44 से 30/ 4/47	
बुध	6/ 4/45
केतु	27/ 5/45
शुक्र	21/10/45
सूर्य	4/12/45
चंद्र	17/ 2/46
मंगल	7/ 4/46
राहु	17/ 8/46
गुरू	13/12/46
शनि	30/ 4/47

बुध — केतु 30/ 4/47 से 27/ 4/48	
केतु	21/ 5/47
शुक्र	21/ 7/47
सूर्य	8/ 8/47
चंद्र	8/ 9/47
मंगल	29/ 9/47
राहु	23/11/47
गुरू	10/ 1/48
शनि	7/ 3/48
बुध	27/ 4/48

बुध — शुक्र 27/ 4/48 से 27/ 2/51	
शुक्र	17/10/48
सूर्य	8/12/48
चंद्र	3/ 3/49
मंगल	3/ 5/49
राहु	6/10/49
गुरू	22/ 2/50
शनि	3/ 8/50
बुध	28/12/50
केतु	27/ 2/51

विंशोत्तरी दशा

दशा भोग्यः SAT 2 Y 9 M 4 D

अयनांश नामः लाहिरी

बुध — चंद्र 3/ 1/52 से 3/ 6/53	
चंद्र	16/ 2/52
मंगल	15/ 3/52
राहु	2/ 6/52
गुरू	10/ 8/52
शनि	1/11/52
बुध	13/ 1/53
केतु	13/ 2/53
शुक्र	8/ 5/53
सूर्य	3/ 6/53

बुध — मंगल 3/ 6/53 से 30/ 5/54	
मंगल	24/ 6/53
राहु	18/ 8/53
गुरू	5/10/53
शनि	2/12/53
बुध	22/ 1/54
केतु	13/ 2/54
शुक्र	13/ 4/54
सूर्य	30/ 4/54
चंद्र	30/ 5/54

बुध — राहु 30/ 5/54 से 18/12/56	
राहु	18/10/54
गुरू	20/ 2/55
शनि	16/ 7/55
बुध	26/11/55
केतु	19/ 1/56
शुक्र	22/ 6/56
सूर्य	8/ 8/56
चंद्र	25/10/56
मंगल	18/12/56

बुध — गुरू 18/12/56 से 24/ 3/59	
गुरू	7/ 4/57
शनि	16/ 8/57
बुध	12/12/57
केतु	29/ 1/58
शुक्र	15/ 6/58
सूर्य	26/ 7/58
चंद्र	4/10/58
मंगल	22/11/58
राहु	24/ 3/59

बुध — शनि 24/ 3/59 से 3/12/61	
शनि	28/ 8/59
बुध	15/ 1/60
केतु	11/ 3/60
शुक्र	23/ 8/60
सूर्य	11/10/60
चंद्र	2/ 1/61
मंगल	1/ 3/61
राहु	24/ 7/61
गुरू	3/12/61

।। योगिनी दशा ।।

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	26. 6.77
अंत	16.10.83
सं	26. 6.77
मं	15. 9.77
पिं	25. 2.78
ध	25.10.78
भ्र	14. 9.79
भद्रि	24.10.80
उल	23. 2.82
सि	16.10.83

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	16.10.83
अंत	16.10.84
मं	22. 9.83
पिं	12.10.83
ध	12.11.83
भ्र	22.12.83
भद्रि	11. 2.84
उल	11. 4.84
सि	21. 6.84
सं	16.10.84

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	16.10.84
अंत	16.10.86
पिं	20.10.84
ध	20.12.84
भ्र	12. 3.85
भद्रि	22. 6.85
उल	22.10.85
सि	14. 3.86
सं	24. 8.86
मं	16.10.86

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	16.10.86
अंत	16.10.89
ध	13.12.86
भ्र	13. 4.87
भद्रि	13. 9.87
उल	13. 3.88
सि	13.10.88
सं	13. 6.89
मं	13. 7.89
पिं	16.10.89

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	16.10.89
अंत	16.10.93
भ्र	23. 2.90
भद्रि	12. 9.90
उल	12. 5.91
सि	22. 2.92
सं	11. 1.93
मं	21. 2.93
पिं	11. 5.93
ध	16.10.93

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	16.10.93
अंत	16.10.98
भद्रि	21. 5.94
उल	21. 3.95
सि	12. 3.96
सं	22. 4.97
मं	11. 6.97
पिं	21. 9.97
ध	21. 2.98
भ्र	16.10.98

उल 6 वर्ष	
आरम्भ	16.10.98
अंत	16.10.04
उल	10. 9.99
सि	9.11.00
सं	11. 3.02
मं	11. 5.02
पिं	11. 9.02
ध	11. 3.03
भ्र	11.11.03
भद्रि	16.10.04

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	16.10.04
अंत	16.10.11
सि	21. 1.06
सं	10. 8.07
मं	20.10.07
पिं	11. 3.08
ध	11.10.08
भ्र	21. 7.09
भद्रि	11. 7.10
उल	16.10.11

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	16.10.11
अंत	16.10.19
सं	21. 6.13
मं	10. 9.13
पिं	20. 2.14
ध	20.10.14
भ्र	9. 9.15
भद्रि	19.10.16
उल	18. 2.18
सि	16.10.19

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	16.10.19
अंत	16.10.20
मं	17. 9.19
पिं	7.10.19
ध	7.11.19
भ्र	17.12.19
भद्रि	6. 2.20
उल	6. 4.20
सि	16. 6.20
सं	16.10.20

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	16.10.20
अंत	16.10.22
पिं	15.10.20
ध	15.12.20
भ्र	7. 3.21
भद्रि	17. 6.21
उल	17.10.21
सि	9. 3.22
सं	19. 8.22
मं	16.10.22

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	16.10.22
अंत	16.10.25
ध	8.12.22
भ्र	8. 4.23
भद्रि	8. 9.23
उल	8. 3.24
सि	8.10.24
सं	8. 6.25
मं	8. 7.25
पिं	16.10.25

।। योगिनी दशा ।।

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	16.10.25
अंत	16.10.29
भ्र	18. 2.26
भद्रि	7. 9.26
उल	7. 5.27
सि	17. 2.28
सं	6. 1.29
मं	16. 2.29
पिं	6. 5.29
ध	16.10.29

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	16.10.29
अंत	16.10.34
भद्रि	16. 5.30
उल	16. 3.31
सि	7. 3.32
सं	17. 4.33
मं	6. 6.33
पिं	16. 9.33
ध	16. 2.34
भ्र	16.10.34

उल 6 वर्ष	
आरम्भ	16.10.34
अंत	16.10.40
उल	5. 9.35
सि	4.11.36
सं	6. 3.38
मं	6. 5.38
पिं	6. 9.38
ध	6. 3.39
भ्र	6.11.39
भद्रि	16.10.40

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	16.10.40
अंत	16.10.47
सि	16. 1.42
सं	5. 8.43
मं	15.10.43
पिं	6. 3.44
ध	6.10.44
भ्र	16. 7.45
भद्रि	6. 7.46
उल	16.10.47

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	16.10.47
अंत	16.10.55
सं	16. 6.49
मं	5. 9.49
पिं	15. 2.50
ध	15.10.50
भ्र	4. 9.51
भद्रि	14.10.52
उल	13. 2.54
सि	16.10.55

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	16.10.55
अंत	16.10.56
मं	12. 9.55
पिं	2.10.55
ध	2.11.55
भ्र	12.12.55
भद्रि	1. 2.56
उल	1. 4.56
सि	11. 6.56
सं	16.10.56

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	16.10.56
अंत	16.10.58
पिं	11.10.56
ध	11.12.56
भ्र	3. 3.57
भद्रि	13. 6.57
उल	13.10.57
सि	5. 3.58
सं	15. 8.58
मं	16.10.58

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	16.10.58
अंत	16.10.61
ध	4.12.58
भ्र	4. 4.59
भद्रि	4. 9.59
उल	4. 3.60
सि	4.10.60
सं	4. 6.61
मं	4. 7.61
पिं	16.10.61

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	16.10.61
अंत	16.10.65
भ्र	14. 2.62
भद्रि	3. 9.62
उल	3. 5.63
सि	13. 2.64
सं	2. 1.65
मं	12. 2.65
पिं	2. 5.65
ध	16.10.65

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	16.10.65
अंत	16.10.70
भद्रि	12. 5.66
उल	12. 3.67
सि	3. 3.68
सं	13. 4.69
मं	2. 6.69
पिं	12. 9.69
ध	12. 2.70
भ्र	16.10.70

उल 6 वर्ष	
आरम्भ	16.10.70
अंत	16.10.76
उल	1. 9.71
सि	31.10.72
सं	2. 3.74
मं	2. 5.74
पिं	2. 9.74
ध	2. 3.75
भ्र	2.11.75
भद्रि	16.10.76

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	16.10.76
अंत	16.10.83
सि	12. 1.78
सं	1. 8.79
मं	11.10.79
पिं	2. 3.80
ध	2.10.80
भ्र	12. 7.81
भद्रि	2. 7.82
उल	16.10.83

।। चरदशा ।।

चर महादशा

कन्या 06 वर्ष	11. 4.79	11. 4.85
तुला 04 वर्ष	11. 4.85	11. 4.89
वृश्चिक 04 वर्ष	11. 4.89	11. 4.93

धनु 07 वर्ष	11. 4.93	11. 4.00
मकर 05 वर्ष	11. 4.00	11. 4.05
कुंभ 06 वर्ष	11. 4.05	11. 4.11

मीन 08 वर्ष	11. 4.11	11. 4.19
मेष 11 वर्ष	11. 4.19	11. 4.30
वृष 09 वर्ष	11. 4.30	11. 4.39

मिथुन 09 वर्ष	11. 4.39	11. 4.48
कर्क 10 वर्ष	11. 4.48	11. 4.58
सिंह 05 वर्ष	11. 4.58	11. 4.63

चर अन्तरदशा

कन्या 6 वर्ष		
तुला	11.4.79	11.10.79
वृश्चिक	11.10.79	11. 4.80
धनु	11.4.80	11.10.80
मकर	11.10.80	11. 4.81
कुंभ	11.4.81	11.10.81
मीन	11.10.81	11. 4.82
मेष	11.4.82	11.10.82
वृष	11.10.82	11. 4.83
मिथुन	11.4.83	11.10.83
कर्क	11.10.83	11. 4.84
सिंह	11.4.84	11.10.84
कन्या	11.10.84	11. 4.85

तुला 4 वर्ष		
वृश्चिक	11.4.85	11. 8.85
धनु	11.8.85	11.12.85
मकर	11.12.85	11. 4.86
कुंभ	11.4.86	11. 8.86
मीन	11.8.86	11.12.86
मेष	11.12.86	11. 4.87
वृष	11.4.87	11. 8.87
मिथुन	11.8.87	11.12.87
कर्क	11.12.87	11. 4.88
सिंह	11.4.88	11. 8.88
कन्या	11.8.88	11.12.88
तुला	11.12.88	11. 4.89

वृश्चिक 4 वर्ष		
तुला	11.4.89	11. 8.89
कन्या	11.8.89	11.12.89
सिंह	11.12.89	11. 4.90
कर्क	11.4.90	11. 8.90
मिथुन	11.8.90	11.12.90
वृष	11.12.90	11. 4.91
मेष	11.4.91	11. 8.91
मीन	11.8.91	11.12.91
कुंभ	11.12.91	11. 4.92
मकर	11.4.92	11. 8.92
धनु	11.8.92	11.12.92
वृश्चिक	11.12.92	11. 4.93

।। चरदशा ।।

धनु 7 वर्ष		
वृश्चिक	11.4.93	11.11.93
तुला	11.11.93	11. 6.94
कन्या	11.6.94	11. 1.95
सिंह	11.1.95	11. 8.95
कर्क	11.8.95	11. 3.96
मिथुन	11.3.96	11.10.96
वृष	11.10.96	11. 5.97
मेष	11.5.97	11.12.97
मीन	11.12.97	11. 7.98
कुंभ	11.7.98	11. 2.99
मकर	11.2.99	11. 9.99
धनु	11.9.99	11. 4.00

मकर 5 वर्ष		
धनु	11.4.00	11. 9.00
वृश्चिक	11.9.00	11. 2.01
तुला	11.2.01	11. 7.01
कन्या	11.7.01	11.12.01
सिंह	11.12.01	11. 5.02
कर्क	11.5.02	11.10.02
मिथुन	11.10.02	11. 3.03
वृष	11.3.03	11. 8.03
मेष	11.8.03	11. 1.04
मीन	11.1.04	11. 6.04
कुंभ	11.6.04	11.11.04
मकर	11.11.04	11. 4.05

कुंभ 6 वर्ष		
मीन	11.4.05	11.10.05
मेष	11.10.05	11. 4.06
वृष	11.4.06	11.10.06
मिथुन	11.10.06	11. 4.07
कर्क	11.4.07	11.10.07
सिंह	11.10.07	11. 4.08
कन्या	11.4.08	11.10.08
तुला	11.10.08	11. 4.09
वृश्चिक	11.4.09	11.10.09
धनु	11.10.09	11. 4.10
मकर	11.4.10	11.10.10
कुंभ	11.10.10	11. 4.11

मीन 8 वर्ष		
मेष	11.4.11	11.12.11
वृष	11.12.11	11. 8.12
मिथुन	11.8.12	11. 4.13
कर्क	11.4.13	11.12.13
सिंह	11.12.13	11. 8.14
कन्या	11.8.14	11. 4.15
तुला	11.4.15	11.12.15
वृश्चिक	11.12.15	11. 8.16
धनु	11.8.16	11. 4.17
मकर	11.4.17	11.12.17
कुंभ	11.12.17	11. 8.18
मीन	11.8.18	11. 4.19

मेष 11 वर्ष		
वृष	11.4.19	11. 3.20
मिथुन	11.3.20	11. 2.21
कर्क	11.2.21	11. 1.22
सिंह	11.1.22	11.12.22
कन्या	11.12.22	11.11.23
तुला	11.11.23	11.10.24
वृश्चिक	11.10.24	11. 9.25
धनु	11.9.25	11. 8.26
मकर	11.8.26	11. 7.27
कुंभ	11.7.27	11. 6.28
मीन	11.6.28	11. 5.29
मेष	11.5.29	11. 4.30

वृष 9 वर्ष		
मेष	11.4.30	11. 1.31
मीन	11.1.31	11.10.31
कुंभ	11.10.31	11. 7.32
मकर	11.7.32	11. 4.33
धनु	11.4.33	11. 1.34
वृश्चिक	11.1.34	11.10.34
तुला	11.10.34	11. 7.35
कन्या	11.7.35	11. 4.36
सिंह	11.4.36	11. 1.37
कर्क	11.1.37	11.10.37
मिथुन	11.10.37	11. 7.38
वृष	11.7.38	11. 4.39

मिथुन 9 वर्ष		
वृष	11.4.39	11. 1.40
मेष	11.1.40	11.10.40
मीन	11.10.40	11. 7.41
कुंभ	11.7.41	11. 4.42
मकर	11.4.42	11. 1.43
धनु	11.1.43	11.10.43
वृश्चिक	11.10.43	11. 7.44
तुला	11.7.44	11. 4.45
कन्या	11.4.45	11. 1.46
सिंह	11.1.46	11.10.46
कर्क	11.10.46	11. 7.47
मिथुन	11.7.47	11. 4.48

कर्क 10 वर्ष		
मिथुन	11.4.48	11. 2.49
वृष	11.2.49	11.12.49
मेष	11.12.49	11.10.50
मीन	11.10.50	11. 8.51
कुंभ	11.8.51	11. 6.52
मकर	11.6.52	11. 4.53
धनु	11.4.53	11. 2.54
वृश्चिक	11.2.54	11.12.54
तुला	11.12.54	11.10.55
कन्या	11.10.55	11. 8.56
सिंह	11.8.56	11. 6.57
कर्क	11.6.57	11. 4.58

सिंह 5 वर्ष		
कन्या	11.4.58	11. 9.58
तुला	11.9.58	11. 2.59
वृश्चिक	11.2.59	11. 7.59
धनु	11.7.59	11.12.59
मकर	11.12.59	11. 5.60
कुंभ	11.5.60	11.10.60
मीन	11.10.60	11. 3.61
मेष	11.3.61	11. 8.61
वृष	11.8.61	11. 1.62
मिथुन	11.1.62	11. 6.62
कर्क	11.6.62	11.11.62
सिंह	11.11.62	11. 4.63

।। अष्टकवर्ग तालिका ।।

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	3	5	4	4	3	2	7	5	4	4	4
चन्द्र	3	5	6	5	3	3	5	4	5	5	3	2
मंगल	3	4	4	5	3	3	1	3	4	4	3	2
बुध	5	4	6	4	3	4	4	4	6	3	7	4
गुरू	4	4	5	6	2	4	7	3	6	7	2	6
शुक्र	5	7	2	4	3	3	5	7	4	5	4	3
शनि	1	2	4	4	2	2	3	4	7	5	4	1
योग	24	29	32	32	20	22	27	32	37	33	27	22

अष्टकवर्ग चार्टः

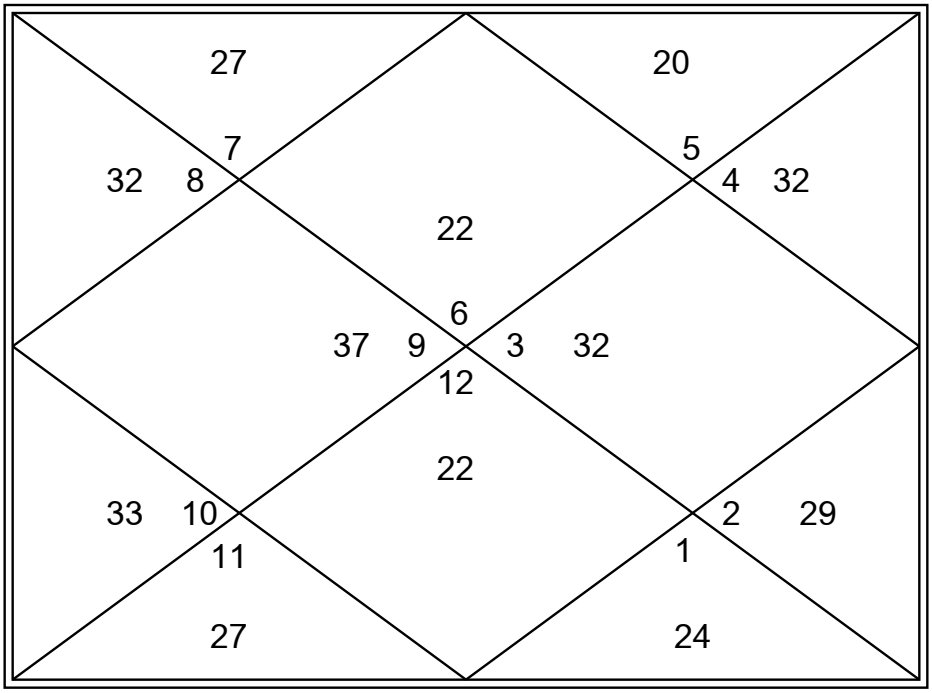

।। प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ।।

सूर्य

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
चन्द्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरू	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
राहू	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	3	5	4	4	3	2	7	5	4	4	4	

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
चन्द्र	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरू	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
राहू	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	3	5	6	5	3	3	5	4	5	5	3	2	

मंगल

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरू	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
राहू	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	3	4	4	5	3	3	1	3	4	4	3	2	

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
चन्द्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरू	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
राहू	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	5	4	6	4	3	4	4	4	6	3	7	4	

गुरू

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
चन्द्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
गुरू	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
राहू	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
योग	4	4	5	6	2	4	7	3	6	7	2	6	

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
चन्द्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
गुरू	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	9
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
राहू	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
योग	5	7	2	4	3	3	5	7	4	5	4	3	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
गुरू	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
राहू	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
योग	1	2	4	4	2	2	3	4	7	5	4	1	

Disclaimer

We wants to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report are provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).

AstroSage

World's No. 1 Astrology Portal & App

पता:

ए-139, सेक्टर 63, नोएडा (उत्तर प्रदेश) 201303. भारत

संपर्क करें:

फोन: +91 95606 70006, 120 4138503

ईमेल: query@astrocamp.com

वेब: www.AstroSage.com